विषकन्या

अंतर्भारतीय पुस्तकमाला

विषकन्या

एस. के. पोट्टकाट

अनुवाद

एस. रामचंद्रन नायर

एकः सूते सकलम्

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

आवरण : अनुपम सूद की पेंटिंग पर आधारित।

ISBN 81-237-3132-9

पहला संस्करण : 1990
पहली आवृत्ति : 2000 *(शक 1922)*

Original Title : Vishkanyaka *(Malayalam)*
Translation : Vishkanya *(Hindi)*

रु. 40.00

निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया,
ए-5, ग्रीन पार्क, नई दिल्ली-110016 द्वारा प्रकाशित।

पहले संस्करण की प्रस्तावना

लगभग चार वर्ष पहले मुझे मलबार की पहाड़ियों के बीच कुछ दिन ठहरने का अवसर मिला। आवास के दौरान मुझे उन लोगों के बारे में जानने तथा उनसे व्यक्तिगत परिचय बढ़ाने का मौका भी मिला जो तिरुवितांकूर[1] से यहां के वयनाड क्षेत्र में आकर बस गए थे। मेरे दिल में उन लोगों की प्राचीन सभ्यता, कामकाज और संस्कृति के बारे में जानने की बड़ी जिज्ञासा उत्पन्न हुई। यह उपन्यास मेरी इसी जिज्ञासा पर आधारित है।

यह केरल की पहली सीढ़ी है जिसे जाने-अनजाने में तिरुवितांकूर वाले, ये लोग सामने लाए। उनके इस प्रयास के कारण ही मेरा उनसे घनिष्ठ प्रेम हो गया। किसी भी सरकार के सहयोग या उत्प्रेरणा के बिना भी, स्वावलंबन और अदम्य साहस को पूंजी के रूप में संजोकर इन लोगों ने अपना जीवन नए सिरे से प्रारंभ किया। इस प्रयास में उन्हें बहुत कठिन परिश्रम करना पड़ा। इसी कारण ये उद्यमशील और पुरुषार्थी लोग बधाई के पात्र हैं। इनके प्रति मेरे मन में आदर का भाव तो जगा ही है, साथ ही इनके दुख-दर्द के प्रति मेरे मन में सहानुभूति भी जगी है। सराहना और सहानुभूति की इस उद्दीप्त भावना ने ही मुझे इस उपन्यास को लिखने के लिए विवश किया है।

इस उपन्यास के कथापात्र या घटना चित्रण में किसी भी जीवित की ओर संकेत नहीं है। मैं यह विश्वास दिलाता हूं कि मेरे मन में उत्पन्न सराहना या सहानुभूति के भाव किसी समाज या व्यक्ति के प्रति उपहास के रूप में प्रयोग नहीं किए जाएंगे।

इस उपन्यास में मलबार के नए बासिंदों की समस्याओं, कठिनाइयों और कठिन परिश्रम को चित्रित करने का प्रयत्न किया गया है। जिस प्रकार किसी

1. भाषावार राज्य बनने से पहले केरल तीन भागों में बंटा हुआ था तिरुवितांकूर, कोचीन और मलबार। इनमें से तिरुवितांकूर और कोचीन स्वतंत्रता से पहले रजवाड़े थे और मलबार ब्रिटिश शासित प्रदेश था।

किले पर कब्जा करने के लिए फौज की अग्रिम पंक्ति को सबसे ज्यादा खतरे का सामना करना पड़ता है, उसी प्रकार इन नए बासिंदों के पूर्वजों को भी खतरे का सबसे ज्यादा सामना करना पड़ा था। जो लोग इस स्थान पर सबसे पहले आए थे, उनमें से नब्बे प्रतिशत लोगों की इन्हीं पहाड़ियों में घोर अभावों और कठिनाइयों के कारण अकाल मृत्यु भी हुई है। इसके बावजूद बाकी के जीवित लोगों ने अपना संपूर्ण जीवन भावी पीढ़ी के लिए न्योछावर कर दिया। जंगल काट दिए गए और मलेरिया का पूर्णरूप से उन्मूलन हो गया। मानव सभ्यता का विस्तार होने लगा और जंगलों के स्थान पर गांवों व शहरों का विकास हुआ। जिन हजारों अज्ञात लोगों ने इस नव निर्माण के संघर्ष में अपने प्राणों की आहुति दी है, मैं उन सबकी स्मृति में इस उपन्यास को सहर्ष समर्पित करता हूं।

एस.के.पोट्टकाट

'चंद्रकांती'
पुतियरा
15 सितंबर, 1948

सातवें संस्करण का परिचय

'विषकन्या' के पहले संस्करण को प्रकाशित हुए उन्नीस वर्ष बीत चुके हैं। उसके बाद से अब तक इस उपन्यास के आधार स्थान वयनाड[1] प्रदेश में अनेक परिवर्तन हो गए हैं। जो मलबार प्रदेश पहले मद्रास प्रेसिडेंसी में था, स्वतंत्रता के बाद उसका विलय केरल में हो गया है। वयनाड प्रदेश की उपज की मांग और दाम की प्रसिद्धि सारे संसार के बाजारों में हो गई है। यहां पर अब आवागमन के साधन भी बढ़ गए हैं, छोटे-छोटे गांव बड़े शहरों में बदल गए हैं। नई कालोनियों का उदय होता जा रहा है। पहाड़ियों के ऊपर नए स्कूलों और कालेजों की इमारतों का निर्माण होने लगा है।

मैं सन् 1962 में वयनाड प्रदेश से संसद-सदस्य के रूप में चुना गया हूं। इसलिए मुझे समय-समय पर इस प्रदेश में घूमने और जनता से संपर्क करने का अवसर भी मिला है। इन नए अनुभवों और जानकारियों के कारण ही 'विषकन्या' का एक दूसरा भाग (वीरकन्या) लिखने का भी मुझे शुभ अवसर मिला है। इसीलिए मैं आपके समक्ष इस पुस्तक का सातवां संस्करण प्रस्तुत कर रहा हूं।

मुझे हार्दिक प्रसन्नता यह हुई है कि उन्नीस वर्ष के बाद भी 'विषकन्या' की मांग निरंतर बढ़ी ही है।

एस.के.पोट्टकाट

'चन्द्रकांती'
पुतियरा
15 नवंबर, 1967

---

1. वयनाड अथवा मलबार।

भूमिका

मलयालम साहित्य के राजशिल्पी, 'इंदुलेखा', 'शारदा' आदि प्रारंभिक सामाजिक उपन्यासों के रचियता श्री ओ. चंतुमेनोन और 'मार्तंड वर्मा', धर्मराजा', 'रामराज' 'बहादुर' आदि ऐतिहासिक उपन्यासों के रचयिता श्री सी. वी. रामन पिल्लै हैं। 'इंदुलेखा' पहली बार सन् 1889 में प्रकाशित हुआ। उसके बाद चंतुमेनोन और सी. वी. के बहुत-से अनुयायी और अनुकर्ता लेखक कई दशकों तक उपन्यास लिखते रहे। लेकिन बाद की पीढ़ी के कुछ उपन्यासकारों ने यह साबित कर दिया कि उपन्यास का एक दूसरा पक्ष भी है। दूसरी पीढ़ी के उपन्यासकारों में सबसे मुख्य थे पी. केशवदेव, तकषी शिवशंकर पिल्लै, वैकम मुहम्मद बशीर, एस.के. पोट्टकाट और अब पी.सी.कुट्टिकृष्णन। इन उपन्यासकारों ने अपनी रचनाओं में एक विशेष प्रकार के निजी व्यक्तित्व, जीवनदर्शन और शैली का परिचय दिया। इन उपन्यासकारों में कुछ समानधर्मी भी हम देख सकते हैं। पहली बात यह है कि ये उपन्यासकार प्रारंभिक काल में कहानी लेखक थे। इन सभी लेखकों ने मिलकर मलयालम में ऐसी कहानियों का संकलन और संग्रह किया जिसमें केरल के प्राकृतिक जीवन के दृश्य या अदृश्य अथवा सूक्ष्म या स्थूल भावों की झलक दर्शकों को मिलती रही है। इस प्रकार ये उपन्यासकार सर्वप्रथम 'कहानीकार' के रूप में सामने आए और बाद में इन्होंने उपन्यास के क्षेत्र में प्रवेश किया। प्रथम महायुद्ध और अक्तूबर क्रांति के कारण इस सदी का दूसरा दशक, पुराने विश्वासों के अंत और नई आशाओं की प्रतीक्षा का साक्षी बन गया। स्वतंत्रता की जिस चिनगारी को तिलक और गांधीजी ने प्रज्ज्वलित किया था, उससे और मार्क्स के सामाजिकवाद के प्रभाव से केरल के प्रतिभाशाली साहित्यकार भी प्रभावित हो गए थे। इन प्रतिभाशाली उपन्यासकारों की रचनाओं में एक नया और अमूल्य जीवन-दर्शन प्रदर्शित हुआ है। इन सभी उपन्यासकारों की लेखनी का स्वप्न, स्वतंत्रता का दृढ़ संकल्प, मनुष्य के दुखों के प्रति असहिष्णुता आदि की ओर हुआ है। लेकिन इन उपन्यासकारों के संबंध में विशेष रूप से ध्यान रखने की बात यह है कि इनमें भी भिन्नता रही है। इन उपन्यासकारों

में एस. के. पोट्टकाट की विशेषता यह है कि वे केवल एक कहानीकार और उपन्यासकार ही नहीं हैं, एक कवि और सफल यात्रा विवरण लेखक भी हैं। उन्होंने न केवल गद्य और पद्य में समान रूप से अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया है, बल्कि उन्होंने आस्ट्रेलिया को छोड़कर शेष सारे संसार के देशों की यात्रा करके वास्तविक सचाई की खोज करने के बाद उत्कृष्ट यात्रा विवरण भी लिखे हैं। मनुष्य जीवन के विविध रूपों और भावों के साथ-साथ, देश में वर्ण-भेद से परे वास्तविक मनुष्य को भी अपनी इन खोजों में उन्होंने पाया और इस वास्तविक मनुष्य को अपने यात्रा वृतांत में चित्रित भी किया। इस तरह यात्रा वृतांत लिखकर श्री एस.के. पोट्टकाट ने दूसरे उपन्यासकारों से अलग व्यक्तित्व की विशेषता का प्रदर्शन करके एक अतुल्य और अनुपम स्थान ग्रहण किया है। श्री पोट्टकाट ने संसार का लगातार भ्रमण करके संसार के विभिन्न देशों के लोगों की सभ्यता तथा आचार-व्यवहार में घुल-मिलकर रहने के बावजूद अपनी संस्कृति और सभ्यता को नहीं भुलाया। यह तथ्य श्री एस. के. पोट्टकाट के वृहत् उपन्यास 'ओरू देशातिन्टे कथा' पढ़ने से स्पष्ट होता है।

'नाडन', 'प्रेमम', 'प्रेमशिक्षा', 'करांपू' आदि श्री पोट्टकाट के छोटे उपन्यास हैं जो सुंदर तथा आकर्षक हैं, मानो कोई काल्पनिक भावगीत हों। 'मूडूपडम' उपन्यास की पृष्ठभूमि कुछ विस्तृत है। इस उपन्यास में उपन्यासकार ने केरल के कुछ दुखी और असहाय परिवारों की दुखभरी कहानियों का वर्णन किया है जो केरल में अपनी जमीनें छोड़कर बंबई पहुंच गए थे। वहां पर क्षेत्रीय लड़ाई के बीच में उन्हें विभिन्न प्रकार की परेशानियों से जूझना पड़ा था। उक्त उपन्यास का जिक्र 'ओरू देशातिन्टे कथा' में कथांश के रूप में भी है और साथ ही इसमें उपन्यासकार के आध्यात्मिक दर्शन की झलक भी मिलती है। अपने दूसरे एक वृहत उपन्यास 'आरू तेरुविन्टे कथा' में श्री पोट्टकाट ने उन लोगों के असली और नकली चेहरों का वर्णन किया है जहां वे काफी समय तक रहे हैं। साधारण तौर पर इनके उपन्यासों में एक ओर ग्रमीण जीवन का भोलापन, लालित्य तथा शालीनता है तो दूसरी ओर शहरों की मशीनी जिंदगी के खोखलेपन के कारण कृत्रिम जीवन का झूठा प्रदर्शन। उन्होंने यद्यपि अपने उपन्यास में महानगरों में मनुष्यों के जीवन संघर्ष के कशमकश की पृष्ठभूमि का सजीव चित्रण किया है। लेकिन 'विषकन्या' की भाषा-शैली तथा सरल भाषा में चित्रण उनके अन्य उपन्यासों की तुलना में बहुत ही महत्व के हैं।

स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व, केरल राष्ट्रीय स्तर पर तीन भागों में विभक्त था—तिरुवितांकूर, कोच्ची के दो रजवाड़े और मद्रास प्रेसिडेंसी का एक भाग—मलबार पिला। भारत के स्वतंत्र होने के कुछ वर्ष पूर्व तिरुवितांकूर प्रदेश के कुछ गरीब ईसाई किसान अपने छोटे-छोटे खेतों और बाग-बगीचों को बेचकर

सुदूर उत्तर के मलबार प्रदेश की वयनाड पहाड़ियों पर जाकर बसने लगे। वहां की ताजा और उपजाऊ पहाड़ी मिट्टी उनकी यज्ञवेदी बन गई। सोने के रूप में अनाज उगलने वाले खेत की प्रतीक्षा में ही वे जोखिम उठाने के लिए प्रेरित हुए। ऋतु परिवर्तन के समय जैसे पक्षी झुंडों में एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश पहुंचते हैं, उसी प्रकार तिरुवितांकूर के गरीब बासिंदे भी झुंडों में अपने प्रदेश को छोड़कर मलबार की पहाड़ियों में खेती करने तथा बगीचे लगाने के लिए पहुंच गए। यद्यपि मलेरिया बुखार तथा जंगली जानवरों ने उनकी आकांक्षाओं पर पानी फेर दिया, उन्होंने दुश्मन की फौज के समान उनके इरादों को आगे बढ़ने से रोका, फिर भी उन गरीब लोगों ने साहस और हिम्मत के साथ उन विरोधी शक्तियों का सामना किया। इन लोगों ने जंगल काट डाले और पहाड़ियों को काट-काटकर खेती करने लायक जमीन को समतल कर दिया। उन खेतों में उन्होंने मरच्चीनी से लेकर छोटी इलायची और लौंग आदि खुशबूदार चीजों तक की खेती करनी आरंभ कर दी। लेकिन कुछ लोग उस यज्ञवेदी में बलि भी हो गए।

उन्होंने उसी भूमि पर प्रकृति की क्रूरता और उदारता दोनों को ही देखा। श्री पोट्टकाट ने इस उपन्यास में मानव और प्रकृति—इन दोनों के संघर्ष के संगम की मादकता का काव्यात्मक और नाटकीय शैली में आविष्कार किया है। वह वन प्रकृति एक ओर अपनी प्राकृतिक सुंदरता दिखाकर लोगों को अपनी ओर आकर्षित करती थी, तो दूसरी ओर पापमयी आलिंगन से उनको समाप्त भी करती थी। वह भी एक विषकन्या के समान थी जो मादक सुंदरता दिखाकर लोगों को अपनी ओर आकर्षित तो करती थी, लेकिन उन्हें नष्ट करने में भी उसने कोई कसर नहीं छोड़ी। मलबार का प्राकृतिक वातावरण और ताजा मिट्टी—दोनों समान स्वभाव के थे। इस प्रसंग में उस प्रकृति और ताजा मिट्टी से होड़ करने वाली माधवी नाम की नायिका है। उपन्यासकार ने उस स्थान की मिट्टी में मिलने वाले स्वभाव तथा गुणों को 'माधवी' में आरोपित किया है। इस विषकन्या से विषैला संपर्क पाकर स्वर्ग सिधारने वाले तथा उसके चंगुल से बचने की कोशिश करने वाले लोगों की कतारें हमारे सामने से गुजर गईं। इस प्रकार यह एक भू-विभाग के इतिहास की कहानी है। पोट्टकाट के इस उपन्यास में एक बैले (नृत्य नाट्य) की सुंदरता है। जैसे एक महासमुद्र की गर्जन ध्वनि हम बहुत दूर से सुन सकते हैं, उसी प्रकार हम मलबार के महाजीवन प्रयाण का मंद संगीत भी दूर-दूर से सुन सकते हैं।

श्री पोट्टकाट का गद्य, असल में गद्य नहीं है, वह असली पद्य है। 'अनुवाद में जो तत्व मिट जाता है, वही कविता है'—ऐसी एक कहावत है। इस मूल उपन्यास में पोट्टकाट ने अपनी भाषा में जिस संगीत का अविष्कार किया है, वह शायद

अनुवाद में मिट गया हो, लेकिन इसमें 'वास्तविक मनुष्य' का चित्रण है।

हमें पूर्ण विश्वास है कि किसी भी भाषा के माध्यम से इस उपन्यास के कलेवर के चित्रण की चमक मंद नहीं होगी।

ओ.एन.बी.कुरुप्प

यूनिवर्सिटी कालेज
तिरुअनंतपुरम
1 दिसंबर, 1980

एक

मध्य तिरुवितांकूर[1] की एक ओर पहाड़ी है। उस पहाड़ी की तराई में एक बहुत विशाल मैदान है। मैदान और पहाड़ी के बीच एक ऊबड़-खाबड़ और टेढ़ी-मेढ़ी सड़क है। उस सड़क पर एक बैलगाड़ी की विचित्र आवाज आ रही है जो चरमर-चरमर करती हुई चली जा रही थी। कुछ ही देर बाद यह बैलगाड़ी मैदान के बीचों-बीच गुजरती हुई दिखाई देने लगी। उस गाड़ी में घर-गृहस्थी का सामान लदा हुआ था—जैसे संदूक, बिस्तर, तांबे के बर्तन, कड़ाही, लालटेन, मुर्गियों का दरबा, घिरनी, रस्सी, छत्री इत्यादि। ये सभी सामान इसमें काफी ऊपर तक लदे हुए थे।

बैलगाड़ी के पीछे-पीछे बच्चे, बूढ़े, स्त्री-पुरुष, युवक-युवतियों के अतिरिक्त बच्चों को गोद में लिए हुए स्त्रियां भी ऐसे चली आ रही थीं जैसे ये सभी मेले में जा रहे हों। उनमें से प्रत्येक के पास एक-एक गट्ठा भी था। इस भीड़ में एक नाटा-सा युवक भी चला आ रहा था जिसने कोट के ऊपर जरीदार अंगोछा डाला हुआ था और हरे रंग का चश्मा भी पहन रखा था। वह गाड़ी के अंदर झांकता हुआ उसके साथ-साथ चला जा रहा था।

"पाच्चुपिल्लै ! गाड़ी कुछ टेढ़ी है, ध्यान रखना कहीं सारा सामान नीचे न गिर जाए।"

"वर्की साहेब ! चिंता न कीजिए, यहां गाड़ी में आगे मैं बैठा हूं। एक बार मैं गाड़ी में घड़े भरकर दस मील दूर ले गया था लेकिन उसमें से एक भी घड़ा नहीं फूटा। इसमें तो केवल लकड़ी का टूटा-फूटा घरेलू सामान ही है...।"

---

1. तिरुवितांकूर—यह केरल राज्य का एक भाग है। केरल अंग्रेजों के शासनकाल में तीन भागों में विभाजित किया गया था। तिरुवितांकूर या ट्रावनकोर, कोच्ची या कोच्चिन, और मलबार। ट्रावनकोर केरल के सबसे दक्षिण में और मलबार सबसे उत्तर में स्थित है। लेकिन कोच्चिन इन दोनों के बीच में था। ट्रावनकोर और कोच्ची में देशी राजा राज्य करते थे, लेकिन मलबार में ब्रिटिश साम्राज्य का राज्य था।

पाच्चुपिल्लै ने हंसते हुए उत्तर दिया।

पाच्चुपिल्लै गाड़ीवान है और वह गाड़ी में आगे बैठकर पान खाने के लिए पान के पत्ते पर चूना लगा रहा है।

उस गाड़ी के पीछे-पीछे वह युवक भी चेरियान की चाय की दुकान के पास पहुंचा। चेरियान उस समय अपनी दुकान से सड़क की ओर नीचे देख रहा था।

"मुण्डक्कयं[1] वर्की चेट्टन[2] अपने साथियों के साथ चले आ रहे हैं। तुम्हारी मामी भी उसके साथ आ रही है।" चेरियान ने अपनी पत्नी से कहा।

उस समय चेरियान की पत्नी मरियम कमरे में छुरी से कप्पा[3] की छाल निकाल रही थी।

चेरियान की यह बात सुनकर उसकी पत्नी ने खुशी से काम छोड़ दिया और अपने छोटे बच्चे को गोद में लेकर कमरे से बाहर आंगन में चली आई।

"रस्सी है-रस्सी[4] ?" वर्की ने चेरियान की ओर नजर फेरते हुए पूछा।

"नहीं होगी" चेरियान ने उदास भाव में उत्तर दिया।

"ग्यारह आदमी, आठ औरतें, छः बच्चे – कुल मिलाकर पच्चीस लोग", चेरियान के बेटे जोण ने उस भीड़ का अंदाज लगाया।

उसी भीड़ में से मरियम की मामी आगे बढ़कर ऊपर घर में चली आई।

"मरियम ! हम मलबार चले जाएं।" उनके शब्दों में कुछ दर्द झलक रहा था।

"मामी ! मलबार पहुंचकर आप हमें भूल ही जाएंगी ?"

"नहीं बेटी ! ऐसा कैसे हो सकता है ? ईसा की कृपा से यदि हम मलबार कुशलपूर्वक पहुंच गए तो हम तुम्हें भी बच्चों सहित बुलाएंगे, सुना ?"

"मामी, बच्चों के चाचा मलबार गए हुए थे, जहां पर उनका मलेरिया बुखार से स्वर्गवास हो गया था। इसलिए बच्चों के पिताजी को मलबार के नाम से ही चिढ़ है। इसी कारण हमारी मिट्टी घर की ही है।"

"बेटी ! सब ईसा की इच्छा पर निर्भर है। वे लोग आगे चले गए हैं।

---

1. मुण्डक्कयं–एक गांव का नाम।
2. चेट्टन–बड़ा भाई। ट्रावनकोर के ईसाई लोग अपने से बड़ी आयु के सब लोगों को चेट्टन कहा करते हैं।
3. कप्पा–एक तरह का पौधा। यह केरल में खूब पैदा होता है। इसकी जड़ एक पौष्टिक खाद्य है। इसमें स्टार्च का अंश बहुत ज्यादा है। इसके दूसरे नाम (1) मरच्चीनी, (2) पूलाकिषड हैं।
4. रस्सी–इसके दो अर्थ हैं। (1) नारियल की रस्सी, (2) घरेलू शराब जो मजबूत रस्सी के समान आदमी के दिमाग को बांध लेती है।

मुझे पैदल चलने में तकलीफ होती है।"

"मामी ! थोड़ा रुकिए।" यह कहकर मरियम दौड़कर दुकान के अंदर चली गई। वह अंदर से एक पोटली लाई जिसमें कुछ मिठाई रास्ते में खाने के लिए रखी हुई थी।

माता ने मुस्कुराते हुए वह पोटली पकड़ ली, साथ ही चेरियान से जाने की विदाई भी ली। मरियम ने उनके बेटे 'शिमोण' के हाथ में एक 'चक्रम'[1] का सिक्का रखते हुए उसको आशीर्वाद दिया और उस भीड़ में शामिल होने के लिए वह जल्दी-जल्दी चलने लगी।

खेतों के किनारे-किनारे दोपहर की धूप में छाया के समान चलने वाली गाड़ी और लोगों की भीड़ को मरियम तब तक एकटक देखते रही, जब तक उसकी आंखों से वे ओझल न हो गए।

मरियम सोच रही थी कि इन लोगों ने हमेशा ही के लिए अपने घर-बार को छोड़ दिया है और एक अज्ञात स्थान को चले गए हैं। भविष्य में क्या हम फिर कभी इन लोगों से मिल भी सकेंगे अथवा वे लोग मलबार के वातावरण में रम जाएंगे ?

मरियम जब उन लोगों के अलविदा के बारे में सोच में डूबी हुई थी तो उसकी आंखों के सामने अंधकार-सा छा गया था और मन ही मन रो रही थी।

दो

एक भीड़ के बाद दूसरी भीड़। ये मलबार जाने वाले जत्थे थे। मत्तायी दूसरे जत्थे का सदस्य था जिसका नेता पोटाक्यम वर्गीज था। उसने अपने चार बच्चों और पांच संदूकों के अतिरिक्त अपनी सारी जमीन-जायदाद आठ सौ सत्तर (ब्रिटिश) रुपयों में बेच दी थी। वह अपने चार साथियों के साथ मलबार जाने के लिए तैयार खड़ा था। उसके एक हाथ में टूटी छतरी और दूसरे में टूटे शीशे की एक पुरानी लालटेन भी थी। उसने अपने घर की ओर अंतिम नजर फेरी, अपने सींचे पेड़-पौधों को पुचकारा और अपने घनिष्ठ पड़ोसियों से अलविदा लेते हुए, सिर नीचे झुकाए हुए मलबार के लिए विदा हुआ। उसके बच्चे भी कुत्ते के पिल्लों के समान उसके पीछे-पीछे चल रहे थे।

रास्ते के खर्च के लिए उसने कुछ रुपए अपने बटुए में रखे हुए थे और

---

1. चक्रम—ट्रावनकोर राज्य का सिक्का। अठाईस चक्रम एक रुपये के बराबर होते थे।

छह सौ रुपए एक छोटी डायरी में रखकर, बाहर से धागा लपेटकर, कोट के भीतर की जेब में रखकर, नए अरमानों को संजोए हुए, वह अपने घर से चल पड़ा। ये रुपए उसने मलबार की सोना उगलने वाली चार सौ एकड़ जमीन खरीदने के लिए बचा कर रखे थे। उसको दुख है कि काश ! मेरी पत्नी अन्नम्मा भी मेरे साथ होती तो वह इस समय कितनी खुश होती। अन्नम्मा आठ महीने पहले चेचक की बीमारी से स्वर्ग सिधार गई थी। उसकी इच्छा थी कि वह भी मलबार जाए पर ईश्वर को यह सब मंजूर नहीं था। उन्होंने समय से पहले उसे अपने पास बुला लिया। सोचते-सोचते वे मात्तन के घर जा पहुंचे।

मात्तन, उसकी पत्नी और दो बच्चे दरवाजे पर मलबार जाने के लिए तैयार खड़े थे और उनका इंतजार कर रहे थे।

मात्तन के पास केवल तीन सौ रुपए थे। उसको यह भी मालूम है कि मरियम के पास भी कुछ रुपए हैं, लेकिन उसको अपनी पत्नी से यह पूछने की हिम्मत नहीं हुई कि उसके पास भी कुछ रुपए हैं। उसने अपने सिर पर दो बक्से रखे हुए हैं और हाथ में एक मरच्चीनी[1] का डंठल पकड़ा हुआ है। मरियम के सिर पर एक के ऊपर एक तीन बक्से रखे हुए हैं और उनके ऊपर एक देशी खुरचनी भी है।

मात्तन की नौ साल की एक लड़की है जिसका नाम मेरिक्कुट्टी है। वह लड़की एक हाथ में अपने डेढ़ वर्ष के भाई को पकड़ी हुई है तथा दूसरे हाथ में एक पोटली।

"मात्तन भाई ! क्या ये सब लोग तैयार हैं ?" मत्तायी ने पूछा। मात्तन ने मरियम की ओर देखा। मरियम ने कहा, "सब तैयार तो हैं लेकिन चक्की और मुर्गियों का दरबा कैसे ले जाएं ? मत्तायी भाई, मलबार में क्या चक्की मिल जाएगी ?"

"क्यों नहीं, वहीं पर चक्की का बहुत ही अच्छा पत्थर मिलता है।"

मात्तन, मरियम और मेरिक्कुट्टी भी मत्तायी और उसके बच्चों के पास पहुंच गए। वे सब एक साथ वर्गीज के घर की ओर चल पड़े।

वर्गीज अपने अन्य नौ साथियों के साथ मात्तन और मत्तायी का अपने घर में इंतजार कर रहे थे।

वर्गीज ने अपने कोट की जेब से घड़ी निकालकर समय देखा। "साढ़े ग्यारह बजे गए हैं। डेढ़ बजे के करीब बस मेन रोड पर आ जाएगी। इसलिए हमें अब जल्दी चलाना चाहिए।"

---

1. मरच्चीनी—यह केरल में पैदा होने वाला एक पौधा है जिसकी जड़ एक पौष्टिक खाद्य-पदार्थ है। इसके दूसरे नाम हैं: (1) कप्पा, (2) पूलाकिषड़

इस प्रकार मलबार जाने वाले उन्नीस व्यक्तियों का वह जत्था जल्दी-जल्दी सड़क की ओर बढ़ने लगा। वे लोग पहाड़ियों की तलहटी में बनी उस टेढ़ी-मेढ़ी और ऊबड़-खाबड़ सड़क से गुजर रहे थे जिसके इधर-उधर कहीं झाड़ियां थीं तो कहीं पेड़ और पत्थर। सड़क सुनसान थी। उनके अलावा उस सड़क पर और कोई नहीं था। इसलिए उन लोगों की बातें हवा में गूंज रही थी। चलते-चलते अकस्मात सबने अपनी-अपनी बातें पूरी कर लीं तो सभी एकदम चुप हो गए। सारा वातावरण बिल्कुल शांत हो गया। हर एक आदमी के पास कुछ न कुछ सामान तो था ही, इसलिए अपने-अपने बोझ उठाए वे शांतिपूर्वक अपना रास्ता पार करते जा रहे थे। चूंकि सभी व्यक्ति नई जगह जा रहे थे, इसलिए उस स्थान का नक्शा हरएक के दिमाग में अलग-अलग किस्म से बना हुआ था। किसी को मन में प्रसन्नता थी तो कुछ सोच रहे थे कि नया स्थान पता नहीं कैसा है। सभी अपने-अपने ढंग से अटकलें लगा रहे थे। चूंकि इन सभी लोगों ने अपनी पूरी पैतृक जायदाद बेच दी थी, इसलिए सभी की जेबों में अच्छा-खासा पैसा था। मलबार की भूमि इनके स्वागत के लिए इंतजार कर रही थी।

मलबार में न तो किसी प्रकार का धार्मिक बंधन है और न जातीय संघर्ष। यहां पर मनुष्य स्वतंत्र जीवन जीता है और हर प्रकार से खुश रहता है। यहां न तो राजनीतिक षड्यंत्र है और न उनके चाटुकार। यहां पर शंखमुद्रा[1] के सामने सिर झुकाने का तो प्रश्न ही नहीं उठता। सभी लोग यह सोचते थे कि मलबार में रहकर वे स्वतंत्र रूप से जी सकेंगे, धन अर्जन कर सकेंगे और अपने अधिकारों का अधिक से अधिक उपभोग कर सकेंगे।

इस प्रकार वे सभी लोग दिवास्वप्न देखते हुए नदी-नालों, खेतों-खलिहानों और पहाड़ियों आदि को पार करते हुए चले जा रहे थे रास्ते में मिलने वाले लोग अलग-अलग वाणी और भावों से उनसे बात करते और आगे बढ़ते चले जाते थे।

वे लोग यह भी सोचते चले जा रहे थे कि क्या मलबार के गांव भी तिरुवितांकूर के गांव के समान पहाड़ियों और खेतों के बीच में ही होंगे ? वहां की भाषा हमें मुश्किल तो नहीं लगेगी ? वहां की भाषा मलयालम होगी या कुछ और ? वहां भी लोगों को चूहे और पुलिस वाले तंग करते हैं ? लेकिन एक बात जरूर है कि वहां पर स्वामी[2] का अत्याचार बिल्कुल नहीं होगा।

---

1. शंखमुद्रा—तिरुवितांकूर राजचिह्न
2. स्वामी—डा. सर. सी. पी. रामस्वामी अय्यर। वे उस समय तिरुवितांकूर राजा के प्रधानमंत्री थे। उनके बारे में कुछ ईसाई लोगों का मत था कि वे ईसाई लोगों के कट्टर विरोधी थे।

वर्गीज को चलते-चलते एक आवाज सुनाई पड़ी-

"वर्गीज भाई ! आप सबके सब मलबार चले जाने के बाद मैं यहां कैसे जीऊंगा ? क्या मैं भी मलबार आंऊ ?"

वर्गीज ने चारों ओर घूमकर देखा लेकिन कोई दिखाई नहीं दिया। थोड़ी ही देर में उसने देखा कि बैलगाड़ी रखने वाले कमरे के अंदर से एक नुकीला और लंबा मुंह बाहर निकला हुआ है। वर्गीज ने मुस्कुराते हुए बाहर आए वरीतकुंज को देखकर मजाक किया-

"कौन है ? वरीतकुंज ? तू मलबार आकर क्या करेगा ?"

"सुना है कि मलबार में बहुत से खेत बंजर हैं।"

"लेकिन दोस्त वहां तक पहुंचने के लिए जेब खर्च भी चाहिए। क्या तुम्हारे पास रुपए हैं ?"

"भाई ! मैं दो दिन से भूखा हूं। किसी आदमी ने परमुपिल्लै के बगीचे से नारियल की चोरी की है, लेकिन पुलिस ने मुझे पकड़ लिया और मुझे मारकर सजा भी दी है। उन्होंने मुझे ताकीद भी दी है कि यदि भविष्य में इस क्षेत्र में किसी के भी नारियलों की चोरी होगी तो तुम्हें ही पकड़ा जाएगा और उसके बदले लातों और मुक्का से सजा दी जाएगी। भाई, मेरा यहां जीना मुश्किल हो गया है। भाई, मुझे भी अपने साथ मलबार पहुंचने तक का खर्च दे दो। रास्ते का जो भी खर्च मुझ पर होगा उसे मैं मजदूरी करके कर्ज के रूप में अदा करता रहूंगा।"

वर्गीज ने एक सिगरेट जलाई। अन्य सभी लोग एक कटहल के पेड़ की छाया में जाकर खड़े हो गए। वरीतकुंज वर्गीज को विनय भाव से एकटक देखता रहा।

वर्गीज ने मुंह और नाक से सिगरेट का धुंआ बाहर निकालते हुए कहा-

"रास्ते का खर्च बीस ब्रिटिश रुपए के लगभग आएगा। पर मैं इतनी रकम किस जमानत पर तुम्हें उधार दूं ?"

"भाई ! सुनो, वरीतकुंज की इस छाती पर आप बड़े से बड़ा पत्थर भी तोड़ सकते हैं। मुझे केवल शाम-सुबह भोजन दे देना और मुझसे कोई भी काम करा लेना। भाई, मैं ऐसी परिस्थितियों में यहां पर न तो जी सकूंगा और न ही मर सकूंगा।"

वर्गीज के हृदय में वरीतकुंज एक ईमानदार आदमी है। बेरोजगारी से बेचारा बहुत तंग आ गया है। दूसरी ओर, उसके लिए बीस रुपए खर्च करने पड़ेंगे ?

अंततः उसने सोचा कि वह उससे अपने बाग-बगीचों और खेतों में काम करा सकता है।

"मलबार में पहुंचने के बाद तू किसी दूसरे की पूंछ पकड़कर चला जाएगा

तो... ।"

"यह वरीतकुंज वर्गीज भाई को छोड़कर कहीं और चला जाएगा ? आपको मेरे बारे में इस तरह का संदेह कैसे हुआ ?"

"कारण कुछ नहीं। मलबार में कई नए रईस दिखाई देंगे। वे यह कहकर तुम्हें फुसलाने की कोशिश करेंगे कि हम तुम्हें अधिक मजदूरी देंगे। हमारे पास आ जाओ।"

"वरीतकुंज ऐसे लोगों के फुसलाने में नहीं आएगा।"

"यदि ऐसी बात है, तो ठीक है। तुम जल्दी तैयार होकर बस स्टैंड पर पहुंच जाओ।"

वरीतकुंज खुशी से फूला न समाया। उसे कोई तैयारी की जरूरत भी नहीं थी। जो धोती उसने सिर पर बांध रखी थी, उसने उसे उतार दिया और उसको पहनी हुई धोती के स्थान पर पहन लिया। जो धोती उसने पहनी हुई थी उसे उतारकर अपने सिर पर बांध दिया। उसने पहनी हुई धोती को थोड़ा सा नीचे से मोड़ दिया। इसी दौरान उसे बीड़ी पीने की तलब लग रही थी। उसने अपने कान पर बीड़ी का टुकड़ा ढूंढा, लेकिन नहीं मिला। आखिर उसने वर्गीज से सिगरेट का वह टुकड़ा मांग ही लिया जिसे वह पी रहा था और थोड़ा सा शेष रह गया था। उस सिगरेट के टुकड़े को पीते हुए वह भी वर्गीज के साथ मलबार के लिए चल पड़ा।

वरीतकुंज ने मत्तायी के बच्चों के सिर पर रखे हुए संदूकों को जबरदस्ती उतारकर अपने सिर पर रख लिया। मत्तायी की पुरानी छतरी भी उसने ले ली और अपने सिर पर रखे हुए संदूकों के ऊपर रख दी।

"आलपाट्टोलंकोटेलिकुट्टी—अवल एणपत्तेट्टोलकेट्टेण्णिकेट्टि... ।"

(आलपाट्ट गांव के ओलंकोट घर की सुंदर एलिक्कुट्टी ने नारियल के अठासी पत्ते गिनकर उनके लिए बांध दिए।)

जब वे लोग पहाड़ियों के बीच में से गुजर रहे थे तो वरीतकुंज अपना लोकगीत गा रहा था। पहाड़ियों के बीच में उसके गाने की लय गूंज रही थी। बच्चे उसके गाने का आनंद लेते हुए उसके साथ ही गा रहे थे।

दोपहर होते-होते वे लोग बड़ी सड़क पर पहुंच गए। वर्की और उसके साथी पहले से ही वहां पहुंचे हुए थे और स्पेशल बस का इंतजार कर रहे थे।

करीब तीन बजे कोयला भाप से चलने वाली एक बस धुंआ उगलती और रेंगती हुई वहां पहुंची। बस खड़ी हो गई। वर्गीज कंडक्टर के पास जाकर बातचीत करने लगा। बहुत देर तक दोनों ने गुप्त बातचीत की। अंत में कंडक्टर वर्गीज की बात पर राजी हो गया। वह मुस्कुराते हुए नीचे आया और उसने अपने साथियों से गाड़ी में सामान रखने का इशारा किया।

वर्की तथा अन्य सभी साथी संदूकों, गठरियों और अन्य सभी सामान बस की छत पर चढ़ाने लगे। जब वर्गीज के साथियों का सामान बस में चढ़ाया जाने लगा तो वर्की ने उनके सामान को चढ़ाने से रोक दिया। वर्की के पास आकर कंडक्टर ने उसे हट जाने को कहा।

"इस बस में केवल हम और हमारा सामान ही जाएगा।" वर्की ने कहा।

"मैं बताऊंगा कि इस बस में कौन-कौन जाएगा।"कंडक्टर ने उत्तर दिया।

"मैं ऐसा नहीं करने दूंगा।" वर्की हठ करने लगा।

"आप लोग दूसरी बस का इंतजाम कीजिए। मैं इसमें बिल्कुल भी नहीं चढ़ने दूंगा।" कंडक्टर ने अपना निर्णय देते हुए कहा।

वर्की परेशान हो गया था। उसने सोचा कि यहां गुस्सा करने से कोई फायदा नहीं, यदि वे उस बस में नहीं जा पाएंगे तो उनको उस जगह दो दिन और ठहरना पड़ेगा और उनके पचास रुपए और खर्च हो जाएंगे।

अंत में वर्की ने हार मान ली। वह कंडक्टर को दादा-परदादा तक की गाली बकते हुए बस में सामान चढ़ाने लगा।

इस प्रकार इस छोटी-सी बस में चवालीस यात्री और बीस परिवारों का घरेलू सामान लद गया। यह बस क्षय के रोगी की तरह छींकते-छींकते आगे बढ़ने लगी।

एक ओर गोधूलि का समय था, दूसरी ओर वे अपने अन्नदाता, सोने के महाराजा की भूमि से अंतिम विदाई लेकर चल पड़े। वे लोग रात तक आलुवा रेलवे स्टेशन पर पहुंचे जहां उन्हें रात बितानी थी।

तीन

मलबार के पूर्व की ओर पहाड़ियों की तराई में एक छोटा-सा गांव बसा हुआ है। तराई के लंबे-चौड़े मैदानों में जहां-तहां झाड़ियां ही झाड़ियां हैं। पहाड़ी, केले के वृक्षों और बांस के झुंडों की छाया में घास-फूस से बनी कुछ झोपड़ियां खड़ी हैं।

गांव के दक्षिणी और ऊंचे पहाड़ों के बीच में एक विशाल टीला है। टीले पर एक बहुत ऊंची अट्टालिका है जिसकी छत नारियल के पत्तों से बनाई गई है। यह अट्टालिका इस प्रदेश के सबसे बड़े जमींदार आलत्तुमूकाट्टल कुंजबु कुरुप्प का घर है। बिना सफेदी की दीवारों और बिना सरियों की खिड़कियों वाले उस मकान के आगे एक विस्तृत आंगन है। आंगन के चारों ओर सात फीट की

मिट्टी की दीवार भी दिखाई पड़ रही है। दक्षिणी कोने में खलिहान है और पूर्वी भाग में मिट्टी की दीवार के बराबर एक चौपाल भी है।

अट्टालिका के पूर्वी और दक्षिणी भागों के बरामदों को छिपाने वाली छोटी दीवारें और उन छोटी दीवारों के बराबर में बैठकें भी हैं। दक्षिण वाले बरामदे के बीच में आग जलाई गई है।

इस बरामदे के साथ की बैठक में कुंजबु कुरुप्प बैठे हुए पान चबा रहे हैं। उनका मुख्तार कुंजप्पा नंबियार अपने मालिक के सामने सिर झुकाकर खड़ा है। वह जमीन की कुछ रजिस्ट्रियों को हाथ में लेकर पढ़ रहा है।

"अब पुरानी मालगुजारी के भाव में जमीन नहीं बेचनी चहिए।" प्रमाण-पत्र देखते हुए मुख्तार ने कहा।

"जमाना बदल गया है। यहां अब तो ये चेट्टन[1] लोग हजारों की संख्या में हर रोज आ रहे हैं। उनके पास काफी रुपया भी होता है। चूंकि वे यहां बसने के लिए आते हैं, इसलिए वे किसी भी भाव में जमीन खरीदने को तैयार होंगे। फिर हम क्यों इन्हें सस्ती जमीन बेचकर दया दिखाएं ?"

बुजुर्ग ने खांसते हुए एक भद्दी आवाज निकाली और तांबे के सुंदर पीकदान में थूककर अपने मुख्तार को घूरते हुए उसने उगलदान नीचे रख दिया।

"कुंजप्पा ने ठीक ही कहा कि जमीन का भाव बढ़ाना चाहिए। लेकिन कितना बढ़ाना चाहिए ?"

"जमीन पांच रुपए एकड़ के स्थान पर दस रुपए एकड़ की दर से बेचनी चाहिए।"

"यह दर तो ज्यादा होगी। हमें दस की जगह सात रुपए का भाव करना चाहिए नहीं तो ये लोग दूसरे जमीदारों के पास चले जाएंगे।"

"नहीं, नहीं। दस रुपए ही लेना है। और वे दूसरी जगह चले भी जाएं तो चिंता की क्या बात है ? हमें केवल थोड़ा सा इंतजार ही तो करना पड़ेगा। पहाड़ी इलाके की भी तो सीमा है। ये लोग तो हर रोज हजारों की संख्या में यहां आ रहे हैं।"

"मालूम पड़ता है कि चेट्टन लोग निम्न वर्ग के हैं। ये तो इस प्रदेश को भी गंदा कर देंगे।"

"हमें इनसे क्या नुकसान है ? वे कैसे भी जिएं हमें क्या मतलब ? घने

---

1. चेट्टन—इसका अर्थ है बड़ा भाई। मध्य ट्रावनकोर के ईसाई लोग अपने से अधिक उम्र वाले लोगों को 'चेट्टन' आदर-सूचक संबोधन देते हैं। लेकिन जब वे लोग यहां से उत्तर केरल के मलबार में पहुंच गए, तो वहां के लोग इन आंगतुकों को 'चेट्टनमार' (चेट्टन लोग) कहकर बुलाने लगे। 'चेट्टनमार' का अर्थ है चेट्टन लोग।

जंगलों को काटकर खेती करने के लिए इन लोगों की ही जरूरत है। जंगलों में खेती करने में ये लोग बहुत माहिर हैं और बहुत मेहनती भी हैं। यहां के चार आदमियों का काम उनका एक आदमी कर सकता है।"

"रामकुरुप्प ने कहा कि ये वे लोग हैं जिन्हें ट्रावनकोर से देशनिकाला कर दिया गया है। क्या यह बात सच है ?"

"मालूम नहीं, सुना है कि इनमें ज्यादातर बदमाश और लफंगे हैं।"

"कुंजप्पा ! इसीलिए मैंने कहा था कि इन लोगों को यदि घुसने की जगह दे दी गई तो ये बदमाश इस देश को भी गंदा कर देंगे। ऐसा मालूम पड़ता है कि ये व्यवहार-लायक आदमी भी नहीं है। कहीं ऐसा न हो कि धीरे-धीरे ये लोग इस पूरे देश में कब्जा कर लें और हमें यहां से भागना पड़े। उस दिन ट्रावनकोर से एक सज्जन यहां आए थे। क्या नाम था उनका, याद नहीं आ रहा है ? शायद कोई पिल्लै थे। उन्होंने कहा था न कि इन ईसाई लोगों ने ट्रावनकोर में बहुत अत्याचार किया है। इन लोगों ने वहां पर हिंदू लोगों को जबरदस्ती ईसाई बनाने की कोशिश की थी। क्या वे यहां पर भी इस तरह की हरकत करेंगे, ये लोग हमारे मंदिरों को भी अपवित्र कर डालेंगे ? कहीं ऐसा न हो कि ये लोग यहां के पणियर[1] और मलयर[2] लोगों को फुसलाकर ईसाई बना लें ? यह सब सोचने पर डर-सा लगता है।

कुंजप्पा नंबियार ने कोई उत्तर नहीं दिया। जिस जमीन की रजिस्ट्री वह ढूंढ रहा था, वह उसे मिल गई। वह सब कुछ भूलकर जोश से उसे पढ़ने लगा।

"यह पुलियोडन पहाड़ी की रजिस्ट्री है। इसमें पुलियोडन खेत के बारे में कुछ नहीं लिखा है। तो भी नाम से ही यह विदित होता है कि खेत पहाड़ी से जुड़ा हुआ है। उस खेत पर कारनाट्टु नंबियार का कोई अधिकारी नहीं। वह तो कलियांपारा पहाड़ी से लगा हुआ बिल्कुल नहीं है।"

"क्या कुंजप्पा ने ही कहा था न कि कारनाट्टु नंबियार ने उसके खेत के चारों ओर बाड़ लगा दी है ?"

"ठीक है। वह तो एक दखल का मामला है। कारनाट्टु नंबियार के विरुद्ध हमें अदालत में शिकायत करनी चाहिए।"

नालिश और अदालत का नाम सुनकर उस बुजुर्ग का मुंह गुस्से से लाल हो गया। मुकदमे में जीतें या हारें, लेकिन अदालत में अपने कुछ नालिश चल

1,2, पणियर और मलयर—केरल के जंगली इलाकों में रहने वाले आदिम जाति के लोग। ये ज्यादातर जमींदारों के लिए खेतीबाड़ी किया करते थे और बदले में उनको थोड़ा सा पैसा मिलता था। जब उन पर कोई विपत्ति आती तो उस समय जमींदार लोग उनकी हर प्रकार से सहायता करते थे।

रहे हैं, यह कहने पर वह बुजुर्ग बहुत गर्व करता था। कुंजबु कुरुप्प एक ऐसा बुजुर्ग था जो इस बात का पूरा यकीन करता था कि मुख्तार की होशियारी ज्यादातर नालिशें बनाने में हैं।

"कुंजप्पा ! तो कल ही अदालत में नालिश करनी है। कारनाट्टु नंबियार को एक अच्छा सबक सिखाना है।" बुजुर्ग ने तेजी में कहा।

"देखिए, एजेंट कोच्चुवरीत चेट्टन आ रहा है।" कुंजप्पा नंबियार ने दरवाजे की ओर इशारा किया।

काला, मोटा, गंजा, एक नाटा-सा आदमी आंगन पार करके बरामदे में पहुंच गया।

"बैठिए, कोच्चुवरीत," बुजुर्ग ने कुर्सी की ओर इशारा किया।

"क्यों ? और नए लोग आए हैं क्या ?"

"हां, केवल पंद्रह लोग।"

कोच्चुवरीत हंसते हुए बोला।

"तो बहुत कुछ हाथ में आएगा।" बुजुर्ग नई सफलता की आशा से हंसने लगा।

"मालिक जैसा सोचते हैं, उतना नहीं। सबके सब गरीब हैं। हर आदमी के पास दो सौ रुपए से तीन सौ तक होंगे, ज्यादा नहीं।"

"तो कम से कम तीन हजार का काम मिलेगा।"

जल्दी से ही वे मूल मुद्दे पर आ गए। कुंजप्पा नंबियार भी बीच-बीच में अपनी राय पेश करता रहा। सात रुपए एकड़ के हिसाब से साढ़े तीन सौ एकड़ जमीन कोच्चुवरीत द्वारा बिक्री की गई। रजिस्ट्री में दस रुपए एकड़ के हिसाब से लिखा गया था। इस प्रकार कोच्चुवरीत को इस लेनदेन से एक हजार रुपए का लाभ हुआ। उसने कुंजप्पा नंबियार को सौ रुपए घूस दिया और साधारण नियम के अनुसार अपने मुवक्किलों से उसे डेढ़ सौ रुपए कमीशन भी मिला।

इस प्रकार कोच्चुवरीत जमीन के लेनदेन के एजेंट के रूप में गुजारा करता है। बीच-बीच में वह ट्रावनकोर को चला जाता है। वह वहां जाकर मलबार की भूमि के उपजाऊपन और खुशहाली के बारे में भाषणों तथा अन्य एजेंटों के माध्यम से प्रचार करता और बेचारे गरीब लोगों को मलबार जाने के लिए उकसा आता। फिर मलबार जाकर उन लोगों को जमीन खरीदने और कर्ज दिलाने के चक्कर में फंसा आता। इसके बाद फिर नए आसामियों की खोज में ट्रावनकोर चला जाता। अतः उसका यह काम निरंतर चलता रहता।

चूंकि कोच्चुवरीत एक दलाल था और उसके मलबार में रहने से कुंजबु कुरुप्प और कुंजप्पा नंबियार को बहुत लाभ था, इसलिए वे उसे अपने साथ रखने की भरसक कोशिश करते रहे। जो पहाड़ी जमीन मिट्टी के भाव बिकती

थी, उसे हजारों रुपयों में बिकवाकर उसने उन्हें बहुत लाभ पहुंचाया तो जमींदार तथा उनके मुनीम कोच्चुवरीत को अपने पास रखने से खुश क्यों न होंगे ? साथ ही साथ मुख्तार कुंजप्पा नंबियार की भी व्यक्तिगत आमदनी बहुत बढ़ने लगी।

कोच्चुवरीत एक लखपति आदमी बन गया। उसके द्वारा फंसाए गए ट्रावनकोर के गरीब परिवार के बेचारे लोग उस पहाड़ी जमीन से जूझते हुए अपनी-अपनी किस्मत को कोसते और उन्हीं घास-फूस की झोंपड़ियों में अपना जीवन बिताते रहे।

चार

वर्की अपने जत्थे के साथ तलरोरी[1] से एक स्पेशल ट्रक में मलबार के उस पहाड़ी प्रदेश में आया था। जैसे ही वे ट्रक से उतरे वहां एक विचित्र घटना हो गई।

एक शरारती लड़के ने सिगरेट की डब्बी के भीतरी कागज में कुछ सिक्के लपेट लिए और उसको हाथ से हिला-हिलाकर आवाज देने लगा। वह वर्की के पास पहुंचकर पूछने लगा-

"मालिक ! कोन्ता[2] चाहिए तो ले लो। चार आने के पांच मिलेंगे।" उस लड़के की बात सुनकर वहां पर खड़े सभी लोग जोर-जोर से हंसने लगे।

"अरे ! मरी हुई गाय का गोश्त[3] बेचने का काम शुरू कर दो। यह धंधा खूब चलेगा।"

वर्की को यह मजाक बिल्कुल पंसद नहीं आया। उसको इस बात पर बहुत गुस्सा आया। वर्की ने इस मजाक का बदला लेने की कसम खा ली। वह सोचने लगा कि इस इलाके में आकर इन लोगों ने जो मजाक मेरे साथ किया है वह असह्य है।

"इन लोगों को समय आने पर अच्छा-खासा सबक सिखाऊंगा।"

इस प्रकार वर्की के मन में मलबार के लोगों के प्रति घृणा का भाव उत्पन्न

---

1. तलरोरी—कोच्ची राज्य का आखिरी जिला जो मलबार से लगा हुआ है।
2. कोन्ता—एक प्रकार का लाकेट। ईसाई लोग साधारण तौर पर ऐसा लाकेट या कोन्ता पहनते हैं जिस पर क्रास और ईसा मसीह का चिह्न अंकित होता है।
3. मरी हुई गाय का गोश्त—यह एक मजाक था, क्योंकि ईसाई लोग मरी हुई गाय का गोश्त खाते थे। मलबार के कट्टर हिन्दू लोगों को यह अजीब लगता था। इसलिए हिन्दू लोग गाय के गोश्त के नाम पर ईसाइयों का मजाक उड़ाते थे।

हो गया।

शाम हो गई थी। लोगों ने ट्रक से उतरने के बाद अपना-अपना सामान भी नीचे उतार लिया और ट्रक वापस लौट गया। वर्की अपने जत्थे के साथ सड़क के किनारे खड़ा हो गया।

वर्की का एक रिश्तेदार वरीतकुंज, बहुत साल पहले से ही मलबार में आकर बसा हुआ था। वर्की ने ट्रावनकोर से आने के दो दिन पहले ही वरीतकुंज को पत्र लिखा था कि मैं भी मलबार आ रहा हूं। तुम मुख्य सड़क पर आकर हमारा इंतजार करना। जब वे लोग वहां पहुंचे तो वहां पर न तो वरीतकुंज ही दिखाई दिया और न ही कोई अन्य परिचित ही। उस सड़क के किनारे एक मुसलमान की चाय की दुकान थी। उस दुकानदार से मालूम हुआ कि वरीत की पत्नी का मलेरिया के बुखार से स्वर्गवास हो गया है। वह भी वहां से नौ मील दूर एक पहाड़ी पर बसा हुआ है। यह बात सुनकर वर्की को काफी दुख हुआ।

वर्की के साथी अपना सारा सामान एक जगह इकट्ठा कर वहीं पर बैठ गए। वे सोचने लगे कि अब क्या करें और कहां जाएं।

सभी लोग बहुत थके हुए थे। उनको एक भी कदम आगे बढ़ना अब बहुत मुश्किल हो रहा था उस अज्ञात और संदेहास्पद नीरव स्थान में उन लोगों को बैचनी महसूस हो रही थीं।

सूर्यास्त हो चुका था और झाड़ियों में छुपा अंधेरा धीरे-धीरे सब जगह फैलने लगा था। इधर-उधर जंगली जानवरों की भयभीत आवाजें सुनाई पड़ रही थीं।

थोड़ी ही देर में एक नौजवान खाकी कमीज और सफेद निकर पहने हुए मुस्कुराते हुए वर्की के पास आया।

"वरीत चेट्टन यहां से नौ मील दूर रहते हैं। आप लोग आज रात मेरी झोंपड़ी में ही ठहरिए। मैं यहां पर अकेला रहता हूं। कल सवेरे मैं खुद आप लोगों को वरीत चेट्टन से मिला दूंगा।"

वर्की ने उस नौजवान की ओर देखा। वह बहुत सुंदर, फुर्तीला और लंबा-सा नौजवान था। बोली से मालूम पड़ रहा था कि वह ट्रावनकोर का रहने वाला है।

"तुम्हारा गांव कहां है ?" वर्की ने उस लड़के से पूछा।

"मेरा गांव कुमुली के पास है। आपका गांव ?"

"हम मुण्डक्यं के हैं। क्या तुम इधर अकेले रहते हो ?"

"जी हां ! यहां हमारे कुछ खेत हैं। यहां की खेती-बाड़ी मैं संभालता हूं। मेरे चाचा यहां से चार मील दूरी पर खेती करते हैं और आनंद से रहते हैं। आप सबको अपने साथ ले आइए।" वे सभी उसके साथ-साथ चल पड़े।

वास्तव में उस निमंत्रण ने उनके मन को बहुत शांति प्रदान की। वे लोग संदूकों को और अन्य सामान को लेकर उस नौजवान के पीछे-पीछे चल पड़े।

"तुम्हारा नाम क्या है ?"

"अंतोणी, तुम्हारी उम्र कितनी होगी ?"

"सत्रह साल की।"

अंतोणी कुछ शर्माते हुए और मुस्कुराते हुए उनके आगे चल रहा था।

"क्या तुम्हारी झोंपड़ी तक पहुंचने के लिए अभी बहुत चलना पड़ेगा ?" वर्की ने पूछा।

"नहीं, सामने जो पहाड़ी है, उसको पार करते ही मेरा बगीचा आ जाएगा।"

उस पहाड़ी पर घना अंधेरा छाया हुआ था। अंधेरे में रास्ता टटोलते-टटोलते वे एक पगडंडी पर पहुंचे और धीरे-धीरे आगे बढ़ते रहे।

"क्या यहां पर बाघ आदि हैं ?" वर्की ने डरते हुए पूछा।

"शायद होगा भी। पर आप डरिए मत। वह आदमी पर हमला नहीं करता।"

वर्की ने टार्च जलाई और बच्चों, औरतों और बूढ़ों को बीच में करते हुए उसने अपने थैले से एक लंबी छुरी निकाली। वह स्वयं सबसे पीछे-पीछे चलने लगा। सबसे आगे अंतोणी चल रहा था।

आधा घंटा चलने के बाद वे सभी लोग अंतोणी की झोंपड़ी में पहुंचे।

अंतोणी ने झोंपड़ी के भीतर जाकर दीया जलाया। उन लोगों ने बरामदे में अपना सामान रख दिया और वहीं पर सोने का प्रबंध करने लगे।

अंतोणी झोंपड़ी के पश्चिमी बरामदे में जाकर तांबे के एक बड़े बर्तन में चावल पकाने का इंतजाम करने लगा।

"अंतोणी, तुम वहां पर क्या कर रहे हो ?" वर्की ने लेटते हुए पूछा।

"थोड़ा सा गंजी पकाने का प्रयत्न कर रहा हूं।"

"केवल अपने लिए ही बनाना, हमें भूख नहीं है।"

"कोई बात नहीं। आप लोग एक लंबे सफर करने से बहुत थके हुए हैं।"

"थके तो हैं, पर भूख नहीं है। हम लोगों ने ट्रक में चढ़ने से पहले तलरोरी के एक होटल में खाना खा लिया था।"

"भले ही आप लोगों को भूख नहीं है, लेकिन बच्चों को तो होगी ही। उनको रात में कुछ न कुछ खाने के लिए तो चाहिए ही। मैं आप लोगों को अपनी झोंपड़ी में भूखा नहीं सोने दूंगा। यहां चावल भी है और लकड़ी भी। केवल पकाने में थोड़ा समय तो चाहिए ही", अंतोणी ने अंगीठी जलाते हुए कहा।

"यदि ऐसी ही बात है तो अंतोणी, तुम अकेले कष्ट मत उठाओ। अनिक्कुट्टी, तुम भी जाकर अंतोणी की मदद करो।"

औरतों के बीच में से एक सुंदर लड़की धीरे से उठी। करीब चौदह साल की उम्र होगी उसकी। लेकिन बहुत ही खूबसूरत। उसने उठकर अपने बाल संभाले और अधखुली आंखों के साथ मुस्कुराहट छिपाते हुए अंतोणी के पास पहुंची। वह अंतोणी से खाना बनाने की आज्ञा की प्रतीक्षा में उसके पास जाकर खड़ी हो गई।

अंतोणी ने उसकी ओर नजर फेरी। उसकी मुस्कुराहट से होंठों के बीच में दंतपंक्ति मोतियों जैसी दिखाई दे रही थी। वह नीचे देखकर बोली, "चावल मैं पकाऊंगी।"

एक प्रकार से अंतोणी से उसकी एक प्रार्थना थी कि आप वहां से उठ जाइए। अंतोणी को उसके आने से दुख इसलिए हो रहा था कि वह भी सफर से बहुत थकी हुई थी और उससे काम करवाना उसे अच्छा नहीं लग रहा था। लेकिन वह उसे सहायता लेने से इंकार भी नहीं कर सका। वह कुछ कह भी नहीं सका और अंगीठी के पास से हट गया।

अनिक्कुट्टी ने अपनी सुंदर-सुंदर आंखों से अंतोणी को देखा। एक बार फिर उसकी मुस्कुराहट से उसकी होठों के बीच सुंदर दंत पंक्तियां दिखाई दीं। फिर वह झुककर आग फूंकने लगी। यद्यपि अनिक्कुट्टी की आंखों से यात्रा की थकान तो झलक ही रही थी, इसके साथ ही उसके चेहरे पर दया और भय का भाव भी झलक रहा था। उसका मुंह एक हिरण के बच्चे की तरह मासूम था। उसके बाल घुंघराले और मटमैले थे जो उलझे हुए थे। अंगीठी की आग की रोशनी में उसके चेहरे की बाई ओर एक छोटा सा काला तिल उसके चेहरे पर चार चांद लगा रहा था।

अंतोणी ने यह कुछ तिरछी निगाहों से देख लिया था। लेकिन उसको आत्मग्लानि इस बात से हो रही थी कि किसी के अनजाने में ऐसा करना उचित नहीं था।

अंतोणी रसोईघर के पास बैठकर थोड़ी ही देर में मरच्चीनी की छाल निकालने लगा।

"कलछी कहां है ?" अनिक्कुट्टी ने अंतोणी से पूछा।

"सामने रखे बांस के खंभे के पास दीवार में है।"

अनिक्कुट्टी ने उठकर कलछी उठाई।

"चावल कहां रखे हैं ?" उसने फिर पूछा।

"सामने तांबे के बर्तन में हैं।"

तांबे का बर्तन लेकर वह चावल धोने के लिए बाहर आंगन में चली गई।

चावल धोकर बर्तन में डालने के बाद जब वह लौटी तो फिर पहले की ही तरह सिर झुकाकर बैठ गई।

मरच्चीनी काटते समय अंतोणी के दिल में विभिन्न प्रकार के नए-नए भाव पैदा होने लगे।

यद्यपि वे एक ही गांव और जाति के थे, लेकिन उसने अनिक्कुट्टी को पहली बार देखा था। उनकी जन्मभूमि एक होने पर भी अपने गांव से दो सौ मील दूर इस मलबार के पहाड़ी प्रदेश में आकर वे एक, दूसरे को देख रहे हैं। उनका मिलन भी ऐसे हो रहा है जैसे एक रंगमंच पर बिछुड़े हुए पति पत्नी मिलते हैं।

वर्की और उसके साथी गहरी निद्रा में सो रहे थे। केवल वे दोनों युवक-युवती ही जागे हुए थे, यद्यपि दोनों के दिलों में बहुत कुछ कहने और सुनने के अरमान जागे हुए थे लेकिन वे कुछ भी प्रकट नहीं कर पा रहे थे। उनके मन में घुटन सी हो रही थी।

वातावरण इतना शांत था कि उसे मात्र अंगीठी की आग की हुंकार तक बाधा पैदा कर रही थी।

"क्या वर्की साहब तुम्हारे पिताजी हैं ?" बहुत देर की निःशब्दता के बाद अंतोणी ने अनिक्कुट्टी से पूछा।

"नहीं," उसने सिर हिलाकर नीचे देखते हुए कहा।

"ये मेरे माता-पिता नहीं हैं। मैं उनकी दूर की रिश्तेदार हूं।"

"मेरे भी मां-बाप नहीं हैं।" अंतोणी ने करुणभाव से अपने आप ही अनिक्कुट्टी से अपना परिचय दिया।

"मेरा पालन-पोषण मेरे चाचा ने ही किया है।"

अनिक्कुट्टी ने दयाभाव से अंतोणी को देखा।

अंतोणी भी अनिक्कुट्टी को एकटक देखता रह गया।

"मेरे चाचा जी ने मुझे यहां अकेला छोड़ रखा है और वे स्वयं दूसरी जगह रहते हैं।"

"क्या तुम इस पहाड़ी-जंगल में अकेले रहते हो ?"

"मैं अकेला नहीं रहता। खुदा भी मेरे साथ रहते हैं।"

अनिक्कुट्टी की आंखों में अंतोणी के प्रति दया का भाव था।

वे दोनों ही अनाथ थे। इसलिए वे दोनों दो घंटे तक अपनी-अपनी दुखभरी कहानियां कह रहे थे।

जब चावल और मरच्चीनी पक गए तो अंतोणी ने वर्की और उसके साथियों को खाने के लिए जगाया।

वे बरामदे में ही बैठकर चावल और मरच्चीनी खाने लगे। खाते समय सामने के पहाड़ी की तराई के एक टीले की ओर इशारा करते हुए वर्की ने अंतोणी से पूछा :

"वहां भी हमारे ही लोग रहते हैं क्या ?"

"नहीं," अंतोणी ने उत्तर दिया। "वहां पर यहां के जमींदार का मुख्तार कृष्णन नंबियार का घर है।"

दूसरे दिन बहुत सवेरे ही वर्की ने सब लोगों को जगाकर वरीत के घर जाने के लिए तैयार होने को कहा।

उन सभी ने पहले की भांति ही सामान अपने-अपने सिरों पर रखा और वरीत के घर के लिए चल पड़े। अंतोणी भी उनके साथ मार्ग-दर्शक के रूप में चल रहा था।

उस स्थान की प्राकृतिक छटा अवर्णनीय थी। एक ओर लहलहाते खेत हैं तो दूसरी तरफ अनाज के नए उगते हुए छोटे-छोटे पौधे वहां की प्राकृतिक छटा को और भी चार चांद लगा रहे थे। वहां के लहलहाते हरे खेतों को देखकर वर्की ने अंतोणी से पूछा :

"क्या यह सब तुम्हारे खेत हैं ?"

"जी हां," अंतोणी ने विनम्रतापूर्वक सिर झुकाकर मुस्कुराते हुए उत्तर दिया। "सब कुछ ईश्वर की कृपा है। हमारे पास कुल तीस एकड़ जमीन है। उसमें से पंद्रह एकड़ बहुत ही उपजाऊ है।"

उसने दूसरी ओर देखा तो उसकी आंखें अनिक्कुट्टी की आंखों से मिल गई।

दस बजते ही वे वरीत के डेरे पर पहुंच गए। झोंपड़ी के बरामदे में चारपाई पर एक आदमी लेटा हुआ था। वह था वरीत। आवाज सुनते ही वरीत उठ खड़ा हो गया, लेकिन बीमार था। वह बीमारी से बेचैन था।

बेचारा वरीत दस दिनों से मलेरिया से बीमार चल रहा था। पीली-पीली आंखों को खोलकर बेचैनी के साथ वह कहने लगा, "देखो मेरी हालत ! मैं दस दिनों से बीमार पड़ा हूं।"

पांच

वरीत ने यह खेत आनकथं औसेप नामक आदमी से खरीदा था। औसेप के पास बहुत जमीन थी जिसमें से वह नए बासिंदों को थोड़ा-थोड़ा करके बेचता रहा। वह केवल जमीन ही नहीं, लोगों को खेती करने के लिए रुपए भी कर्ज दिया करता था।

औसेप अपने परिवार के साथ सन् 1940 में मलबार आ गया था अब

वह बहुत अमीर बन गया है।

सन् 1938 से तिरुवितांकूर में पुराने विचार के हिन्दू लोगों ने ईसाइयों को जब परेशान किया तो औसेप इन परेशानियों से बचने के लिए तिरुवितांकूर छोड़कर मलबार चला आया, जो उन्हें एक वरदान सिद्ध हुआ।

औसेप ने शुरू में जंगली जमीन खरीदी थी, जिसे उन्होंने खोदकर तथा हल चलाकर उपजाऊ जमीन में परिवर्तित किया। कुछ जमीन पर उन्होंने बाग-बगीचे लगाए और कुछ में खेती की। एक बाग के बीच में उसने एक बंगला भी बनवाया। इस प्रकार औसेप आजकल धनाढ्य व्यक्तियों में गिना जाता है।

वरीत के कहने पर वर्की औसेप से वहां बसने की सहायता के लिए मिला। औसेप उसकी सहायता करने को तैयार हो गया।

"मैं तुम्हारी बात पर विचार करूंगा।" औसेप ने कहा, "रामकिटाव को बुला कर बात करूंगा।"

"सुना है कि पातंगकोट जमींदार की बहुत सी पहाड़ी जमीन बिकाऊ है।"

"जब तक जमीन खरीदी जाती है, तब तक हमें रहने के लिए स्थान की व्यवस्था भी कीजिए।"

"वह तो हो जाएगा। पश्चिमी दिशा के पहाड़ी की तराई में कुछ झोंपड़ियां खाली हैं आप लोग वहां रह सकते हैं।

इस प्रकार वर्की अपने परिवार के साथ पश्चिमी पहाड़ी की बांस की एक झोंपड़ी में रहने लगा।

वर्की के एक साथी चाको ने औसेप से पचास एकड़ जमीन खरीद ली जिस पर खेती करने लगा है। वर्की के दूसरे साथी ने भी उसी से छह सौ एकड़ जमीन खरीद ली है। बाकी लोग वर्की के साथ ही रह रहे थे।

छह

वर्की और उसके साथी जिस दिन मलबार पहुंचे थे उसके दूसरे दिन वर्गीज और उसके साथी भी उस पहाड़ी प्रदेश में पहुंच गए। सबसे पहले वे औसेप के बागान से दो मील दूर एक पहाड़ी पर गए। वहां उनका स्वागत करने के लिए जोण के लोग खड़े थे।

जोण तिरुवितांकूर में भी एक धनाढ्य व्यक्ति था। वहां की कुछ जमीन एक लाख रुपए में बेचकर वह मलबार चला आया था। उसने उन रुपयों से

मलबार में पांच सौ एकड़ जमीन खरीदी थी। उसने यह अंदाज लगाया कि एक करोड़ रुपए खर्च करने पर भी सारा जंगल कटवाकर भी खेती करने के लिए साफ नहीं कराया जा सकता। इसलिए उसने एक तरकीब सोची कि क्यों न तिरुवितांकूर से गरीब परिवारों को वहां जमीन का लालच देकर बुलाया जाए। वर्गीज और उसके साथी जोण के इस लालच में आकर मलबार पहुंचे।

जोण ने एक पहाड़ी के उपर एक विशाल महल बनवाया, जिसमें वह रह रहा था। उसने अभी तक शादी भी नहीं की थी। उसका एक नौकर था जिसका नाम तोम्मन था और जमीन के मुख्तार का नाम ईप्पन था। उनके अलावा कुछ मेहमान भी स्थायी रूप से उसके पास रहा करते थे। कलकुषि वर्गीज भी इसी तरह का एक मेहमान है। वर्गीज छह हजार रुपए लेकर मलबार आया था। उसने सोचा कि एक बड़ा बगीचा लगाया जाए। वर्गीज जोण की ताई की मामी का बेटा था और दोनों एक ही स्कूल में पढ़ते थे। इसी कारण से जोण वर्गीज की सहायता करने के लिए उत्सुक था और इस तरह वर्गीज एक मेहमान के तौर पर वहां रह रहा था।

जोण ने वर्गीज के सभी साथियों को खेत बेच दिए थे। कलियनपारा पहाड़ी की तराई की पैंतीस एकड़ जमीन को उसने मात्तन और मत्तायी को बेच दिया था। पूर्वी भाग मात्तन को और पश्चिमी भाग मत्तायी को मिला।

मत्तायी ने अपनी जमीन के चारों ओर बाड़ लगाकर लगन से खेती करने का विचार किया। उसने वहां से डेढ़ मील दूर कुछ और जमीन खरीदकर मकान बनवा लिया था, जहां पर वह अपने परिवार के साथ सुख से रहने लगा।

मात्तन ने अपने परिवार के साथ अपनी जमीन पर ही रहने का निश्चय किया। तीन दिन तक मेहनत करने पर उन्होंने वहां बांस की एक झोंपड़ी बनाई। उसके बाद वे जोण के घर में रखे हुए अपने घरेलू सामान और संदूक आदि को ले आए।

उस हरे जंगल के बीच में उनकी बांस की झोंपड़ी ऐसे दिखाई पड़ती थी जैसे एक गिद्ध पंख फैलाकर खड़ा हो। उस झोंपड़ी के पंखों के नीचे से मात्तन का परिवार नया जीवन आरंभ करने लगा। उन्हें वहां की झाड़ियों और लाजी पौधों को काटकर फेंकने के बाद एकदम काली मिट्टी दिखाई दी, जो बहुत उपजाऊ थी। वह उपजाऊ मिट्टी हरी घास और झाड़ियों से ऐसी ढकी हुई थी, जैसे सोने के थाल को हरे रंग के कपड़ों से ढक दिया जाता है।

एक शाम को मरियम अपनी उस सोना उगलने वाली नई जमीन को बहुत खुशी से देख रही थी। उसकी आंखों के सामने मानो हजारों दृश्य एक के बाद एक आ रहे थे। हजारों इच्छाएं और लाखों आकांक्षाएं। तिरुवितांकूर में जब वे रहते थे, तब वे यह अंदाज भी नहीं लगा सकते थे कि इतनी ज्यादा जमीन

उनको मिल भी सकती है। लोग कहा करते थे कि मलबार में जमीन की कीमत पुराने भावों से भी कम है। गाड़ीवान पाच्चुपिल्लै कहा करता था कि मलबार में पौने चक्रम में तीन एकड़ जमीन मिलती है।

मरियम ने पूर्व दिशा को देखकर सोचा कि झोंपड़ी के चारों ओर सब्जी लगानी चाहिए। उसके अलावा खेत के किनारे-किनारे केला भी लगाना चाहिए। पहाड़ी के ऊपरी भाग में काजू लगाना चाहिए। तराई वाली जमीन के एक हिस्से में धान और दूसरे हिस्से में कप्पा, मूंग, उड़द आदि की खेती। एक साल बीतने पर लोग हमारी तरफ देखेंगे तो ईर्ष्या करने लग जाएंगे और कहेंगे—वह मात्तन मालिक का बगान है।

सात

लोग मलबार लगातार आते ही रहे। लोग अपनी थोड़ी-बहुत संपत्ति तथा अपने घरेलू सामान को गाड़ियों में लादकर आते थे। गरीब लोगों के पास थोड़ी सी पूंजी होती है। वे गंदे कपड़े पहनकर पैदल ही आते थे जबकि अमीर लोग मोटरगाड़ियों में लगातार आते ही रहते।

सन् 1943 के आखिरी दिन। दूसरे विश्व युद्ध की चरमसीमा। सारी दुनिया बारूद के धुएं से की हुई है। मनुष्य भुना जा रहा था। विजय-गरिमा इंसानियत को खरोंच रही है। सृष्टि के प्रारंभ से अभी तक ऐसा विस्फोटक जमाना कभी किसी ने नहीं देखा होगा।

बर्मा और मलाया दुश्मन के अधीन हो गए थे।

भारत में भी स्वतंत्रता का आंदोलन भड़क उठा। सारा देश अकालग्रस्त था। सारी खाद्य-सामग्री लड़ाई के मैदानों को भेजी जा रही थी। दुनिया की आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं हो पा रही थी। मंहगाई निरंतर बढ़ने लगी। चारों ओर खींचातानी बढ़ गई।

यहां तक कि रेत के कण भी महंगे हो गए, इंसानियत ही सस्ती रह गई थी।

जहां एक क्विंटल चावल आठ रुपए में मिलता था, वह अब क़ाला बाजार में पैंसठ रुपए में मिलने लगा। पहाड़ी जमीन भी महंगी हो गई। उन दिनों तिरुवितांकूर में किसान लोग बहुत बेचैन हो गए। वहां की खेती से उनको अब लाभ के स्थान पर हानि होने लगी।

इस अनिश्चित जीवन से बचने के लिए उनके सामने केवल दो ही रास्ते

थे—या तो फौज में भर्ती होना या मलबार जाना।

अक्सर नौजवान सेना में भर्ती होने लगे। बहुत से दूसरे लोग मलबार को निकल पड़े। मलबार जाने के लिए तिरुविताकूर के निवासियों को प्रेरित करने वाला एक दूसरा कारण भी था।

कुछ साल पहले बहुत सारे ईसाई लोगों ने तिरुवितांकूर के हिन्दू राजा के विरुद्ध गृहयुद्ध छेड़ने की योजना बनाई लेकिन वे लोग इस योजना में पूर्णरूप से असफल रहे। राजदंड के भय से बहुत लोग मलबार भाग गए। उनमें कइयों ने मलबार में रबर की खेती सफलतापूर्वक की और आज वे ही लखपति बने हुए हैं। कुछ सालों के बाद जब वे तिरुवितांकूर लौटे तो जान-पहचान के लोग उन्हें देखकर आश्चर्यचकित हो गए। वे लखपति लोग सोने की घड़ियां, जंजीरें, हीरे जवाहरात जड़ी हुई अंगूठियां, रेशम के कपड़े पहने हुए दिखाई देते थे। वे लोग अपनी कारों में वहां से विदेशी शराब भी लाते थे। वे जहां उतरते, वहां मेला जैसा लग जाता। उनकी वेशभूषा और हावभाव देखकर साधारण लोग मलबार के बारे में बड़ी-बड़ी अटकलें लगाने लगे।

उन लखपतियों में से कइयों के मलबार में रबड़ के बगान थे। सन् 1940 के बाद से रबड़ का भाव निरंतर बढ़ जाने से ये लोग एकदम लखपति बन गए। यह रहस्य साधारण लोगों को मालूम नहीं था। उन्होंने यह भी जानने की कोशिश नहीं की कि उनके साथ जो अन्य लोग मलबार गए थे उन लोगों के साथ कैसी घटनाएं घटी और वे किन परिस्थितियों में वहां रह रहे थे। वे केवल यही सोचते थे कि जो भी मलबार जाएगा वे सब के सब लखपति बन ही जाएंगे। वे यही सोचते थे कि मलबार की भूमि सोना पैदा करती है। उन लोगों के मन में मलबार जाने की इच्छा पैदा हुई।

वे जत्थे के जत्थे मलबार जाने के लिए निकल पड़े। उनके पास जो भी अचल संपत्ति थी, सब कुछ को बेचकर केवल नोटों की पोटली ही अपने साथ लेकर मलबार पहुंचने लगे।

इस तरह मलबार की पूर्वी पहाड़ियों पर हजारों झोंपड़ियां खड़ी होने लगीं। जिन पत्थरों की गुफाओं में अजगर सोया करते थे, वहां आजकल खेतीबाड़ी करने के औजारों के स्टोर बन गए हैं। पहाड़ियों की चोटियां जो सदा बंजर दिखाई देती थीं, आज फल-फूल के पौधों और खेती से हरी-भरी दिखाई देती हैं, मानो देवकन्या अपने हाथों में फल-फूल से सजी थाली लिए खड़ी हो।

आठ

मरियम ने भोर होने से पहले ही खाना बना लिया था।

सूरज देवता धीरे-धीरे अपनी किरणें फैलाने लगे। थोड़ी ही देर में उस बाल सूर्य की किरणों की लालिमा उस जंगल पर भी छा गई। मरियम अपनी झोंपड़ी के बरामदे में बैठकर पूर्व दिशा की ओर देख रही थी। वह मन ही मन मीठे-मीठे स्वप्नों की धारा में प्रवाहित हो रही थी।

सूर्य उदय हुए काफी देर हो गई थी। लेकिन मात्तन फिर भी नहीं जागा। वह खुर्राटे भरकर सो रहा था। मरियम को उस पर गुस्सा आया। उसने उसे जागने की काफी कोशिश भी की लेकिन वह फिर भी नहीं जागा।

इस पर मरियम को अत्यधिक गुस्सा आया और कहने लगी, "मर गया है क्या ?" उसने मात्तन के कुम्हड़ा जैसे सिर को उठाकर नीचे पटका। 'ढुम्म' की आवाज आई। उसी आवाज से मात्तन जाग गया। वह उसे आंख फाड़-फाड़कर देखने लगा।

उसने मरियम की गुस्सैली आंखों को देखा। वह धीरे से उठकर बिस्तर पर ही बैठ रहा। धोती पहनते हुए वह चारों ओर घूरने लगा।

"अरे ! यह क्या हुआ ? दोपहर हो गई क्या ? पता ही नहीं चला।"

"क्या चाहिए ?" इस भाव से मात्तन ने मरियम की ओर मुस्कुराते हुए देखा।

"क्या आप इस प्रकार दोपहर तक सोने और आराम करने के लिए ही यहां आए हैं ?"

"जल्दी से खाना खाओ और फावड़ा-कुल्हाड़ी लेकर लकड़ी काटने के लिए जंगल जाओ।"

लड़ाई के मैदान के लिए मात्तन को जो आदेश मिला उससे उसके दिमाग में खुजली पैदा हो गई। शरीर को दुख देना उसको पंसद नहीं। अपने शरीर को मक्खन के समान बिना हिलाए-डुलाए रखने में उसको आनंद आता था। लेकिन यह सब कुछ मरियम के आगे कुछ नहीं चलता था। वह एक उग्र राक्षस के समान है।

मात्तन को सूरज पर गुस्सा आ रहा था। इतनी जल्दी यदि सूरज न निकलता तो वह कुछ और देर तक सो सकता था। अंत में उसे उठना पड़ा। उसने अंगड़ाई ली और अपने कपड़े संभाले।

मरियम ने आंगन में जो फावड़ा और कुल्हाड़ी रखी थी उन्हें उसने उदास भाव से देखा। फिर उसने मरियम की ओर देखा। उसके चेहरे के भाव से यही

प्रकट हो रहा था कि वह काम करने के लिए किसी प्रकार हिचक नहीं रहा है।

मरियम ने रसोईघर में जाकर खाने-पीने की सामग्रियां मात्तन के सामने लाकर रख दीं।

मात्तन के लिए दातून करना, मुंह धोना आदि कोई जरूरी नहीं था। वह मुंह भी तभी धोता था जब मरियम उसको मुंह धोने के लिए कभी मजबूर कर दे अथवा गुस्सा हो जाए।

भोजन की सामग्रियां सामने आते ही वह उस पर ऐसे पिल पड़ा जैसे कोई भालू खाने की चीजों पर पिल पड़ता है। चंद ही मिनटों में उसने सारे बर्तन साफ कर दिए और उठकर खड़ा हो गया।

उसके बाद उसने पान खाया और थोड़ा-सा पान-सुपारी-तंबाकू एक पोटली में बांधकर साथ ले ली। फिर आंगन से फावड़ा उठाकर उसने कंधे पर रखा और मरियम के पीछे-पीछे काम पर चल पड़ा।

धूप में गरमी आने लगी। पत्तों के ऊपर अभी भी ओस के कण दिख रहे थे। पूर्व दिशा की पहाड़ियां सूर्य के प्रकाश में बहुत सुंदर दिख रही थीं। इस प्राकृतिक सुंदर वतावरण में वे दोनों पहाड़ी के ऊपर धीरे-धीरे चढ़ रहे थे।

मरियम को अपनी जमीन देखकर बहुत गर्व महसूस हो रहा था। उस जमीन की एक तरफ एक झरना बह रहा था और दूसरी तरफ सब्जी का बगीचा था।

मरियम उस खेत पर घास खोदने लगी और मात्तन भी खुदाई के काम में लग गया।

गर्मी तो धीरे-धीरे बढ़ती जा रही थी। पहाड़ियों पर मिट्टी काली दिखने लगी थी।

मरियम आराम किए बिना काम करती रही। लहलहाती हुई ताजी घास सब जगह फैल रही थी, जिसे खोदना आसान नहीं था। मरियम बिना सिर उठाए बराबर काम करती रही। उसका फावड़ा एक लय में बराबर नीचे जमीन पर गिरता रहा। उसका गोरा चेहरा पसीने से तर था, जिस पर धूल उड़-उड़कर जम गई थी। उसके धूल भरे बाल बहुत ही सुंदर दिखाई दे रहे थे। उसके सिर के घुंघराले बाल चेहरे के पसीने में चिपक रहे थे। जैसे ही फावड़े की धमक जमीन पर पड़ती तो फावड़े की धमक के साथ-साथ उसके वक्षस्थल भी थिरक जाता था।

घास खोदते हुए मरियम आगे बढ़ती जा रही थी।

मात्तन काम करते हुए नाटक भी कर रहा था। वह कभी सिर मोड़ता था तो कभी जीभ चार इंच तक बाहर निकालता और फावड़ा जमीन पर धम्म

से मारता और एक नजर मरियम की ओर फेंकता। वैसे ही वह सिर टेढ़ा करता और फावड़ा फिर जमीन पर खड़ा करता और हाथों में थूक को मलता, उसके बाद फिर फावड़े को हाथ में उठाता और फिर चलाता। फावड़ा को रिपेयर करने के भाव में वह उसे फिर जमीन पर रखता और देर तक आराम करता। इस प्रकार उसके नाटकीय हाव-भाव दिखाई देते थे।

मात्तन के नाटकीय हाव-भाव की तरफ मरियम ने बिल्कुल भी ध्यान नहीं दिया। वह अपने काम में एकाग्रचित होकर जुटी हुई थी। उसका जीवन संघर्षमय था और उसके भाग्य का निर्णय उन पहाड़ी खेतों की उपज पर निर्भर था।

मेरिक्कुट्टी जोण को गोद में लेकर पहाड़ी पर चढ़ आई। मां को देखकर बच्चा हाथ आगे फैलाते हुए जोर-जोर से रोने लगा। मरियम ने फावड़ा नीचे रखा और बच्चे की ओर हाथ बढ़ाकर आगे बढ़ी। उसने बच्चे को अपने हाथों में लिया और उसे प्यार से चूमने लगी। फिर वह एक बड़े पत्थर पर बैठ गई और ब्लाउज को कुछ ऊपर करके अपने स्तनों को बाहर निकाला। और बच्चे को दूध पिलाने लगी।

जोण पैर हिलाते दूध पी रहा था। मरियम की नजर जमीन पर लगी हुई थी।

मात्तन ने फावड़ा नीचे रखा और पान की पोटली हाथ में लेकर मरियम के नजदीक ही पत्थर पर आकर बैठ गया।

मात्तन आराम से पान खाने लगा। मात्तन पान का स्वाद ले ही रहा था कि उसे मरियम की आवाज सुनाई दी, "देखो। उस पेड़ को काट देना। जब उसकी जड़ निकलेगी तभी उस जगह की सफाई ठीक से हो सकती है।"

मात्तन ने हां भर दी। मात्तन ने अचानक अपनी आंखों को मरियम की ओर मोड़ा। मरियम उसे बहुत सुंदर दिख रही थी। उसको बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने उसको इतना सुंदर पहले कभी नहीं देखा था। मात्तन ने अपने मन में सोचा।

"मरियम, इतनी जल्दी इतनी सुंदर कैसे हो गई है ?" वह उसे एकटक देखता ही रहा।

मरियम की काली आंखों में उसे अजीब आकर्षण दिखाई पड़ा।

उसकी नजर कभी मरियम के पसीने से तर सुंदर स्तनों पर पड़ती तो कभी उसके गोरे पेट पर।

जब उसने मरियम से शादी की थी तब भी उसने उसे इतना सुंदर कभी नहीं देखा था। एक ओर मात्तन की व्यभिचारी नजर अपनी पत्नी के सुंदर बदन पर टिकी हुई थी, जिससे उसके मन में विभिन्न प्रकार के अरमान पैदा हो रहे थे, तो दूसरी ओर मरियम अपने मन में अपनी जमीन पर सोना उगलने का

दिव्य स्वप्न देख रही थी। लहलहाते कप्पा के बगान, घास के तेल निकालने वाली नली, अनाज से भरे खलिहान आदि के चित्र उसकी काली आंखों में घूम रहे थे।

मात्तन मरियम से सटकर बैठ गया। उसके शरीर से स्पर्श होने पर मात्तन के हृदय में समुद्र की लहरों की तरह कई भाव पैदा होने लगे। इस समय अपनी पत्नी की ओर इतना आकर्षित होने पर उसको यह विश्वास नहीं हो रहा था कि उसका उस औरत के साथ सात साल से शारीरिक संबंध रहा है। मरियम मात्तन के दिल को समझ गई। उसने जैसे ही मात्तन की ओर देखा तो मात्तन लज्जित हो गया। लेकिन उस समय मात्तन की वासनाभरी आंखें और मर्यादा रहित स्पर्श मरियम को भी असीम आनंद देने लगा। उसने अपना ब्लाउज नीचे खींचते हुए अपनी आंतरिक प्रसन्न मुद्रा छिपाने की कोशिश की, लेकिन छिपा न सकी। उसने वासनाभरी मुद्रा में मात्तन पर गुस्सा करने का नाटक किया। "क्यों जी ! लड़कियों को इस तरह घूरकर देखने में शर्म नहीं आती ?" यह उपहास सुनकर मात्तन जोर-जोर से हंसने लगा। उसने हिम्मत के साथ मरियम को अपने बाजुओं में भर कर गले लगा लिया।

मरियम उठकर तुरंत खड़ी हो गई।

"मेरिक्कुट्टी कहां है ?" वह जोर से चिल्लाई, "अरी मेरिक्कुट्टी ?"

मेरिक्कुट्टी आवाज सुनकर पहाड़ी की झाड़ियों में से दौड़कर आई। वह कहने लगी, "मम्मी ! लोग एक लाश को गिरजाघर की तरफ ले जा रहे हैं।"

"क्या, लाश ? कौन मर गया ?"

"मालूम नहीं।"

"मलेरिया से मरा होगा।" मात्तन ने जोर से कहा, "कल भी एक आदमी मलेरिया से मरा है।"

"चलो, घर जाकर हम खाना खाकर फिर आएं।" मरियम उठ खड़ी हुई।

मेरिक्कुट्टी ने जोण को गोद में पकड़ने के लिए अपने हाथ आगे बढ़ाए। मात्तन सिर झुकाकर मरियम के पीछे-पीछे एक मस्त हाथी के समान चलता रहा।

मरियम के पीछे-पीछे चलते समय मात्तन के हृदय में कई विचार उत्पन्न हो रहे थे। मात्तन पहले इस प्रकार कभी नहीं सोचता था। पर अब जीवन की परिस्थितियों में जो परिवर्तन आया। उसी के कारण मात्तन के हृदय में कई नए-नए विचार भी आते रहते हैं। इन नई परिस्थितियों ने उसके हृदय में छिपी भावना को भी जगाया।

असल में वह मरियम से डरता था। उसको यह भी मालूम था कि उसके जीवन की नैया को खेनेवाली मरियम ही है।

मरियम के हठ पर वे लोग मलबार पहुंचे थे। शुरू में मात्तन को मलबार आना बिल्कुल भी पंसद नहीं था, लेकिन उसे मरियम के हठ के सामने झुकना

ही पड़ा और उन्हें मलबार आना ही पड़ा। आज वे मलबार में तीस एकड़ जमीन के मालिक बन गए हैं। और ईसा मसीह का आशीर्वाद होगा तो वे पांच साल के अंदर ही यहां पर एक हजार एकड़ जमीन और खरीद लेंगे। जीवन की आकांक्षाएं बढ़ती ही जा रही थीं। एक समय था जब वे ट्रावनकोर में केवल मरच्चीनी खाकर और गरम पानी पीकर गुजारा करते थे। वह जमाना बीत गया। अब अपने बाग-बगीचे, खेती-बाड़ी तथा बड़ा मकान भी है। एक परिवार का अस्तित्व उभर आया है। लोग कहेंगे—'मात्तन मालिक, कलियनमल्प बगान' के लिए ट्रावनकोर से चिट्ठियां आएंगी। कितने मजे की बात होगी ! यह सब मरियम के प्रयत्नों से ही हुआ है।

यदि वह एक कुत्ता बन सकता तो वह मरियम के पैर जरूर चाटता।

वे पहाड़ी से नीचे आकर घर में पहुंचे और सब लोग भोजन करने बैठे।

भोजन सवेरे का ही बना हुआ था। मरच्चीनी और मछली का स्वाद बहुत ही बढ़िया था।

भोजन के बाद मात्तन ने मेरिक्कुट्टी को बुलाकर कहा, "मेरिक्कुट्टी, तुम मात्तच्चन के घर जाकर कुल्हाड़ी ले आओ।"

मेरिक्कुट्टी गाना गाते हुए दो मील दूर मात्तच्चन की झोंपड़ी की ओर चल पड़ी। मरियम ने बिस्तर फैलाया और जोण को लिटा दिया। वह भी उसी के साथ लेट गई।

बाहर कड़ी धूप थी, लेकिन उस बांस की झोंपड़ी में सुखद ठंड महसूस हो रही थी। बच्चे सो गए। मरियम को सुखद नींद आ गई।

मात्तन उससे सटकर लेटा था और उसके स्पर्श से वह जाग गई। मात्तन के गरम श्वास और अजीब आवाजों से वह समझकर भी नासमझ के समान चुपचाप लेटी रही।

साधारण रूप से मरियम मात्तन को इस तरह की आजादी बहुत कम दिया करती है। कभी-कभी वह अपनी मर्जी से मात्तन को संपर्क सुख दिया करती थी। वह उसके लिए क्षमा के साथ इंतजार किया करता था। जो मिलता वह उससे तृप्त हो जाता था। लेकिन आज बात कुछ और ही है। उनको नए जीवन का स्वाद उन्मत्त होकर आरंभ करना चाहिए। अपनी नई आनंदपूर्ण प्रतीक्षाओं में उसे एक भागीदार चाहिए।

मात्तन ने आज ज्यादा काम किया है, इसलिए चाहे ईनाम के रूप में ही सही, उसको खुश करना चाहिए।

मरियम मात्तन की ओर पलटकर लेटी। उसने मात्तन के बालों से भरे सीने को सहलाना शुरू कर दिया।

नौ

एक महीना बीत गया। वर्की ने अभी तक अपने लिए खरीदी जाने वाली जमीन को नहीं चुना। उसको कोई जल्दी नहीं थी। जब नोटों की गड्डी हाथ में है, तो क्यों जल्दबाजी की जाए ? सबसे अच्छी पहाड़ी जगह चुननी चाहिए। उसके लिए कई उपाय करने पड़ेंगे। समय आने पर सारी चीजें ठीक हो जाएंगी। उसके पहले इस जगह को और यहां के लोगों को ठीक तरह से समझना चाहिए।

वर्की के समान चेरियान भी नई जमीन की खोज करने वाला था। अभी तक करीब पचास एकड़ जमीन चेरियान ने खरीदी है। सौ एकड़ और खरीदने का विचार है। उसके साथ उसके बड़े भाई का बेटा अंतोणी भी है। उसने अपनी खरीदी हुई नई जगह पर एक बांस की झोंपड़ी बनाकर अंतोणी को बसाया है और खुद जाकर जोण की अट्टालिका में रहता है।

चेरूक्काट्टिल वर्की नामक दूसरे व्यक्ति ने जोण को कहा कि उसे जब तक कोई ठीक जगह नहीं मिलती है, तब तक वह अपनी ही अट्टालिका में रहने दे। जोण को पता था कि उसके पास लगभग सात हजार रुपए हैं, इसलिए वह वर्की को अपने पास ठहरने के लिए मना नहीं कर सका।

इस प्रकार वे चारों आदमी अपना समय ताश खेलने, दावत उड़ाने, शिकार खेलने, शराब पीने तथा सोने आदि में आनंद से बिताते थे।

वर्की बिस्तर से लगभग सवेरे ग्यारह बजे उठा। वे रात भर शराब पीते रहे थे। वे प्रायः शराब के साथ सूअर का मांस खाया करते थे। लेकिन कल शहर से उसने छह बोतल 'सौत्ताफ्रिकन' विदेशी दारू और 'टिवफिश' लाया था।

जागने पर भी वर्की बिस्तर पर ही लेटा रहा। उसने धीरे से मेज पर हाथ बढ़ाकर सिगरेट केस लेकर देखा, तो उसमें एक भी सिगरेट नहीं थी। वह किसी प्रकार उठकर बिस्तर पर ही सिर सिरहाने में टिकाकर बैठा रहा।

उसका शरीर बहुत थका हुआ और सिर भारी था। लेकिन पिछले दिन की दावत के बारे में उसे अच्छी तरह याद था। उसे यह भी याद था कि पिछले दिन जब जोण शहर जा रहा था तो शराब और मीट आदि के लिए उसने एक सौ रुपए का नोट जोण को दिया था और जोण ने उसमें से बाकी पैसे वापस नहीं किए थे।

कोई बात नहीं। केवल सौ रुपए की ही बात है न ? दोस्तों को और खुद को कितना आनंद मिला !

बरामदे में किसी के पैरों की आवाज सुनाई दी। वर्की ने खिड़की से झांककर देखा। एक नौजवान एक बनियान पहने हुए था और उसके ऊपर उसने एक

तौलिया ओढ़ा हुआ था। वह बरामदे में खड़ा था।

"कौन है ?" वर्की ने जोर से आवाज दी।

वह आदमी दरवाजे पर आया।

"जोण मालिक यहां नहीं हैं ?"

"मालूम नहीं। शायद बागान को गए होंगे। क्या चाहिए ?"

"ऐसा सुना है कि यहां किसी को जमीन की जरूरत है। मैं पुल्लंकोट नंबियार का मुख्तार हूं।"

"अंदर आइए। सामने की कुर्सी पर बैठिए।"

आगंतुक उस कुर्सी पर बैठ गया।

"मुझे ही जमीन की जरूरत है। आपका जंगल कहां है ?" वर्की ने उससे पूछा।

"यहां से चार मील दूर है। हम आज ही जाकर देख सकते हैं।"

"आज मुझे सुविधा नहीं है। कल जाएंगे, एक एकड़ की कीमत अनुमानित रूप से कितनी होगी ?"

"कीमत के संबंध में कोई ऐसी दिक्कत नहीं, पहले आप जमीन तो देख लें। जमीन का भाव उसके उपजाऊपन पर निर्भर करता है। वैसे वह जमीन न तो घने जंगलों से ही घिरी है और न पथरीली ही है। वह जमीन तराई में है और उस पर पहले खेती हुआ करती थी, लेकिन इस समय बंजर पड़ी है।"

"वहां साल में एक बार खेती होती थी। बहुत से लोगों की नजर उस पर पड़ी है जो उस खेत को खरीदना चाहते हैं। मालिक की इच्छा है जिसको बेच दे। चाहे साधारण गरीब आदमी ही क्यों न हो। इसी बीच जोण मालिक ने यह खबर दी है।"

"आपका नाम ?"

"ओतेनक्कुरुप्प।"

"ठीक है। आप कल सुबह यहां आएं और हम दोनों वहां जाकर उस जमीन को देख लें।"

"ठीक है। मैं कल सुबह आपके पास आऊंगा। एक बात और याद रखिए कि यहां पर, आजकल कई ऐसे लोग भी आपको मिलेंगे जो अपने आपको किसी जमींदार का मुख्तार या एजेंट बताएंगे। वे बड़े धोखेबाज हैं। वे जो जमीन दिखाएंगे, उसका आपको कभी कब्जा नहीं मिलेगा और जो रुपए आप उनके पास फंसाएंगे वह भी आपको वापस नहीं मिल सकेगा।"

"क्या ऐसी भी बात है ? क्या यहां पर ऐसे भी लोग रहते हैं ?"

"आजकल यहां ऐसे लोग बहुत हैं।"

"तब तो ठीक है, मैं पहले कुछ ऐसे ही लोगों से मिलना चाहता हूं। हमें

सबसे पहले उनको मलबार से भगाना होगा, तभी यहां के लोग सुख और शांति से रह सकेंगे।"

नौकर तोम्मन ने चाय लाकर मेज पर रख दी। वर्की ने चाय पीते हुए धीरे से कहा, "इन लोगों को तिरुवितांकूर के लोगों के बारे में पता नहीं है। जिन ईसाई लोगों ने तिरुवितांकूर के महाराजा के विरुद्ध गृह-युद्ध छेड़कर उसे भी परेशान कर दिया, वे हमारे सामने क्या हैं ? उन्होंने अभी तक हमारा असली रूप नहीं देखा है। जब वे हमारा असली रूप देख लेंगे तो हमारे सामने नहीं टिक सकेंगे।"

मुख्तार ओतेनक्कुरुप्प ने उन्हें धन्यवाद दिया और चलने के लिए उठ खड़ा हुआ।

"तो कल सुबह मिलेंगे। हां, आपने अपना नाम क्या बताया ?"

"ओतेनक्कुरुप्प।"

"अच्छा, कुरुप्प जी, ठीक है। यदि आपको कोई ठग एजेंट मिले तो उसे हमारे पास भेज देंगे। सुना ?"

"ठीक है जी।"

मुख्तार हंसते हुए छाता हाथ में लेकर चल पड़ा।

दस

कुषि माडत्तिल औसेप तिरुवितांकूर के कांजिरपल्लि गांव से आया था। वह पंद्रह दिन पहले अपनी पत्नी तथा चार बच्चों के साथ मलबार आया। वह अपने साथ एक बैलगाड़ी भी लाया जिसमें उसका घरेलू सामान भी था। वह अपने साथ साढ़े तीन हजार रुपए भी साथ लाया था।

दूसरे दिन से ही वह जमीन की तलाश करने लगा। आखिर किसी ने उसका पालकोट जमींदार के मुख्तार रामकिटाव से परिचय कराया।

किटाव औसेप को अपने साथ लेकर पहाड़ियों पर बिकने वाली जमीन को दिखा रहा था।

सुबह-सबेरे का कोहरा पहाड़ी की तराइयों में धीरे-धीरे उतर रहा था। प्रभातकालीन सूर्य किरणों से हरे-भरे जंगल साफ-साफ दिखाई देने लगे।

किटाव एक बड़ी चट्टान पर चढ़कर अपनी लाठी के इशारे से पूर्व वाली जमीन को दिखा रहा था।

"यह सब जमीन बिकाऊ है।"

वहां जंगल ही जंगल देखकर औसेप आश्चर्यचकित हो गया।

"अपनी इच्छा से जितनी मरजी जमीन काट लो।"

औसेप खड़े-खड़े चुपचाप उसकी बातों को सुनता रहा और उस जंगल को देखता रहा। उसको आश्चर्यचकित करने वाली बात उस जंगल की बाहरी सुंदरता नहीं थी, बल्कि उसकी असीमिता थी। यह जंगल कुर्ग की पहाड़ियों तक फैला हुआ था। अभी तक न तो किसी ने उसे नापा है और न ही उस पर किसी ने खेती की है। अभी तक उस जमीन का सरकारी सर्वे भी नहीं हुआ। यह अछूती जमीन है।

इतनी दूर-दूर तक फैली जमीन को देखकर औसेप का हृदय भावावेश में झूम उठा। उसके मन में ऐसा सुंदर चित्र उभरकर आया जिसमें वहां की सारी जमीन पर धान की खेती लहलहा रही थी। मरच्चीनी की सुगंध चारों तरफ फैल रही थी।

वहां की पवित्र धरती पर कभी अनाज के बीज का स्पर्श तक नहीं हुआ था। वह उस पर पूरी तरह आसक्त हो गया।

औसेप ने झुककर जमीन खोदकर एक मुट्ठी मिट्टी हाथ में ली। कितनी निराली मिट्टी है यह ! एकदम उपजाऊ मिट्टी। सदियों से पेड़-पौधों के पत्ते और डालियां गिरकर यहां सड़ी, मिट्टी खाद बन गई। पहाड़ियों से बह-बहकर लाए लवणों से मिली हुई, प्रकृति और काल के प्रयोगों से उर्वर, उपजाऊ और महंगी मिट्टी है। इस जमीन को नापकर, नहीं, बल्कि वजन करके भाव करना चाहिए।

"एक एकड़ का भाव कितना होगा ?" औसेप ने गद्गद् स्वर में पूछा।

किटाव ने अपनी लाठी जमीन पर टिका दी।

"तुम कितने एकड़ खरीदोगे ?"

"वह तुम्हारे दाम के अनुसार ही होगा।"

"एक एकड़ का भाव नौ रुपए आएगा। उसके अलावा ये सौदा कराने के लिए मुझे जो मिलना है वह अलग है।"

औसेप ने हिसाब लगाया। अब हाथ में 3200 रुपए हैं। 200 एकड़ खरीदी जाए तो जमीन की कीमत 1800 रुपए, कचहरी खर्चा 200 रुपए, दूसरा खर्चा 800 रुपए, खेती खर्चा 500 रुपए। एक साल खाने पीने के लिए बचे रुपए काफी हैं। अगले साल से खेती की आमदनी होने लगेगी।

"अभी मुझे 200 एकड़ चाहिए।" औसेप ने जोर से कहा।

'दस साल के भीतर यह सब जगह मेरे कब्जे में हो जाएगी।' उसने मन में सोचा।

कि'''ाव ने सिर हिलाया, "सब ठीक कर दूंगा। कल शाम को दो मुट्ठी पान, एक मुट्ठी अच्छा तंबाकू और दो बोतल देशी शराब खरीदकर मालिक के घर

में आ जाना। मैं उस समय वहीं रहूंगा।"

औसेप ने स्वीकार किया। दोनों मिलकर उस पहाड़ी प्रदेश में बहुत देर तक घूमते रहे। अपनी जमीन को चुनने में औसेप ने अपनी बुद्धि का प्रयोग किया। आखिर दो पहाड़ियों के बीच का समतल स्थान उसने चुन ही लिया।

"बहुत अच्छी जमीन चुनी आपने," मुख्तार ने हंसते हुए कहा, "अगर पत्थर बोएगा तो भी फसल पैदा होगी। नीचे एक झरना भी है, अब जल्दी यहां एक झोंपड़ी बनाने का प्रबंध कीजिए।"

किटाव पुनः खेती देखने पूर्व की ओर चल पड़ा। औसेप विजय और हर्ष के साथ पश्चिम दिशा में अपनी झोंपड़ी की ओर चल पड़ा। तराई से जो मिट्टी उसने ली थी, वह अब भी उसके हाथ में थी।

ग्यारह

कलियनपारा पहाड़ी पर मरियम अपने खेतों में काम करते हुए कभी भी दूर से देखी जा सकती थी।

वह सूरज निकलने से पहले ही खाना तैयार कर देती थी, बच्चे को दूध पिला देती थी और पिता के पास सुलाकर आंगन से कुदाल कंधे पर उठाकर एक फौजी के समान काम पर निकल पड़ती थी। कुदाल चलाना, घास खोदना, पेड़ों की जड़ें उखाड़ना आदि काम करते हुए शरीर पसीने से तर-बतर होने पर भी वह थकती नहीं थी वह फिर भी काम करती रहती। लगभग दस बजे तक मात्तन भी वहां पहुंच जाता था। दोपहर में वे काम रोक कर खाना खाने के लिए घर को लौटते। भोजन के बाद आधे घंटे तक आराम करते और फिर पुनः काम पर निकल पड़ते।

घना अंधेरा होने तक मरियम अपने खेतों में काम करती थी। इस प्रकार जंगल धीरे-धीरे साफ होने लगे।

कुछ दिन के बाद मात्तन को अपनी जन्मजात बीमारी सुस्ती होने लगी। वह कई दिन तो आधे दिन के बाद काम पर ही नहीं जाता था और घर में ही रह जाता था। कभी-कभी वह फ्रेंच लीव मार जाता और काम पर बिल्कुल ही नहीं जाता था। कुछ किए बिना सिर झुकाकर एक निर्विकल्प समाधि की तरह दिन भर एक ही जगह बैठना उसके लिए जीवन का सबसे बड़ा सुख था।

मात्तन चाहे काम करे या न करे, लेकिन उसको मरियम के पास रहने से एक स्फूर्ति मिलती थी। मात्तन के खेतों में न आने पर उसको निराशा तो

होती ही थी, गुस्सा भी आता था। उसने मात्तन को कहा कि वह कल से सेवरे ही खाना खाकर उसके साथ चले। मात्तन कभी भी सवेरे नहीं उठता। और वह जल्दी जाग भी जाता था तो ऐसा लगता था कि उसकी नींद पूरी नहीं हुई है, और सुस्त रहता था। मरियम को उसकी चालाकी अच्छी तरह मालूम थी। यदि वह नहीं उठता तो मरियम उसके कान में पत्ती डाला करती थी या बाल नोचती थी। कभी-कभी उसकी नाक में तंबाकू का चूरा सुंघा देती। इस तरह किसी न किसी प्रकार उसको जगाकर वह पहाड़ी पर ले तो जाती, लेकिन मात्तन को चाणक्य से भी ज्यादा नफरत घास से थी।

मरियम हर दिन के समान घास काट रही थी। इतने में उसने नीचे की जमीन की ओर देखा। उसने अपने आप से कहा, "एक हफ्ते के भीतर बाकी भाग भी साफ हो जाएगा।"

"हे ईश्वर ! हे ईसा मसीह" मात्तन जोर-जोर से रो रहा था। मरियम ने उसकी ओर देखा तो वह जमीन पर पड़ा हुआ था।

मरियम फावड़ा फेंककर उसकी ओर दौड़ पड़ी। मात्तन दोनों हाथों से पांव पकड़कर रो रहा था।

"बाप रे बाप ! मेरा पैर कट गया। मैं मर रहा हूं।"

मात्तन के पांव से खून बह रहा था। फावड़ा पांव पर लग गया था। पर घाव इतना गहरा नहीं था। मात्तन बहुत तड़प रहा था और ऐसे रो रहा था जैसे कि उसका पैर कट ही गया हो।

मरियम ने मात्तन को उठाकर एक पत्थर पर बिठा दिया। उसके पांव पर दवाई के रूप में कुछ जड़ी-बूटी रगड़कर लगाई और ऊपर से पट्टी बांध दी। वह उसके बाद मात्तन को घर ले गई। उसने उसे घर ले जाकर लिटा दिया और स्वयं वापस काम पर चली गई।

'उसने जानबूझ कर पैर काट दिया होगा, कामचोर जो है।' मरियम ने अपने आप से कहा, 'तो भी मरियम काम से नहीं हारेगी।'

बारह

मिट्टी, केवल मिट्टी। यह मिट्टी कितनी कीमती है ! इस मिट्टी से मनुष्य की सारी मूलभूत जरूरतें पूरी हो जाती हैं। हम यह भी कह सकते हैं कि यह मिट्टी ही मनुष्यत्व का आधारभूत अंश है।

मनुष्य इस मिट्टी के अंश के रूप में जन्म लेता है। मिट्टी में ही जीवित

रहता है और अंत में इसी मिट्टी में विलीन हो जाता है।

इस मिट्टी के लिए ही खूनखराबा, झगड़े और लड़ाइयां होती हैं। विश्व के महाकाव्यों में इस मिट्टी के लिए खूनखराबे के वर्णन भरे पड़े हैं।

मरियम ने एक मुट्ठी जंगली ताजा मिट्टी हाथ में उठाई। उसके एक-एक कण में जीवन की अनेक तरंगों को सुसुप्तावस्था में देखा। उस औरत की आकांक्षाएं उस जंगली मिट्टी में छिपी पड़ी हैं। उसका खून-पसीना, तड़प और आह उस मिट्टी से लिप्त है।

मरियम ने जो जमीन खोदी थी, वह धूप लगने से पीली होकर चमक रही थी। वह यह सोच रही थी कि कुछ दिनों के बाद जब बारिश आएगी तो उस मिट्टी में जो अनाज उगेगा वह खुशहाली का संदेश लाएगा। जिस प्रकार हजारों बीज फूटकर अंकुर के रूप में इस पृथ्वी पर अपनी छटा दिखाते हैं, उसी प्रकार मरियम के हृदय में भी सोना रूपी फसल के बारे में, विभिन्न प्रकार के अरमानों के अंकुर फूट रहे थे। हवा, पानी और धूप के स्पर्श में वे अंकुर बढ़ रहे थे, जो सोने के रूप में परिवर्तित होने वाले थे।

उस पहाड़ी के ऊपर बहुत सारी जमीन पर खेती होती थी और वह खेती लायक भी थी। वह दो दिनों में उसे भी ठीक कर देगी। वह उस पहाड़ी में सबसे ऊपर जाकर अपनी सारी जमीन को देखने लगी। उसने दोनों हाथों से अपना सिर पकड़ा और रोने लगी, "हे ईश्वर ! हे ईसा मसीह ! शैतान ने हमारे साथ धोखा किया है।"

सारी खोदी हुई जमीन पर दुबारा ताजा घास उग आई है।

मरियम निराश नहीं हुई। दूसरे दिन बड़े सवेरे ही फावड़ा, कुदाल आदि लेकर वह पहाड़ी की ओर चल पड़ी।

उसे दुबारा काम करना पड़ रहा है। इसके अलावा कोई चारा ही नहीं। वह उस आसुरी घास का सर्वनाश करके ही सांस लेगी। उसने ताजी घास की एक-एक जड़ को उखाड़ फेंका। उसने उस घास को उखाड़ा और उसमें आग लगा दी। इस तरह पंद्रह दिन तक अथक परिश्रम करने के बाद उसने अपनी पूरी जमीन को साफ कर दिया।

अब खेती शुरू करने में कोई बाधा नहीं हो सकती। यदि एक-दो बार बारिश हो जाएगी तो बहुत अच्छा रहेगा।

कई दिन हो गए, मात्तन अब भी बिस्तर पर पड़ा हुआ है। यद्यपि उसका घाव बिल्कुल सूख गया है, लेकिन फिर भी वह बहुत दर्द होने का बहाना करता था। छोटे बच्चे को पिता के पास सुलाकर मरियम रोज काम करने चली जाती थी। घर का सारा काम करने के बाद मेरिक्कुट्टी भी उसकी सहायता के लिए खेत में पहुंच जाती थी। शाम को ही वे दोनों वापस आती थी। वापस आते

समय मरियम जलाने के लिए लकड़ी का गट्ठर भी सिर पर साथ लाती थी। छुरी, फावड़ा आदि मेरिक्कुट्टी लाती थी।

घर पहुंचने के बाद वह मात्तन से खेती के भावी कार्यक्रम के बारे में चर्चा करती थी। 'पूर्व दिशा में मरच्चीनी उगाएंगे।'

'हां' मात्तन ने लेटे-लेटे अपनी सहमति दी।

"पोत्तच्चन ने कहा था कि वह अच्छे किस्म की मरच्चीनी दे देंगे।"

"हां,ठीक है।"

"कुंजिमायन के पास मूंग का बीज है। एक सेर आठ आने में मिलेगा।"

"अच्छा।"

"खेत में अदरख, हल्दी आदि भी लगाकर देखेंगे। खेत बहुत बड़ा है न ? पोत्तच्चन के खेत का करेला देखा ? कितना बड़ा है ! उससे बीज मांगने हैं। वहां अरबी भी बहुत हैं।

"एलियाम्मा ने थोड़ी-सी अरबी पकाकर खाने को दी है। हां, कितनी स्वादिष्ट थी, जैसे मक्खन होती है। केलों के बीच अरबी लगानी है। कंजिमायन के पास मिर्च के बीज भी हैं। उसकी भी खेती करनी है।"

मात्तन मरियम की हर बात में 'हां' कहता था।

उसके पास कोई नई सलाह या राय देने के लिए नहीं थी।

मेरिक्कुट्टी ! तू टोकरी लेकर जा और खेतों से गोबर इकट्ठा करके ले आ। उसने बेटी को निर्देश दिया।

मेरिक्कुट्टी ने नारियल के पत्तों से खेलने के लिए एक थैला बनाया। माताजी की बात सुनकर वह नारियल के पत्तों से बनाया हुआ थैला लेकर खेतों की तरफ गोबर के उपले बटोरने के लिए चली गई। आग जलाने के लिए उपले बटोरना मेरिक्कुट्टी का काम था।

तेरह

दो महीने बाद चेरियान ने कुछ और खेत खरीदे। उसने जो खेत खरीदे उसमें जंगल तो नहीं थे, लेकिन घने जंगल के समान बीहड़ और सुनसान प्रदेश अवश्य था।

टिप्पू के आक्रमण के पहले सार्थक संघ उसी स्थान से कुर्ग तक गुजरा करता था। उस जंगली रास्ते से गुजरने वाले मुसाफिरों के लिए धर्मशालाएं भी बनाई गई थीं। ऐसी ही एक धर्मशाला का खंडर चेरियान के खेत के पास था।

धर्मशाला का अधिकांश भाग टूटा हुआ था। लेकिन रास्ते के दोनों ओर के पेड़ अब भी उसी तरह खड़े हैं। उन पेड़ों के पीछे एक मंदिर भी टूटा पड़ा था। मंदिर की दीवारें टूटकर गिर गई थीं। उसके नीचे मूर्ति और दीपस्तंभ आदि दबे पड़े हैं। वहां कोई भी जाकर देखने की हिम्मत नहीं करता था। वहां वासुकी से भी बड़े सांपों के झुंड हैं, ऐसा लोगों का विश्वास है। डिप्पू के आक्रमण के पहले वहां ब्राह्मणों के कई घर थे लेकिन आक्रमण के साथ कई लोग वहां से भाग गए थे। बाकी लोगों को मुसलमान सेना ने कत्ल कर दिया। वहां के कुंओं में ब्राह्मण लोगों ने भागते समय सोना जवाहरात इत्यादि डाल दिया था। उस प्रदेश के लोगों को उस तरफ जाने में दिन में भी डर लगता था।

उसके पूर्व में एक ऊंची पहाड़ी थी। उस पहाड़ी की तराई में एक विशाल खेत था। उस खेत को खरीदकर चेरियान ने उसी मंदिर के पास एक छोटा सा मकान बनाया, जिसमें वह अकेला ही रहने लगा। मंदिर से ही कुछ लकड़ी और ईंट-पत्थर इत्यादि उखाड़कर उसने वह मकान बनवाया है।

उस स्थान से चार मील दूरी पर तोंडियन पहाड़ी की तरफ दूसरी तरफ के खेतों में खेती होती थी, जिसकी देखभाल के लिए उसने अंतोणी को रखा था। चेरियान अंतोणी के पास हफ्ते में एक बार जाया करता था। वह उसको मजदूरों की मजदूरी और खेती के बारे में कुछ सलाह देकर उसी समय वापस चला आया करता था।

चेरियान का कोई भी खास दोस्त नहीं था। लेकिन कभी-कभी वह जोण के बंगले में ताश खेलने जाया करता था।

चौदह

पहाड़ियों और झाड़ियों के ऊपर जो नीले रंग का आसमान था वह अब कुछ धुंधला हो गया था तथा जहां-तहां बादल दिखाई देते थे।

आसमान का वह धुंधलापन कुछ दिनों तक चलता रहा। लेकिन अंत में वे बादल लड़ाई की गर्जना की तरह गरजने लगे।

हवा पेड़ों को नचाने लगी। हवा के साथ-साथ मूसलाधार वर्षा शुरू हो गई। धूप की गर्मी से सूखी हुई पहाड़ियां अब एकदम ठंडी हो गई। सूखे खेतों और झरनों में बारिश ने जादू का काम किया। पहाड़ियों से पानी अपने साथ खाद, धातु और पत्तों के टुकड़े आदि लेकर बहते हुए तराई के खेतों में भर गया था, जिसका रंग लाल हो गया था।

काले बादलों से ढके आसमान से बराबर पानी बरसता रहा। उस समय कोई भी प्राणी बाहर दिखाई नहीं दे रहा था। जंगली जानवर भी पहाड़ी गुफाओं के भीतर, चिड़ियां पेड़ों के कोटरों या घने पत्तों के भीतर छिप गईं थीं। जब हवा जोर-जोर से चलती तो छोटी-छोटी चिड़ियां हवा के झोंकों में इधर-उधर उड़तीं और फिर पहले की जगह पर आ बैठतीं। इस तरह एक ओर प्रकृति अपने कार्यक्रम के खेल जारी रखी हुई थी तो दूसरी ओर, मनुष्य बारिश के समाप्त होने का इंतजार कर रहे थे ताकि वे अपने-अपने कामों पर जा सकें।

मरियम मन ही मन बहुत खुश हो रही थी, क्योंकि जो जमीन उसने खोदी थी उसमें पानी बरस रहा था। अब वह जमीन बुवाई के लिए तैयार हो गई थी। पानी बरसने से मिट्टी का रंग सोने की तरह लाल हो गया था। उस मिट्टी से एक अजीब सी मादक सुगंध हवा में फैलने लगी।

बारिश रुकते ही मरियम ने दूसरे दिन सुबह-सुबह खेतों में जाकर बुवाई शुरू कर दी।

बीज बोने, कलम लगाने, क्यारी बनाने, मेंड़ बनाने, खाद डालने, नाली बनाने, गड्ढों को मिट्टी से ढकने आदि की कला में वह पूरी तरह निपुण थी और उसने उस पहाड़ी प्रदेश को एक चित्रशाला बना दिया था। यद्यपि खेतों की रूपरेखा ठीक नहीं थी, मेंड़ भी ऊंची-नीची थी—नालियां भी टेढ़ी-मेढ़ी थीं, फिर भी कुल मिलाकर वह चित्रण निराला ही था। उसने बड़े कल्पना चातुर्य से काम किया था जो एक सामान्य व्यक्ति की समझ से परे थी।

फावड़े को हाथों से पकड़ते हुए सिर झुकाकर मरियम उस चित्रकला को देखती। उसे देखकर उसका मन तो खुश होता ही, वह उसमें से कुछ न कुछ कमी ढूंढ ही लेती। वह कभी किसी मेंड़ को चौड़ा करती तो कभी किसी क्यारी का व्यास कम करती।

जोरदार बारिश ने कई मेंड़ों को तोड़ दिया था। पहाड़ी से बहते हुए पानी ने कई क्यारियों को गायब ही कर दिया था। बारिश बंद होने के बाद मरियम ने दुबारा उन क्यारियों को फिर से तैयार किया। कभी-कभी सिर पर धोती बांधकर बारिश में भी वह काम करती थी।

जब बारिश कुछ देर के लिए रुक जाती थी तो उस समय वहां मेंढ़कों, केंचुओं और पहाड़ी झींगुरों की आवाजें सुनाई पड़तीं। रात को जुगनुओं की टिमटिमाती रोशनी दिखाई देती। सोने के रंग के बिजली के बल्बों से जंगल ऐसे चमकता जैसे एक अंधेरा कमरा रोशनी से चमकने लगता। झींगुरों की आवाज इतनी तेज सुनाई पड़ती थी, मानो पर्दे के पीछे से डायनुमा की आवाज आ रही हो।

प्रकृति सहस्र कुंभाभिषेक के लिए बाजा बजाते हुए दीपोत्सव के साथ ऋषि

देवता का स्वागत कर रही हो।

उस त्योहार को देखकर पानी से भीगी हुई मरियम फावड़ा कंधे पर रखकर जब अपनी झोंपड़ी की ओर आती थी, तो उसके स्वागत के लिए मेरिक्कुट्टी और जोणी दौड़कर आते थे।

वह कपड़े बदलकर, जोणी कुट्टी को दूध पिलाकर जब आग सेंकती तो उस समय भी उसके मन में अपने खेतों के प्रति विचार उठते रहते।

मात्तन अपनी निर्विकल्प समाधि में डूबे हुए एक कोने में चुपचाप बैठा रहता था।

रात में जोरदार बारिश होने के कारण झोंपड़ी के भीतर की स्थिति बहुत दयनीय हो गई थी। हर एक कोने में बांस और पेड़ों की डालियां खड़ी करके ताड़ के पत्तों की चटाई से चारों तरफ ढककर, ऊपर घास और पत्तों की छप्पड़ देकर झोंपड़ी बनाई गई थी। उस कमजोर झोंपड़ी में तेज हवा और जोरदार बारिश का सामना करने की शक्ति नहीं थी। बारिश का पानी छेदों से टपकने के कारण चटाई, बिस्तर और कपड़े सब भीग गए थे। सब जगहों से पानी अंदर टपक रहा था। मरियम ने ताड़ के पत्ते और चटाई के टुकड़ों से छप्पड़ की मरम्मत करने की भरसक कोशिश की।

उसने घुंइयां का एक बड़ा पत्ता सिर के ऊपर पकड़कर जोणी को गोद में कपड़ों के अंदर छिपा लिया। मेरिक्कुट्टी एक कोने में बैठी गुनगुना रही थी।

पंद्रह

पोल को उस प्रदेश में आए केवल पंद्रह दिन ही हुए। लेकिन इतने कम समय में उसकी प्रसिद्धि चारों तरफ फैल गई थी। पोल एक राजकुमार जैसा जीवन बिता रहा था।

पालंगकोट जमींदार का मुख्तार रामकिटाव पोल को लेकर अपने मालिक के पास आया।

पालंगकोट परिवार एक पुरानी अट्टालिका में रहता है। पुरानी दीवारों से चूना गायब हो गया था। बरामदे सब टूटे-फूटे पड़े थे। आंगन में कई सालों से घास उग रही थी। कुल मिलाकर ऐसा मालूम पड़ता था कि कई सालों से वहां कोई नहीं रहता। वह अट्टालिका एक गंदी सी इमारत दिखाई दे रही थी। दरअसल वह अट्टालिका उस प्रदेश के सबसे बड़े जमीदारों में से एक का अपना निवास-स्थान थी।

बुजुर्ग कुंजिरामकुरुप्प बरामदे के एक कोने में एक बड़े तख्ते पर बैठकर मंजन कर रहे थे। उसी दौरान उन्होंने पोल और रामकिटाव को अंदर आते हुए देखा।

पोल को बरामदे में चढ़ने की हिम्मत नहीं पड़ रही थी। वह आंगन के किनारे ही खड़ा हो गया।

'वहां बैठेंगे। बुजुर्ग ने हाथ में आम के पत्ते से बरामदे में पड़ी आरामकुर्सी की ओर इशारा किया। फिर उसी आम के पत्ते को चबाने लगा।

पोल उस कुर्सी पर बैठकर चारों तरफ देखने लगा। उसके मन में वहां की गंदगी के प्रति घृणा हुई।

मंजन करते हुए वह बुजुर्ग भी तिरछी आंखों से उस नौजवान के चेहरे पर उभरते हुए भावों को समझ रहा था। वह नौजवान सुंदर और सुशील था। उसने अपने चमकते हुए गालों पर क्यूटिक्यूरा पाउडर लगाया हुआ था। उसके घुंघराले बाल कंघी करके अच्छी तरह संवरे हुए थे। उसके चश्मे की डंडी सोने की थी। होठों के ऊपर मूंछों के बाल काले रेशम के सूत के समान थे। बहुत मुलायम रेशमी कुर्ते के भीतर उसकी सैंडो बनियान की जाली बाहर से चमक रही थी। गले में पहनी हुई सोने की जंजीर बहुत सुंदर लग रही थी। हाथ की बाईं कलाई में सोने की एक छोटी सी घड़ी चेन से बंधी थी। हाथ की उंगलियों में हीरा जवाहरात जड़ी अंगूठियां चमक रही थीं। उसकी रेशम की दोहरी धोती तथा जरीदार रेशम का अंगोछा और काले जूते चमक रहे थे।

बुजुर्ग का मंजन करना कुछ देर तक जारी रहा।

पोल ने बेचैनी से चारों तरफ देखा। उसकी आंखें अखबार ढूंढ रही थीं। लेकिन उसे कोई अखबार नहीं दिखाई दिया। उसने अपनी एक जेब से सोने के रंग की एक डिबिया निकाली। उसमें से एक सिगरेट निकाली और दूसरी जेब से अमेरिकन लाइटर निकालकर सिगरेट जलाई और पीते हुए, हवा में धुएं के गोले बनाकर छोड़ने लगा।

मंजन करने के बाद वह बुजुर्ग बरामदे में आए।

मुख्तार रामकिटाव ने पोल से परिचय कराया।

"पोल मालिक कुछ जमीन खरीदना चाहते हैं। मालिक से जमीन खरीदने के लिए आए हैं।"

बुजुर्ग गंभीरता के साथ आरामकुर्सी पर बैठ गए।

पोल ने उस जमींदार को डर और आदर के साथ देखा। वह लगभग साठ-पैंसठ साल का था। मुंह पर एक अपूर्व रोशनी थी। उसके सीने पर बालों का जाल था तथा नाक एकदम बड़ी थी।

"तुम्हें कितने एकड़ जमीन की जरूरत है ?"

"फिलहाल चार सौ एकड़ खरीदना चाहता हूं।"

"ठीक है। इतनी मिल जाएगी।"

"जमीन का भाव क्या है ?" पोल ने मुस्कुराते हुए पूछा।

"तुम्हें मालूम ही होगा कि जमीन की कीमत दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है। दस रुपए एकड़ के भाव से मिलेगी।"

"यह तो बहुत ज्यादा है।"

"रामकिटाव ने मुझसे कहा था कि वह मुझे आठ रुपए के भाव में दिलवा देगा। इसीलिए मैं उनके साथ यहां आया हूं।"

"क्यों रामकिटाव, तुमने इन्हें यही भाव बताया था। ?" बुजुर्ग ने मुख्तार की ओर देखा।

"मैंने केवल इतना कहा कि अभी तक आठ रुपए के भाव में ही देते रहे हैं। और सब लोगों को यह भी मालूम है कि जमीन का भाव दिन-ब-दिन बढ़ रहा है।"

रामकिटाव माफी के स्वर में रुक-रुककर बोल रहा था।

"ठीक। यदि इन्होंने ऐसा कहा है तो मैं उसी भाव से देता हूं। चार सौ एकड़ जमीन की कीमत तीन हजार दो सौ रुपए होंगे तथा कचहरी का खर्चा तीन सौ। कुल मिलाकर तीन हजार पांच सौ होता है। रुपए लाए हो ?"

"जी हां।"

"अच्छा, मैं तुम्हें एक सलाह और देता हूं। मैं चाहता हूं कि अपने आदमी होने के कारण तुम्हें और फायदा पहुंचा दूं। मैं तुम्हें पांच सौ एकड़, इतनी ही रकम में दे देता हूं। उसे छह रुपए एकड़ के भाव से समझना।"

पोल की समझ में यह बात नहीं आई। पोल ने नाक पर से अपना चश्मा उतारा और कुर्ते के कोने से मुंह पोछकर बुजुर्ग की ओर ताकने लगा।

"मिस्टर, मैंने जो बात कही है, वह समझ में अभी तक नहीं आई ? मैंने ऐसा सोचा कि तुम्हारे तीन हजार पांच सौ रुपए के बदले में पांच सौ एकड़ जमीन दे दूं। छह रुपए के भाव से पांच सौ एकड़ की कीमत तीन हजार रुपए तथा कचहरी का खर्चा पांच सौ। कुल मिलाकर तीन हजार पांच सौ। अब तो मेरी बात तुम्हारी समझ में आ गई ?"

बुजुर्ग के दांत जैसे सुपारी के टुकड़ों के समान थे। वह उन दांतों को दिखाते हुए पहली बार पोल के सामने हंसा।

पोल कुछ देर तक सोचता रहा। उनकी बात को स्वीकार करते हुए धन्यवाद दिया।

मुख्तार रामकिटाव अचंभे में पड़ गया था।

बुजुर्ग व्याख्यान देने लगे—यहां की बेकार जमीन को उपजाऊ बनाना है।

तुम लोग बहुत दूर से यहां आए हो। हम समझते हैं कि तुम लोगों को प्रोत्साहित करना हमारा परम कर्तव्य है। तुम लोग बहुत मेहनती हो। जंगलों को काटकर खूब खेती करो। इस प्रदेश को आगे बढ़ाओ। अगर कोई कष्ट होता है तो फौरन हमारे पास आकर बताओ ?

"तुम्हारा गांव कहां है ?"

"मध्य तिरुवितांकूर में कूत्ताट्टुकुलम।" पोल ने विनम्र होकर बताया।

"तुम्हारे साथ कौन-कौन है।"

"यहां मेरे साथ कोई नहीं है। मैं अकेला हूं। मेरे चार बड़े भाई और चाचा घर में हैं।"

"ठीक है, हम तुम्हारे पांचवें भाई हैं। इस प्रदेश को अपना ही समझो।"

"मालिक के उपदेश और आशीर्वाद के लिए मैं हमेशा आभारी रहूंगा।"

"ठीक है। अब तुम जा सकते हो। भगवान तुम्हारा भला करे। अगले सोमवार को जमीन की रजिस्ट्री कराएंगे। रुपए लेकर उस दिन रजिस्ट्रेशन आफिस में आ जाना। रजिस्ट्री इत्यादि रामकिटाव लिखकर दे देगा।"

पोल विदाई लेकर चला गया। फौरन रामकिटाव अपने मालिक के सामने आया और विनम्र भाव से पूछने लगा-

"आपकी बुद्धि सही है ? उस चेट्टन को एक सौ एकड़ जमीन मुफ्त में कैसे दे दी ? आपने ऐसा क्यों किया ?"

बुजुर्ग जोर-जोर से हंसते हुए बोले-

"रामा ! इसका जवाब मैं इस समय नहीं दूंगा। दो साल के बाद तुम्हें इसका उत्तर अपने आप मिल जाएगा।... पान ले आओ।"

सोलह

मरियम के मरच्चीनी की कलमों पर अंकुर आने लगे। मूंग भी उग आई।

आजकल मरियम तराई वाले खेतों में काम कर रही है। खेत में बोए धान के पौधे उग आए हैं। वह सोच रही है कि खेत के चारों ओर बाड़ लगानी है, नहीं तो जानवर खेती को खराब कर देंगे। एक ही दिन में पूरी की पूरी बाड़ लगानी होगी।

वह आठ आने दिन की मजदूरी पर दो मजदूरों को बुला लाई। मजदूर सुस्त थे, इसलिए उन्हें देखकर उसको गुस्सा आया। उसने मात्तन को बुलाया। यद्यपि मात्तन के पैर का घाव एक महीने पहले ही सूख गया था। फिर भी उसने

पैर की पट्टी अभी तक नहीं खोली थी। उसने पैर में पट्टी इस कलाकारी से बांध रखी है, जैसे कोई आभूषण पहन रखा हो।

मात्तन लंगड़ाते हुए मरियम के पास आया और मुंह खोलकर उसकी ओर ताकने लगा।

"वे चोर मजदूर वहां सुस्त खड़े हैं। वहां जाकर उनसे खूब काम कराओ। तब तक मैं इस दीवार को बनाती हूं।" मरियम ने काम करते हुए कहा।

मात्तन मजदूरों के पास पहुंचा। इस प्रकार वहां तीन सुस्त लोग इकट्ठे हो गए।

मरियम खेत और पहाड़ी के बीच पत्थरों से एक दीवार बना रही थी। मेरिक्कुट्टी खेत में से अच्छी चिकनी कीचड़ टोकरी में ला-लाकर पत्थरों के बीच डालती जा रही थी।

उस खेत के पूर्व-दक्षिण कोने से एक पगडंडी जाती थी। वहां असाधारण शोर गुल सुनकर मरियम उस तरफ देखने लगी। वह नए लोगों का आगमन था।

हां, वे फिर भी आ रहे हैं। संदूक, चटाई, सीबन, झाड़ू आदि सिर पर लादकर वे चले आ रहे थे। सबके सब बहुत थके हुए थे। कीचड़ भरे कपड़े, धूल भरे बाल, थके हुए शरीर, आंखें गड्ढे में धंस गई थीं।

उनके चेहरों को देखकर मरियम के हृदय में दया आ रही थी।

यदि हजारों की संख्या में भी लोग आ जाएं तो सीमारहित पहाड़ी प्रदेश में जगह की कोई कमी नहीं होगी, बल्कि उनका स्वागत ही होगा। युग-युगों से जो जमीन बंजर पड़ी हुई थी उसे अब इंसान आपस में बांटेंगे और उस पर अपना अपना कब्जा करेंगे। जो खेत सुसुप्तावस्था में पड़े थे मनुष्य उनको अब उपजाऊ भूमि के रूप में परिवर्तित करेंगे।

मरियम भी इसी प्रकार सोचती हुई उनको देखकर खड़ी हो गई।

'वर्की का संघ होगा। वर्की साहब ने कहा था कि इस हफ्ते में चालिस लोग आने वाले हैं। जरूर वे ही होंगे।' इस प्रकार सोचती हुई मरियम ने एक बड़ा पत्थर उठाया और उसे दीवार पर चिन दिया और बाद में उसे चिकनी मिट्टी से लेप दिया।

सत्रह

जोण का बंगला।

चेरुक्काटु वर्की जागकर बिस्तर पर ही बैठा था। उस दिन सवेरे पानी

नहीं बरसा था। सोने के रंग जैसी सूर्य की किरणें पहाड़ियों का आलिंगन कर रही थीं। जंगली कोयल भी कुहू-कुहू की आवाज दे रही थी।

वर्की को एक अजीब जोश पैदा हुआ। उसने हाथ फैलाकर मेज पर से दूरबीन हाथ में लिया और आंखों में लगाकर खिड़की से दूर-दूर तक देखने लगा।

जहां-तहां की पहाड़ियों के बीच, जंगल काटकर कई खेत बनाए गए हैं। पहाड़ियों का आकार अनोखा ही था, कुछ क्रिसमस के केक के समान और कुछ डबल रोटी के समान। कुछ मालपोहा के समान और कुछ कुम्हड़ा के समान। इस प्रकार कई रूप और आकृति में बिखरी हुई थीं वे पहाड़ियां।

वर्की ने उस दूरबीन को दूसरी ओर घुमाया। दूर पहाड़ी की तराई में मजदूरों की झोंपड़ियां दिखाई पड़ रही थीं। सफेद कपड़ों का बुर्का पहनकर मुसलमान औरतें झुंड की झुंड खेती करने के लिए जा रही हैं।

एक ओर एक महंत एक हाथी को लेकर नदी में उतर रहा था तो दूसरी ओर एक छोटी पहाड़ी पर सफेद रंग की कोई चीज चल रही थी... उस नली में एक बिल्ली के जैसा कुछ दिखाई पड़ रहा था। ध्यान से देखने पर पता चला कि कोई औरत खेत में अकेले ही काम कर रही है।

'वह मरियम हो सकती है। वह मात्तन की पहाड़ी है।' वर्की ने अपने आप से कहा।

वह सिनेमा के समान प्रकृति के एक-एक रंग को बदल-बदलकर देखता रहा। हरे पत्तों से, लाल मिट्टी से, काली चट्टानों से और सफेद सूखी घासों से बनाया हुआ प्रकृति का बिस्तर। वह शांति का क्रीड़ा स्थल है। क्या-क्या धन-संपत्ति वहां छिपी पड़ी होगी ?

बरामदे में किसी के पैरों की आवाज सुनकर उसने मुड़कर देखा।

ओतेन कुरुप्प फिर आ गए। वे इस समय चौथी बार आए हैं। पुलंगक्कोट्ट नंबियार के खेत जाकर देखने के लिए वर्की को अभी तक समय नहीं मिला है।

"क्यों शेर ! जाओगे न ?" ओतेन कुरुप्प ने हंसते हुए पूछा।

"हां, ठीक है। मैं सोच रहा हूं कि आज जाऊंगा। भीतर आ जाओ।"

ओतेन कुरुप्प कमरे में घुसकर एक छोटी आरामकुर्सी पर बैठा।

"मुझे दाढ़ी बनाने और चाय पीने के लिए अभी तक समय नहीं मिला। अभी एक घंटा लगेगा।" वर्की ने दूरबीन की नली पर हथेली फैलाते हुए कहा।

"मैं यहां इंतजार करूंगा।" कुरुप्प ने कहा। वर्की सुस्ती के साथ उसी बिस्तर पर बैठा रहा। पांच मिनट बाद वह उसी दूरबीन से वन प्रदेश की दूसरी ओर देखने लगा।

कुछ दूरी पर एक पहाड़ी का विकृत रूप है। उसके ऊपर बड़े-बड़े चट्टान। उसके नीचे एक टेढ़ी नदी। नदी के किनारे भी चट्टानें हैं। उन चट्टानों के नजदीक नदी के किनारे एक सुंदर औरत करीब-करीब नग्न होकर नहा रही है।

वर्की उत्कंठा से उसी जगह आंखें गाड़कर बैठा रह गया।

जलक्रीड़ा करने वाली वनदेवी। उसकी एक-एक हरकत ने वर्की को कामातुर कर दिया।

एक ओर वर्की उस वनदेवी की जलक्रीड़ा को देख रहा था तो दूसरी तरफ ओतेन कुरुप्प उस कमरे का विधान देखकर पढ़ रहे थे।

बहुत बड़ा कमरा है। फर्श पर रंगीले कारपेट बिछे हैं। दीवार पर बड़ी खिड़कियां बनी हुई हैं। दो खिड़कियों पर शीशे लगे हैं। सारे कमरे में मंहगा फर्नीचर-गोल मेज, शीशम की लकड़ी से बनी कुर्सियां, सोफा सेट, अलमारियां, मेजें, चारपाइयां। अलमारी के एक खाने में एक कोट लपेटकर रखा हुआ है। मेज पर कुछ अंग्रेजी पत्रिकाएं और किताबें और दाढ़ी बनाने का सामान बिखरा पड़ा है। मूसल के समान एक शिकारी की टार्च मेज पर पड़ी है। मेज पर ताश बिखरे पड़े हैं। खाली बैटरियां अलमारी के ऊपर ढेर बनाकर रखी हुई हैं। अलमारी के एक कोने में एक बंदूक भी रखी हुई है। मंहगे ऊनी कपड़े, शाल और कंबल लटके हुए हैं। अगले कमरे में एक बांस की टोकरी में गंदे कपड़े भरे पड़े हैं। फर्श पर सिगरेट के टुकड़े और जली हुई माचिसें पड़ी हैं। कुल मिलाकर एक गंदा कमरा है। वहां के प्रबंध से यही मालूम पड़ता है कि उसका मालिक एक अमीर आदमी है।

"कुरुप्प यहां आएंगे।" नली आंखों में लगाते हुए वर्की ने पूछा।

जब कुरुप्प उसके पास पहुंचे तो नली उनको देकर कहा, "उस नदी की ओर ध्यान से देखना। कुछ दिखाई पड़ता है ?"

कुरुप्प कुछ देर तक नली को आंखों में लगा कर देखते रहे।

"क्या देख रहे हो ?" वर्की ने मुस्कुराहट के साथ पूछा, "कई चीजें दिखाई दे रही हैं क्या ?''

''उस नदी के किनारे...कोई नहा रही है।"

"पहचानते हो, कौन है ?"

"अच्छी तरह नहीं दिख रही है। लेकिन एक औरत नहाते हुए अवश्य दिखाई दे रही है।"

"एक औरत...." वर्की को हंसी आई, "यह बता सकते हो कि वह कौन है ?"

कुरुप्प नली आंखों से अलग करके संदेह के साथ वर्की की ओर देखने लगे।

"पहचानने से आपका क्या मतलब ?"

"ऐसे ही मैंने पूछा।"

"ऐसा लगता है कि वह कृष्णन नंबियार की भतीजी है।"

"यह कृष्णन नंबियार कौन है ?"

"कारियाट् मालिक का मुख्तार।"

"ऐसा लगता है कि यहां जमींदार और मुख्तार लोगों के अलावा और कोई नहीं है। बस, यह बता दीजिए कि यह नंबियार कहां रहता है ?"

"उस घाट के पार एक ऊंची जगह है, जिसका नाम रसिकनमूला है। वहां कृष्णन नंबियार का घर है। हम जिस पहाड़ी को देखने जा रहे हैं, वह रसिकनमूला से एक मील की दूरी पर है।"

"ठीक है।" वर्की ने फिर उस नली को आंखों में लगाकर, फिर उसी तरफ देखा। पर इतने में वह वनदेवी वहां से ओझल हो गई।

"हम जल्दी चलें।" वर्की ने नली को नीचे रखा और बिस्तर से उठा।

"न चाय पीनी है, न नहाना है और न हजामत बनानी है, बस जल्दी चलो।" वर्की ने नाइट गाउन उतारकर बिस्तर पर फेंका और गुनगुनाते हुए गुसलखाने की तरफ चल दिया।

कुरुप्प कुछ देर तक चुपचाप बैठा रहा। थोड़ी देर बाद उस नली को लेकर आंख में लगाकर, दूर-दूर तक देखने लगा।

उन्होंने उस स्त्री को अब दूसरी जगह देखा। उसके साथ एक नौजवान भी है। कुरुप्प ने उत्सुकता के साथ नौजवान को देखा जिसको वह पहचान भी न सका। वह आदमी सफेद कमीज और निक्कर पहने हुए है। उस प्रदेश में कोई भी आदमी निक्कर नहीं पहनता है। कुरुप्प ने अनुमान लगाया कि वह चेट्टन लोगों में से कोई होगा। लेकिन माधवी चेट्टन लोगों में से किसी से एकांत में कैसे बातचीत करने की हिम्मत करेगी ? कुरुप्प को संदेह हुआ।

डेढ़ घंटा बीत गया।

वर्की चाय पीने, नहाने और दाढ़ी बनाने के बाद नए कपड़े पहनकर आया।

उस आदमी ने एक लंबा पैजामा और नीले रंग की कमीज पहनी हुई थी। कमीज के सामने का हिस्सा कोट के जैसा खुला था, लेकिन उस पर दस, पंद्रह सीपी के टुकड़े बटन के रूप में लगे हुए थे। उसने गोल नीले रंग का चश्मा पहना हुआ था। उसके कंधे पर एक लंबे फीते के साथ एक छोटा-सा कैमरा लटका हुआ था।उसने पैरों में चमकते हुए काले जूते पहने हुए थे।

वर्की का रंग एकदम काला है। उसके चेहरे पर कई गंदे दाग थे। उस काले मुंह को सिर के सफेद बाल कुछ आकर्षक बनाए हुए थे।

"क्या हमें उस रसिकनमूला के पास से ही जाना होगा ?" वर्की हंसते

हुए पूछा।

कुरुप्प ने देखा कि उसके दो सोने के दांत हैं।

"हां, उस रास्ते से भी जा सकते हैं।" कुरुप्प ने उदास होकर कहा।

'अच्छा तो उसी रास्ते से ही चलिए।' वर्की आंखें बंद करके बेवकूफों की तरह हंसने लगा।

उसने दीवार के एक कोने से एक हैट उतारा और अपने सिर पर रखा। अलमारी के ऊपर से एक मलाक्का छड़ी उठाकर उसे घुमाते हुए, सीटी बजाते हुए, वर्की बाहर निकला ! "अरे तोम्मन !" वर्की ने आंगन में खड़े होकर बुलाया। तोम्मन रसोईघर के सामने आंगन में आ गया।

"आज मुर्गी करी चाहिए, मुर्गी करी।" ऐसा कह-कहकर वह सीटी बजाते हुए, सिर हिलाते हुए, चलने लगा। उसके पीछे-पीछे कुरुप्प भी।

जैसे ही वे लोग पहाड़ी से उतरे, खेतों में पहुंच गए। चलते-चलते उन्होंने घाटियां और पगडंडियां पार कीं और अंत में रसिकनमूला के पास पहुंच गए। खेत के पश्चिमी तरफ ऊंचे स्थान पर एक बगीचा है जिसके बीच में एक अट्टालिका बनी हुई है।

कुरुप्प ने उस अट्टालिका की ओर इशारा करते हुए कहा, "कृष्णन नंबियार का घर वही है।"

वर्की उस मकान के चारों ओर अच्छी तरह देखते हुए चलता रहा।

चलते-चलते वे दोनों उस मकान के सामने के खेत में पहुंचे। वहां पर छोटा नाला था। नाले पर पुल नहीं था, इसलिए उन्हें नाले में उतरकर पार करना था।

"हमें इस नाले में उतरना पड़ेगा।" कुरुप्प ने वर्की से कहा, "जूता उतार लो।"

"नहीं, मैं नाले पर कूद जाऊंगा।" वर्की ने उत्तर दिया।

वर्की उस बगीचे की ओर ताकते हुए आगे बढ़ता रहा।

उस मकान के बाहर कोई भी दिखाई नहीं दे रहा था। मकान के रसोईघर की चिमनी से धुआं बाहर निकल रहा था। उसके दक्षिण तरफ के बगीचे में एक सफेद गाय चर रही थी। बगीचे की चारदीवारी के बाहर एक मरा हुआ बछड़ा पड़ा हुआ था जिसे बहुत-से गिद्ध नोच-नोचकर खा रहे थे।

वर्की ने सिर से हैट उतारा और अपने सीने पर चिपकाकर नाले पर कूदा। नाला कुछ गहरा था। वह धड़ाम से गिरा। यह पता नहीं कि उसका ध्यान छूट गया अथवा पैर फिसल गया।

वर्की कमर तक कीचड़ में डूब गया। उसने कीचड़ से बाहर निकलने की कोशिश की, लेकिन उसका पैर और भी नीचे धंसता चला गया।

कुरुप्प पीछे से जल्दी से कूदकर आ गया और वर्की को उस दलदल में से डूबने से बचा लिया। वह उसे खींचकर किनारे पर ले आया।

उसके कपड़े कीचड़ से लथपथ हो गए थे और चेहरा भी कीचड़ से भद्दा हो गया था। उसकी नीली कमीज, पैजामा और कैमरा सब कीचड़ से भर गए थे। सजा-धजा चेहरा, मुंह, नाक, आंख, कान—सब काली कीचड़ की तरह हो गए थे। ऐसे लथपथ हो गए थे कि शक्ल पहचानी ही नहीं जा रही थी। नीला चश्मा, हैट और छड़ी कीचड़ में सन गए थे।

उसने मुंह का कीचड़ थूककर फेंका। हाथ, आंखें, भौंहें और होंठ आदि पोंछ कर सिर झुकाए खड़ा रहा। उसके दांत काले चेहरे पर चमक रहे थे। नाले के किनारे की झाड़ियों में से दबी हुई एक हंसी सुनाई दी।

वर्की ने घूमकर देखा तो एक औरत हंस रही थी।

कुरुप्प ने अपनी हंसी को दबाते हुए पूछा, "शेर, अब क्या करें ?"

वर्की ने अपने पूरे शरीर की जांच की और फिर ईर्ष्या, घृणा, निराशा और असहायता के कारण हंसने लगा।

"चलो, कृष्णन नंबियार के घर जाकर, गंदे कपड़े उतारकर, नहाकर कपड़े बदल आएं" कुरुप्प ने वर्की से अपना मत व्यक्त किया।

"नहीं, नहीं" वर्की ने सिर हिलाकर इशारा किया। वह थू-थू करके थूक रहा था। "हम वापस चलें।" वर्की फिर थूकते हुए बोला।

"इस वेश में ? खेतों में काम करने वाली नौकरानियां मुझ पर हंसेंगी और मजाक भी उड़एंगी।" कुरुप्प ने ताकीद दे दी।

"तो कहीं छिपकर बैठ जाऊंगा। वर्की ने कानों के छेदों में उंगली डालकर कीचड़ निकालते हुए कहा।

"छिपकर मत बैठो, वहां उस केले के बगीचे में सिर नीचे पैर ऊपर करके उल्टे खड़े हो जाओ।"

उन झाड़ियों में से फिर यह आवाज आई और उसके साथ जोर-जोर से हंसने लगी।

कुरुप्प ने उन झाड़ियों में जाकर देखा।

"कौन है ? माधवी ! तू यहां क्या कर रही है ?" कुरुप्प ने हंसते हुए पूछा।

"मैं गाय को बांधने जा रही थी लेकिन तुम लोगों को देखकर यहां छिप गई। हां, यह बताइए कि यह लफंगा कौन है ?"

"यह तिरुवितांकूर का रहने वाला है। बहुत अमीर है।"

यह वार्तालाप वर्की को भी सुनाई पड़ रहा था। माधवी को देखने के लिए उसका दिल तड़पा। उसको कम से कम एक बार नजदीक से देखने की इच्छा

हो रही थी, लेकिन उसकी वर्तमान परिस्थिति इसके काबिल नहीं थी। वर्की को बहुत गुस्सा आया कि ईश्वर ने इन जंगलों में नाले क्यों बनाए। इनका यहां कोई उपयोग ही नहीं, केवल दूसरों को परेशान करना है।

"क्या हुआ, यह कौन है ? वर्की साहब हैं ? यह कैसे हुआ ?"

निक्कर और सफेद कुर्ता पहने हुए एक नौजवान वहां आया और वर्की से पूछताछ करने लगा।

"कौन ? अंतोणी है ? अरे भाई मेरा पैर फिसल गया और कीचड़ में गिर गया,. खतरनाक कीचड़ है यह।"

कुरुप्प ने उस नौजवान को संदेह के साथ घूरकर देखा।

"वर्की सर, आइए। मेरे घर चलिए। अंतोणी ने वर्की को कहा, "नदी में नहा-धोकर तथा कपड़े बदलकर आ जाइए।"

"हां, मैं तुम्हारे साथ जरूर आ रहा हूं।" वर्की खुश हुआ, "अरे अंतोणी ! मेरा हैट, चश्मा और मलाक्का छड़ी, यहां इस कीचड़ में कहीं डूब गए हैं" ढूंढकर जरा निकालो तो।

अंतोणी कीचड़ में उन्हें टटोलने लगा। हैट और छड़ी तो मिल गई पर चश्मे का कोई पता ही नहीं चला।

"कुरुप्प ! आप जा सकते हैं।"

वर्की ने कुरुप्प को संबाधित करते हुए कहा। " मैं इस छोकरे के साथ जा रहा हूं। जमीन देखने हम अगले हफ्ते चलेंगे।"

"हां, ठीक रहेगा।" कुरुप्प झाड़ियों के बीच में से बोले। वर्की और अंतोणी नाले के किनारे-किनारे पूर्व दिशा को चलने लगे।

अठारह

मरियम ने खेत के चारों ओर बाड़ के रूप में जो दीवार बनानी शुरू की थी अब पूरी बन गई है। मरच्चीनी की कलमों में अंकुर आ गए।

यह कितना संदर दृश्य था। लाल रंग के चुंण्डापडर्पन, हरे रंग के वेल्लारोटी, काले रंग के करियालवन आदि कई किस्म के मरच्चीनी की रेशम जैसी कोपलें हिलते हुए उस सारी पहाड़ी खेतों में फैली हुई हैं। खेतों के उस प्राकृतिक मनोरम दृश्य को देखने के लिए मरियम हर रोज वहां चली जाती थी।

एक दिन की बात है। वह हर दिन की तरह उस दिन भी सवेरे-सवेरे उसी पहाड़ी वाले खेतों में चली गई। जब वहां चढ़कर उस दृश्य को देख रही थी

तो वह स्तब्ध रह गई। वहां का सारा रंग ही बदल गया, लेकिन उसको अपनी आंखों पर विश्वास ही नहीं हो रहा था। जब उसको विश्वास आया कि उसकी आंखें ठीक हैं तो वह सिर पकड़कर रोने लगी।

'हे भगवान ! शैतान ने हमें धोखा दिया है।'

शैतान इस बार जंगली सूअर के रूप में आए थे और उन्होंने सारी मरच्चीनी की क्यारियों को खोद-खोदकर तहस-नहस कर दिया है। इधर-उधर पड़ी मरच्चीनी की कलमों को देखकर मरियम रो पड़ी। उसके हृदय में बहुत दुख उमड़ रहा था। बहुत देर तक सिर पर हाथ रखकर वह रोती रही। फिर वह उस दृश्य को देख नहीं सकी। वहां से फौरन घर लौट आई। नौ बजे जब वह घर लौटी तो देखा कि मात्तन उस समय भी सोया पड़ा है। मरियम को यह देखकर बड़ा गुस्सा आया। वह दांत पीसने लगी और मात्तन के पास पहुंचकर उसके सिर पर जोर-जोर से मारने लगी। सूअरों का गुस्सा वह मात्तन के सिर पर मारकर निकालने लगी।

मात्तन उठकर बैठ गया। वह मरियम की ओर ऐसे देखने लगा जैसे कि कुछ हुआ ही नहीं। मरियम दुबारा से मात्तन के सिर पर मुट्ठी से मारने लगी।

मात्तन ने अपना हाथ अपने सिर पर रखा ताकि मरियम की मार उसके सिर पर न पड़े। वह इस प्रकार हंस रहा था कि उसके गंदे दांत बाहर दिखाई दे रहे थे। यदि कोई भी भाव उसके मन में आता, तो वह हमेशा दांत दिखाकर हंसने लग जाता था। ऐसा मालूम पड़ता था कि उसको मरियम का गुस्सा एक मजाक लगता था। कितने भी मारे-पीटे, मात्तन परवाह नहीं करता था। वह चूं तक नहीं करता था। उसके ये भाव मरियम को और भी गुस्सा दिलाते थे। वह उसको बार-बार इसलिए मारती थी, ताकि कम से कम उससे कोई न कोई जवाब मिले। लेकिन वह न तो इस बात को समझता था और न ही कोई उत्तर देता था।

वह बार-बार मात्तन को मारती, पीटती, दबाती, नोचती रहती थी। लेकिन उस पर कोई असर ही नहीं पड़ता था। वह सिर पर हाथ रखकर उरांग-उटांग के समान ऐसे ही बैठा रहता था।

इस प्रकार पति को परेशान करने के बाद वह स्वयं ऊब गई। जब वह बाहर निकलने लगी तो बरामदे में धड़ाम से गिर पड़ी और अपनी छाती को जोर-जोर से पीटती हुई रोने-चिल्लाने लगी। मात्तन को परेशान करने के बाद उसे प्रायश्चित भी करना पड़ता था और फिर अपने आप ही गुस्सा भी आने लगता था। मां को देखकर बच्चे भी मां के पास बैठकर रोने लगे। उन बच्चों को यह मालूम नहीं था कि असल में बात क्या है ? बच्चे भी अपनी मां के साथ रोने लगते। पत्नी और बच्चों की पुकार सुनकर मात्तन उठकर बाहर कहीं

जाकर बैठता और वहां बैठकर नाखून काटने लगता अथवा मुर्गी के पंखों से कानों को मैल निकालने लगता।

थोड़ी देर के बाद सारा वातावरण शांत हो गया। मरियम थोड़ी देर के बाद उठकर रसोईघर में चली गई। वहां उसने भोजन तैयार किया। उसने मेरिक्कुट्टी से कहा, "अपने पिताजी को बुलाओ।" मेरिक्कुट्टी आंगन में बैटे पिताजी की ओर दौड़ पड़ी।

मात्तन उस समय एक मेंढ़क और एक मेंढ़की को मैथुन करते हुए देख रहा था। उन्हें देखकर उसे बहुत आनंद आ रहा था।

मेरिक्कुट्टी ने अपने पिता को दूर से देखकर आवाज दी, "पिताजी, खाना खाने के लिए आइए।"

मात्तन ऐसे बैठा था जैसे कि उसने कुछ सुना ही नहीं।

वह उन लाल-लाल मेंढकों की दशा देखकर कुछ विचार में पड़ गया था।

उसने उन दोनों प्राणियों को मैथुन-क्रिया से हटाने की कोशिश की लेकिन वे अलग-अलग नहीं हुए। दोनों आपस में चिपटने लगे। बाद में उसने एक पत्थर उन दोनों पर मार दिया। वे दोनों प्राणी मैथुन क्रिया करते हुए ही पिसकर मर गए। लाल रंग की खाल फटकर उनके पेट में से एक सफेद रंग की कोई चीज बाहर निकलने लगी। मात्तन गंदे दांत दिखाते हुए हंसने लगा।

"पिताजी ! खाना खाने आ जाओ।" मेरिक्कुट्टी अपने पिता का हाथ पकड़कर खींचने लगी। मात्तन उठकर रसोईघर की ओर चल पड़ा।

माता-पिता और बच्चे भोजन करने के लिए पास-पास बैठ गए। भोजन करते हुए मरियम कहने लगी, "हमारी मरच्चीनी को जंगली सूअरों ने तहस-नहस कर दिया।"

''ऐसा लगता था कि मात्तन को कुछ भी सुनाई नहीं दिया। उसे केवल वही बात याद आ रही थी कि वे दोनों प्राणी मैथुन करते हुए कैसे पिसकर मर गए। उसको बड़ा आनंद आ रहा था।

"सुनो ! अजी सुनो। हमारी सारी मरच्चीनी को सूअरों ने तहस-नहस कर दिया।"

मरियम ने करछुल से मात्तन की नाक पर मारते हुए कहा।

"सूअरों पर गोली नहीं चलाई तुमने ! वह अपनी पत्नी से ऐसे बोल रहा था जैसे एक सेनानायक अपने सैनिक को आदेश देते हुए कहता है।

"तुम बंदूक चलाओगे ? मैं पोलच्चन की बंदूक मांग कर ले आती हूं। रात में पहाड़ी पर सूअरों का इंतजार करना। जब सूअर खेतों में आएं तो उन पर गोली चलाना।" मरियम ने मात्तन से कहा।

मात्तन कुछ नहीं बोला।

उसने यह बात तो सोची ही नहीं थी।

"सूअर को गोली से उड़ा दोगे ?"

मरियम ने खाना परोसनेवाली कलछी को मात्तन की नाक में फिर से लगाते हुए पूछा।

मात्तन ऊपरी होंठ को लंबा करके कुछ सोच रहा था। जब वह कभी किसी बात को गंभीरता से सोचता है, उसका ऊपरी होंठ ऐसा लंबा हो जाता है जैसे लेटर-बक्स के मुंह का उपरी शेड हो है।

"गोश्त के टुकड़ों के साथ बारूद के मसाले को मिलाकर सूअर को खिलाने पर सूअर मर सकता है।" मात्तन ने सूअरों को मारने का एक दूसरा उपाय भी बताया।

मरियम उसकी बात पर सहमत हो गई।

उसी शाम मरियम और मात्तन ने गोश्त के टुकड़ों में पटाखा बांधा और मरच्चीनी की कलमों के बीच में रख दिया।

दूसरे दिन बहुत सवेरे मरियम खेत में मरे हुए सूअरों को देखने के लिए दौड़ पड़ी। उसने वहां एक जंगली गीदड़ मरा हुआ देखा जिसका सिर फटा हुआ था। सूअर का बाल तक नजर नहीं आया। लेकिन मरच्चीनी की कलमें इधर-उधर बिखरी पड़ी देखकर ऐसा लगता था कि शैतान सूअर अवश्य आया होगा।

उन्नीस

हजारों की तादाद में ईसाई लोग इस प्रदेश में आकर रहने लगे। उन्हें यहां रहते हुए कई महीने बीत गए थे।

यहां के पुराने बासिंदे लोग नए आंगतुकों से बिल्कुल अलग-थलग लग रहे थे। तिरुवितांकूर से आए नए चेट्टन लोगों को वे लोग बिल्कुल भी पंसद नहीं करते थे। संदेह और ईर्ष्या से वे उनके साथ दुश्मनी रखते थे।

नए बासिंदों का व्यवहार भी मधुर नहीं था। वे मन में सोचते थे कि यहां के सारे पुराने बासिंदे बहुत गंवार हैं। बहुत उपजाऊ खेतों को सिंचाई के लिए आसमान के सहारे छोड़ देते हैं, कितने मूर्ख हैं ! हम उनको यह दिखा देंगे कि इन जंगलों और पहाड़ियों से कैसे रुपयों का ढेर कमाया जाता है। हम रुपए कमाकर उन रुपयों से यहां के पुराने बासिंदों से जानवरों के समान काम कराएंगे। यहां के वन साम्राज्य को हम अपना बनाएंगे और हम यहां एक नए ईसाई साम्राज्य की स्थापना करेंगे।

नए बासिंदों के व्यवहार और स्वभाव से पुराने बासिंदों के हृदय में उनके प्रति नफरत और घृणा पैदा हो गई।

किसी को भी सताए बिना पवित्र जीवन यापन करने वाले कई ईसाई परिवारों के साथ कई लुच्चे और लफंगे ईसाई लोग भी वहां पहुंच गए थे। कुछ लोग तिरुवितांकूर से कई बड़े जुल्म करके बचने के लिए मलबार की पहाड़ियों पर चले आए। कई चोर और लफंगे भी चोरी के लिए मलबार के जंगली गांव में घुस आए। इस प्रकार कई ऐसे एजेंट भी यहां आ गए जो केवल जीभ के बल पर मेहनत किए बिना जीते हैं। सत्य और न्याय की परवाह न करके कुछ ईसाई लोग ज्यादा से ज्यादा जमीन हड़पने की कोशिश कर रहे थे। वे लोग वहां के भोले-भाले मजदूरों को धमकाकर जबरदस्ती काम कराते थे।

वे कहते थे, "इन बेवकूफों को तिरुवितांकूर वालों की असलियत अभी तक मालूम नहीं। हमने रुपए देकर जमीन खरीदी है और उस पर खूब मेहनत की है। यदि इस सोने की फसल को देखने आओगे तो तुम्हारे पैर काट दिए जाएंगे।"

देशी लोग डर के मारे उनकी सोने की फसल को देखने तक नहीं जाते थे। इसके विपरीत देशी लोगों की फसल चोरी करने और जबरन खसोटने में वे हिचकते भी नहीं थे।

चोरियां बहुत ज्यादा होने लगी थीं। कुंजप्पा नंबियार के बगीचे से चार केले के गुच्छे गायब हो गए थे। अंबु कुरुप्प के बगान से शहद वाले कटहल के पेड़ से दो बड़े कटहल कोई चोरी करके ले गया था। ओणकन नाई की गाय कोई चुरा ले गया था। कणारन के बरामदे में रखे पीतल तथा तांबे के बर्तन कोई उठाकर ले गया। अब वहां एक अजीब स्थिति पैदा हो गई थी।

रात में रस्सी पर सुखाने के लिए डाले हुए कपड़े, रसोईघर के सामने रखे बरतन, बरामदे में रखे खेती के औजार और खलिहानों में पड़ा अनाज आदि दूसरे दिन सवेरे गायब मिलता था।

वाद-विवाद, झगड़े और मारपीट दिन-ब-दिन बढ़ने लगे। उस कम समय में दो हत्याएं भी हो गई। युग-युगों से वहां जो शांति और प्रेम का वातावरण था, वह अब समाप्त हो गया। वहां के गांव में लूटपाट और भ्रष्टाचार की सूचना पाकर आजकल लाल टोपी वाली पुलिस गश्त लगाने लगी थीं। स्थिति एकदम खराब हो रही थी।

नए ईसाई बासिंदों के साथ-साथ ईसा मसीह के प्रतिनिधि के रूप में बाइबिल और क्रास लेकर कुछ पादरी भी वहां पहुंच गए। ये पादरी ईसाई लोगों को सच्चा रास्ता दिखाने के लिए आए थे। जिन पहाड़ी जंगलों में शेर और हाथी घूमा करते थे, वे जंगल अब काट दिए गए हैं। उन स्थानों में लोगों ने

गिरजाघर और पाठशालाएं बनवा लीं। उन लोगों ने चोरी-छिपे हिंदुओं के छोटे-मोटे मंदिरों को तोड़कर पवित्र कन्या मरियम की मूर्तियों की स्थापना कर दी। जिन पहाड़ियों के ऊपर जंगली गिद्ध उड़ते थे अब वहां ऊंचे-ऊंचे क्रास दिखाई पड़ रहे थे।

रात के समय जहां जुगुनू चमकते थे, अब मोमबत्ती और लैंपों की रोशनी होने लगी थी। गिरजाघरों में प्रार्थना की घंटियां बजती थीं, कुर्बानी, सामूहिक प्रार्थना, कुंभसार और बड़ा दिन मनाया जाने लगा। अर्थात् उस जंगल के स्थान पर चहल-पहल हो गई।

गिरजाघर के पास ही एक ईसाई श्मशान भी तैयार हो गया।

बीस

पोल ने पालंगकोट जमींदार से पांच सौ एकड़ जमीन खरीदी थी। केवल सीमा पर बाड़ लगवाने में बहुत सारे रुपए खर्च हो गए। उसने अपनी जमीन का नाम बडलां एस्टेट रख दिया। उसका विचार था कि अपनी पूरी जमीन पर खेती करनी है।

पाप्पच्चन नामक एक आवारा आदमी उसका मुख्तार बन गया।

बगीचे में काम करने के लिए मजदूर नहीं मिलते थे। इसलिए पोल परेशान हो गया। आसपास के लोग अक्सर अपने-अपने खेतों में काम करते थे। दोपहर तक उनको अपने जमींदारों के यहां भी काम करना पड़ता था। पीढ़ी-दर-पीढ़ी ऐसा चलता रहा। जमीन के नए मालिकों को मजदूर नहीं मिलते थे तिरुवितांकूर से आए गरीब लोगों ने पोल की सहायता नहीं की। वे लोग अपने-अपने नए खेतों में दिन-रात काम करते रहे।

एक दिन सुबह-सुबह पोल और पाप्पच्चन जोण के बंगले के सामने रास्ते पर अपने-आप आ खड़े हो गए।

तराई में उस समय भी कोहरा छाया हुआ था। फावड़ा और टोकरी लेकर मजदूर लोग अपने-अपने जमींदारों के खेतों में जा रहे थे। एक बूढ़ा घुटनों तक का एक तौलिया लपेटे और एक फटा कुर्ता पहने कुदाल और फावड़ा कंधे पर रख कर उस रास्ते से गुजर रहा था।

"बाबा, मालिक के खेतों में काम करने के लिए जा रहे हो ?"

पोल ने अपना परिचय देते हुए मुस्कुराते भाव से उस बूढ़े को प्रणाम किया।

पोल का प्रेमभाव देखकर बूढ़ा कुछ अभिमान और विनय के साथ दांत दिखाते हुए वहां खड़ा हो गया।

पोल ने जेब से सोने का सिगरेट-केस निकाला और उसमें से एक सिगरेट लेकर पी और एक पाप्पच्चन को भी दी। सिगरेट से धुआं उड़ाते हुए पोल ने बूढ़े से पूछा, "बाबा तुम्हारा क्या नाम है ?"

"चात्तु" बूढ़े ने हंसते हुए कहा।

"आपको मालिक के खेतों में काम करने पर क्या मजदूरी मिलती है ?" पोल ने पूछा।

"एक दिन के छह आने मिलते हैं।" चात्तु ने सिर हिलाते हुए उत्तर दिया।

"छह आने !" पोल ने सिगरेट ऊपर उठाकर, मुंह खोलकर अचंभे से पाप्पच्चन की ओर देखा।

"छह आने ? झूठ बोलते हो ? छह आने नहीं होंगे।" पोल ने सिर हिलाते हुए कहा।

"छह आने ही हैं, मालिक," चात्तु ने जोर देते हुए कहा।

पोल ने एक होंठ से दूसरा होंठ दबाया और बूढ़े की ओर दया भाव से देखता रह गया।

"बाबा, आप यह क्या कहते हैं ? पहाड़ी खेतों में पत्थरों और कांटों से खून-पसीना बहाने वाले मजदूर को मालिक केवल छह आने ही देते हैं ? मुझे इस बात पर विश्वास नहीं हो रहा है"

"हम सबको छह आने के हिसाब से ही मिलता है, उससे एक पैसा भी ज्यादा नहीं।" चात्तु ने दाढ़ी नोचते हुए कहा, "पुराने जमाने में चार आने थे, पर लड़ाई शुरू होने के बाद से छह आना हो गया।"

पोल नाक पर उंगली रखकर चारों ओर देखने लगा, जैसे कोई बदबू को सूंघ रहा हो।

"अरे पाप्पच्चन ! बाबा जो कहते हैं, तुमने सुना ?" पोल ने पाप्पच्चन की ओर देखा। "इनको केवल छह आने प्रतिदिन मिलता है। यह एक तरह की नर-हत्या नहीं है ?"

"जरूर ! यह नर-हत्या ही है।" पाप्पच्चन पोल की बात से सहमत हो गया।

"बाबा के बीवी और बच्चे भी होंगे ?" पाप्पच्चन पूछने लगा।

"दो बच्चे और एक बुढ़िया मां है। मेरी पत्नी पिछले साल चली गई।"

"चली गई ? कहां ?"

"अरे ! उनके कहने का मतलब है कि उनकी पत्नी मर गई है।" पोल ने पाप्पच्चन को समझाने का यत्न किया।

"इन छह आनों से बुजुर्ग अपने परिवार का पूरा खर्च चला लेते हैं ?" पाप्पच्चन ने धुआं उड़ाते हुए सिगरेट बूढ़े की ओर हिलाते हुए पूछा।

"मुश्किल से। लेकिन मालिक ने हरेक को खेत भी दिए हैं। उन खेतों से भी हम लोग कुछ कमा लेते हैं।"

"तब तो बूढ़े को केवल अपनी खेतीबाड़ी में ही खुश रहना चाहिए। मालिक के छह आने के लिए क्यों बुढ़ापे में पहाड़ियों पर रेंगता है ? यह क्या है ? मेरी समझ में नहीं आता।"

"हम लोग सदियों से मालिक का काम करते आ रहे हैं। अगर हम काम करने के लिए नहीं जाते, तो फिर मालिक...।"

"क्या ? मालिक क्या करेंगे ?"

"फिर मालिक हमारी कोई सहायता नहीं करेंगे।"

"हा...हा...हा..." पाप्पच्चन उपहास करते हुए हंसा। "यह छह आने तो मालिक फेंक देते हैं। यह कौन सी बड़ी सहायता है ?"

"क्या आपको यह भी मालूम है कि हमारे प्रांत के मजदूरों को कितनी मजदूरी मिलती है ?" पोल ने पूछा, "तीन रुपए प्रतिदिन। तीन ब्रिटिश रुपए।"

"तीन रुपए और दोपहर को पेट भर भोजन।" पाप्पच्चन ने उसे और स्पष्ट करते हुए कहा।

"फावड़ा लेकर खेत में केवल घुसते ही, बस रुपए तीन और दोपहर का खाना पक्का हो गया।" पाप्पच्चन ने सिर पर हाथ रखा जैसे वह कसम खा रहा हो।

"तिरुवितांकूर में मजदूर और मालिक में कोई फरक नहीं है।" पोल ने कहा।

"अगर कोई फावड़ा लेकर काम करता है, तो उसका मतलब यह नहीं है कि वह आदमी नहीं है। हमारे प्रदेश में काम के बाद मालिक और नौकर साथ-साथ बैठकर दारू पिएंगे और ताश खेलेंगे। यह मलबार एक अजीब जगह है। मालिक बिस्तर पर लेटकर आज्ञा देने के लिए हैं और बेचारे मजदूर पहाड़ों को मैदान बना लेते हैं। मालिक छह आना मजदूर की ओर फेंक देता है। अजीब प्रबंध है यहां का।"

"देखो बाबा !" पाप्पच्चन सिगरेट का टुकड़ा फेंककर व्याख्यान देने लगा। "वहां देखो। वहां उन पहाड़ियों और तराइयों में जो लहलहाते खेत दिख रहे हैं, वे सब आपके जैसे निरीह लोगों के खून पसीने के परिश्रम का फल है। जमींदार खेतों को केवल देखता है, जाता नहीं। उस कीमती फसल का स्वाद केवल जमींदार लेता है। मेहनत करने वाले मजदूरों को कुछ नहीं मिलता। फसल बेचकर मालिक लोग हजारों रुपए कमाते हैं। उसमें से एक पैसा भी आप लोगों

को नहीं मिलता। क्या आप लोगों को गोश्त की करी और तली हुई मछली खाने की इच्छा नहीं होती ? क्या आपको अच्छे-अच्छे कपड़े पहनने की इच्छा नहीं होती है ? आपको भी इन सभी चीजों की इच्छाएं तो होंगी, लेकिन आप उसकी पूर्ति नहीं कर सकते, क्यों ?

"आप भी इंसान हैं न ? लेकिन अपनी इच्छाओं को दबाते हैं और जानवरों के समान मजदूरी करके मर जाते हैं। छह आने में चावल और सब्जियां ही बड़ी मुश्किल से आती हैं। यदि आप लोगों को बाजार में कहीं सूखी मछलियां दिखाई पड़ गई तो आपको आंख ही मूंदनी पड़ेगी क्योंकि आपके पास खरीदने के लिए पैसा नहीं है। मैं यही कहूंगा कि ये सब अन्याय आप लोग स्वयं अपने प्रति करते हैं। दूसरों को क्यों गलत कहा जाए ?"

ऐसा लगता था कि पाप्पच्चन के इस व्याख्यान का अंतिम भाग किसी कम्यूनिस्ट नेता के व्याख्यान से उधार लिया हुआ हो।

यद्यपि चात्तु को पाप्पच्चन का भाषण समझ में नहीं आया लेकिन उसकी समझ में इतना आ गया था कि जो कुछ वह बोल रहा था, उसमें कुछ तो सचाई है ही। उसके मुंह पर जो हंसी थी, अब वह निराशा में तो बदल ही गई, साथ ही वह कुछ सोच में भी पड़ गया।

"अरे पाप्पच्चन ! तुम मेरे बंगले में जाकर मेरे बक्से में से एक नई धोती निकाल कर ले आओ। इन्हें देखकर मुझे अपने स्वर्गीय पिताजी की याद आ रही है। बाबा कम से कम एक अच्छी धोती तो पहनें। भले ही यह यहां के जमींदार का मजदूर है लेकिन हमारा पड़ोसी भी तो है। जल्दी ले आओ।" पोल ने पाप्पच्चन के कंधे पर हाथ रखकर इशारा किया।

पाप्पच्चन एक नई धोती ले आया। पोल ने वह धोती बूढ़े को दे दी।

"बाबा ! यह ले लीजिएगा। मैं आपकी ऐसी स्थिति नहीं देख सकता।"

चात्तु ने बहुत कृतज्ञ और विनीत होकर वह धोती ले ली और पोल को धन्यवाद दिया। वह उसे नमस्कार करते हुए पहाड़ी के खेतों की ओर चल पड़ा।

इक्कीस

तरमट्टिल चाक्को मलबार में केवल छह महीने पहले से बसे हैं। वह पाला से आया है। उसके साथ उसके दो छोटे भाई और एक मामा भी मलबार आए हैं। कुंजितोम्मन नामक एक एजेंट की बातों पर विश्वास करके उसने अपनी सारी संपत्ति सस्ते भाव में बेच दी और तीन रुपए लेकर वह भी मलबार आ

गया था।

खेत वगैरह कुंजितोम्मन ने ही खरीद लिया था। फिर कुंजितोम्मन ने यह कहकर उससे तीन सौ रुपए और ले लिए थे कि वह तिरुवितांकूर जाकर कुछ नए मजदूरों और मरच्चीनी की कलमें ले आएगा। चाक्को के पास उस समय केवल उतना ही रुपया था। लेकिन कुंजितोम्मन फिर मलबार वापस नहीं आया।

चाक्को काफी पढ़ा-लिखा था। किसी से ज्यादा नहीं बोलता था। केवल अपने काम में मस्त रहता था।

मलबार आने के एक महीने के भीतर ही उसको यह महसूस हुआ कि उसने बहुत बड़ी बेवकूफी की है। एक पुरानी 'पौराधनि' नामक पत्रिका निकालकर वह पढ़ने लगा। लेकिन उसका मन उसमें नहीं लगा। वह केवल अपने जीवन के बारे में ही सोच रहा था।

उसके पास जितने रुपए थे सब खर्च हो गए। उसने सबके सब रुपए पहाड़ी खेतों में खर्च कर दिए। वह सोचता था कि अच्छी फसल पाने के लिए खेतों में खाद डालना जरूरी है। उसकी सहायता करने के लिए और कोई नहीं है। वह यह भी सोचता था कि उसका भविष्य अंधकार में है।

लेकिन उसको अपने से ज्यादा अपने पड़ोसियों का दुख परेशान करता था। असीमित दुख। अज्ञानता और आत्मरक्षा की विकृत चेष्टा ने आसपास के ईसाई समाज को बुरी तरह से ग्रस लिया था। इन नए बासिंदों में से बहुत लोग पुराने बासिंदों से प्रेम संबंध जोड़ने पर भी अपने जीवन को सार्थक नहीं बना सके। उसके बदले वे देशी लोगों को डरा-धमका कर गुंडागर्दी करने लगे। इसके फलस्वरूप पूरा ईसाई समाज बदनाम हो गया।

चाक्को को कई बार अनुभव हुआ कि उसको देखते ही देशी लोग रास्ता बदल कर चुपचाप चले जाते थे। चाक्को जब उनको देखकर हंसता था तो वे उसकी तरफ से अपने मुंह मोड़ लेते थे। उसका क्या कारण था ? उसको यह मालूम हो गया था कि यह अविश्वास और डर के बीज कुछ ईसाई बदमाशों ने ही बोए थे।

इन ईसाइयों के हृदय में दया और प्यार भी था। उनमें देशी लोगों के प्रति किसी किस्म की नफरत या बदले की भावना नहीं थी। जो डर उनके दिलों में अज्ञानता के कारण पैदा हुआ था उसको वह इस धमकी से दबाता था। उनको यह डर था कि शायद पड़ोसी देश लोगों से उन्हें कभी कोई भी नुकसान हो सकता है। आपस के प्यार और विश्वास से जो शांति स्थापित हो सकती थी उसके बारे में वे सोच भी नहीं सकते थे। धमकी से वे अपनी दुर्बलता पर पर्दा डालते थे।

सामने की पगडंडी से एक शोर को सुनकर चाक्को उसी ओर देखने लगा।

दस-पंद्रह ईसाई लोग शराब के नशे में धुत थे और अपने हाथों में बड़े बड़े चाकू लेकर शोर करते हुए आ रहे थे।

बाईस

तोण्डियन पहाड़ी के दक्षिण भाग में खेतों के एक किनारे बांस की एक छोटी-सी झोपड़ी में अंतोणी अकेला शांति से रहता था। उसने उस पहाड़ी के एक हिस्से में तेलहन के पौधे और दूसरे हिस्से में काजू के पौधे उगाने का विचार किया था। पहाड़ी के ऊपरी हिस्से के जंगल काटे जा रहे हैं। उसने तराई के खेतों में धान की खेती और झोंपड़ी के चारों ओर केले, घुइयां, गाजर, हरी मिर्च, मूंग, तरोई आदि की खेती की हुई थी।

सब्जी और धान की खेती की देखभाल करने के लिए अंतोणी हर समय अपनी झोंपड़ी में ही रहता था। मजदूर लोग सवेरे से दोपहर तक खेतों में काम करके लौट जाते थे, लेकिन अंतोणी तब तक अकेले ही एकांत में रहता था।

एकांत अंतोणी को बहुत पसंद था। वह अपने लिए भोजन स्वयं बनाता था और शेष समय भगवान की भक्ति और स्वाध्याय में बिताता था।

वह अपने ब्रह्मचारी जीवन के प्रति काफी सजग था और अपने इसी जीवन में शिक्षा और ईसाई दर्शन में प्रवीणता प्राप्त कर ली थी। बचपन में ही उसके मां-बाप स्वर्ग सिधार गए थे। उसका पालन-पोषण उसके चाचा चेरियान की देखभाल में हुआ था। वह पवित्र कन्या मरियम को माता और ईसा मसीह को पिता मानकर एक पादरी की देख-रेख में शिक्षा प्राप्त करने लगा। शिक्षा प्राप्त करते समय उसके दिल में एक पादरी बनने की इच्छा थी। जब वह गिरजाघर के अंदर भक्तिपूर्वक बैठा रहता था तो उसकी एकटक नजर पंखों पर रहती थी। उस नित्योपासना में वह अपने जीवन को समर्पित करने के लिए तत्पर था। वह प्रार्थनाओं में ईश्वर से केवल एक ही वर मांगता था और वह था पादरी बनने का।

दुर्भाग्य से उसकी शिक्षा पूरी नहीं हो सकी थी कि उसके चाचा ने मलबार जाने का निश्चय किया। अपने चाचा के साथ उसको भी मलबार जाना पड़ा।

जिस भूमि पर उसने जन्म लिया, उसे छोड़कर नई भूमि पर जाना पड़ा। नए स्थान पर उनके पारंपरिक रीति-रिवाज बदल गए। कंधों पर नई जिम्मेदारियां आ पड़ीं। परेशानियां आने पर भी उसने अपनी धार्मिक भावनाओं और आदर्शों को नहीं छोड़ा।

वह अपने पास हमेशा काले जिल्द की बाईबिल रखा करता था। उसकी चारपाई के ऊपर की दीवार पर ईसा मसीह की तस्वीर लगी हुई थी। वह उस तस्वीर के दोनों ओर हमेशा मोमबत्ती भी जलाया करता था।

वह धार्मिक ग्रंथों को कभी खरीदकर और कभी उधार लेकर एकग्रता के साथ रटा करता था।

"तू जिस मिट्टी से पैदा हुआ है उस मिट्टी में दुबारा मिलने तक अपनी इच्छाओं को तृप्त करते रहो। क्योंकि तुम्हारा जीवन क्षण मात्र का है और एक दिन तुम्हें मिट्टी में ही मिलना है।"

उसने इन पंक्तियों को हजारों बार रटा था।

सृष्टि के बारे में जो बातें बाइबिल में लिखी गई हैं, वे उसको बहुत रोचक लगीं।

"ईश्वर ने सृष्टि की रचना के लिए मनु और इड़ा को पैदा किया। उनको यह आशीर्वाद दिया है कि तुम फूलो-फलो। तुम अपनी पैदावार इतनी बढ़ाओ कि इस पूरी धरती पर फैल जाओ। सारी पृथ्वी पर अपना कब्जा कर लो। तुम जल, थल और नभ के सभी प्राणियों पर अपना शासन कर लो।"

ईश्वर ने उन्हें यह भी बताया कि "इस पृथ्वी पर पैदा होने वाले सारे पौधे और पेड़ों का उपयोग करो। जल, थल और नभ के सारे प्राणी खाने के लिए हैं। यहां तक कि पेड़-पौधों के पत्ते भी।"

अंतोणी बाइबिल के उक्त उपदेशों को पढ़कर खेतों की ओर नजर फेरते हुए विचारों में डूब गया। चांदनी रात में डूबा-पहाड़ी का प्रत्येक पेड़-पौधा आदि धार्मिक उपदेशों को रट रहा था। इस पृथ्वी का ईश्वर ने अपने बगीचे के रूप में निर्माण किया है।

मनुष्य के यौवन की वयः संधि का काल बहुत नाजुक होता है। इस उम्र में हवा का झोंका मनुष्य के जीवन को बदल सकता है। यदि आदमी धार्मिक प्रवृति का हो तो वह आध्यात्मिक या दार्शनिक हो सकता है। अंतोणी को स्त्री-प्रेम से बहुत नफरत थी। उसे स्त्रियों से बहुत नफरत थी। उसे केवल धार्मिक प्रवचनों और उपदेशों में रुचि थी। प्रत्येक मनुष्य के यौवन काल में जाने-अनजाने में स्त्रियों के विपरीत एक ऐसी अवस्था भी आती है जिससे उसे मानसिक कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ता है। नैसर्गिक परिस्थितियों से बल पाकर यह मानसिक कठिनाइयां बढ़ भी सकती थीं। कभी-कभी जीवन के कटु अनुभवों, भावी सुखों का प्रलोभन और धोखे के कारण ये मानसिक कठिनाइयां धीमी होकर बुझ भी सकती थीं। आदि शंकराचार्य और विवेकानंद स्वामी प्रथम प्रकार के पुरुष थे। अंतोणी भी उन्हीं के पदचिह्नों पर चल रहा था। पहले तो उसके कोई दोस्त नहीं थे और फिर ऐसे तो कोई थे ही नहीं जो उसे गलत रास्ते पर ले जाएं।

उस पहाड़ी प्रदेश में ऐसा कोई फल भी नहीं जो उसने ईश्वर के लिए छोड़ रखा हो।

जैसे-जैसे दिन ढलता जाता था, अंधेरा बढ़ रहा था। वह उस बांस की झोंपड़ी में बैठकर अंधेरे में डूबे हुए जंगल को देख रहा था। गीदड़ों की आवाजें ऐसी लगती थीं मानो भटकती हुई आत्माओं की आवजें हों। वह जंगल एक नरक जैसा लगता था। जंगल के सामने की पहाड़ी पर, खेत की दूसरी तरफ एक मकान के अंदर एक जलता हुआ दीपक दिखाई दे रहा था। वह मकान कृष्णन नंबियार का था। अंतोणी प्रायः खेती के औजार उधार लेने अथवा दूध खरीदने के लिए उस घर में आया-जाया करता था। लेकिन उसने बुजुर्ग कृष्णन नंबियार को कभी देखा तक नहीं। वह कारियाट्ट कुरुप्प का मुख्तार था। वे महीने में कम से कम बीस दिन जंगल के खेतों में या शिकार में मस्त रहते थे। उस मकान में नंबियार की युवा भतीजी माधवी, एक बुढ़िया और दो-तीन नौकरानियां रहती थीं। अंतोणी, माधवी से बातचीत किया करता था। माधवी, अंतोणी से तिरुवितांकूर में उसके गांव के जीवन, रीति-रिवाजों और उसके परिवार के बारे में पूछने में बड़ी दिलचस्पी लेती थी। वह भी सीधेपन में उसे सब कुछ बता देता था जो वह पूछती थी। उस युवती के उच्चारण की ग्राम्य भाषा ने उसके मन को प्रभावित कर दिया। उस युवती के संबंध में उसको और कुछ भी सोचने की फुरसत नहीं थी।

माधवी, कभी-कभी दूध का लोटा भरकर अंतोणी की झोंपड़ी में रख आया करती थी। वह नौकरानियों के हाथ शहद वाले कटहल से बनाई गई खीर, मालपोआ आदि भी वहां भेजा करती थी। वह झोंपड़ी के आंगन में पड़ी हुई चारपाई पर सोने से पहले बाइबिल में दी गई प्रार्थना के आरंभ के वाक्य "स्वर्ग में रहने वाले हे ईश्वर...." का उच्चारण किया करता था। उसके पास ही एक बंदूक और लालटेन भी रखी होती थी।

जब वह सोने लगता था, तब भी माधवी के घर का दीपक जलता हुआ दिखाई देता था।

अंतोणी हमेशा सवेरे लगभग साढ़े तीन बजे ही उठ जाया करता था। उस समय ढलते चांद की चांदनी पहाड़ों और खेतों को चांदी की तरह चमकाती थी। चांदनी रात में छत पर ताड़ और केले के पत्तों पर ओस गिरती दिखाई देती थी।

ऐसी ठंड में अंतोणी कपड़ा ओढ़कर लालटेन के सामने बैठकर बाइबिल पढ़ा करता था। उस समय दूर से रोने की एक अस्पष्ट आवाज सुनाई पड़ती थी। यह रोने की आवाज उस समय आती थी जब माधवी के कुएं से पानी निकालते समय रस्सी और लकड़ी आपस में रगड़ा करती थीं।

तेईस

उस प्रदेश में अशांति छाई हुई थी। कहीं न कहीं छीना-झपटी होती ही रहती थी। कई ईसाई गले तक शराब पीकर नशे में गालियां बकते हुए रास्तों पर घूमते रहते थे। ऐसी अवस्था में औरतें घर से बाहर कैसे निकलतीं ?

नए बासिंदों के रहन-सहन के तरीके पुराने बासिंदों के लिए मजाक का विषय बने हुए थे।

किसी चेट्टन को अकेले देखकर बच्चे उसका मजाक उड़ाते थे। बच्चे सफेद लंबी दाढ़ी और काले कपड़े वाले ईसाई पादरियों का भी मजाक उड़ाते थे और कहते थे: "क्यों, यह पादरी है या शैतान ?" पादरी बच्चों को देखकर खड़ा हो जाता था और उनको उपदेश देने लग जाता था :

"प्यारे बच्चो ! किसी का मजाक उड़ाना पाप है जो बच्चे किसी की हंसी उड़ाते हैं उनको नरक में जाना पड़ता है और उन्हें वहां पर चार सिरों वाला कुत्ता काटता है।"

वहां के बासिंदे उन चेट्टन और चट्टती को देखकर हंसते थे जिनके गले में क्रास होता था और उनकी स्त्रियां कानों में मोटे-मोटे आभूषण पहने रहती थीं तथा कमर में पंखा बंधा रहता था।

कुंजाण्डी बढ़ई तोम्मन चेट्टन की झोंपड़ी में लकड़ी की कुर्सी बेचने गया था, लेकिन वह नाक बंद कर थूकते हुए लौट रहा था। वह नाक-मुंह से सांस तक नहीं ले पा रहा था। उसको ऐसी हालत में देखकर कणारन गाड़ीवान ने उससे पूछा, "क्या हुआ साथी ? क्या बात हुई ?"

कुंजाण्डी बढ़ई ने थूकते हुए कहा, "जब मैं तोम्मन चेट्टन की झोंपड़ी में गया तो मैंने वहां देखा कि वे लोग गाय का गोश्त खा रहे थे।"

"अरे, केलन की सफेद गाय मर गई थी। केलन ने उसको जमीन में दफना दिया था। इन ईसाइयों ने उस दफनाई हुई गाय को जमीन से खोदकर निकाल लिया और गोश्त काटकर सुखाने लगा। अरे भाई ! तुमने भी उसमें से थोड़ा सा चखा है क्या ?"

"ये ईसाई जानवरों के समान हैं क्या ?" कुंजाण्डी थूकने लगा।

"ये लोग चूहों को भी खा जाते हैं।" कणारन ने कहा।

"ये लोग शायद आदमियों को भी खा जाएंगे।"

"मौका मिलने पर ये लोग उसके लिए भी नहीं हिचकेंगे।"

कणारन गाड़ी चलाते हुए एक ओर और कुंजाण्डी थूकते हुए दूसरी ओर चले गए।

नए वासिंदों में अधिकांश लोग गरीब थे। उनके पास जितना भी धन था उन्होंने सारा का सारा खेती-बाड़ी में खर्च कर दिया था। वे आदमी और औरतें बहुत परिश्रमी थे और आपस में मिलकर बहुत काम करते थे। परिश्रम के लिए सेहत जरूरी है और सेहत को ठीक रखने के लिए अच्छी खुराक भी जरूरी है। फिर भी उनको पौष्टिक भोजन नहीं मिलता था, क्योंकि वे गरीबी की स्थिति में दिन गुजार रहे थे, मछली और गोश्त खरीदने के लिए उनके पास रुपया नहीं था। सूखी मछली तक खरीदना मुश्किल था। चावल डेढ़ रुपए सेर के भाव से बिकता था। खाने की सामग्रियों में कोई परिवर्तन नहीं था और वे बिल्कुल पौष्टिक नहीं थीं। बच्चे खुजली और सूखा रोग के कारण बेचैन थे। पौष्टिक भोजन न मिलने से बच्चों के पेट बढ़ गए थे और शरीर सूख गए थे। बड़े-बूढ़ों को पीलिया की बीमारी हो गई। ये लोग गाय की लाश और जमीन पर रेंगने वाले सारे प्राणियों को पकड़कर खाने लगे।

उनका मनोरंजन का साधन स्त्रियों के साथ केवल मैथुन था।

उन पहाड़ियों के बीच ईसाइयों की झोंपड़ियों की संख्या बहुत बढ़ गई थी।

कुछ लोग खेती के अलावा किराना और चाय की दुकानें भी चलाने लगे। कोच्चुवर्की ने वहां 'चेरु पुष्पविलासम्' नाम का एक होटल खोल दिया था। चाक्को ठेकेदार बन गया। इट्टुप्प ने चटाई, टोकरी, कपड़े आदि घरेलू सामान की दुकान खोल ली। पांधाडी तोमस ने अपने कमरे के बाहर होम्योपैथी डाक्टर का बोर्ड लगा रखा था।

चौबीस

चात्तु ने देश भर में यह खबर फैला दी कि पोल ने उसको पुरस्कार में एक नई धोती दी है।

"बहुत दयालु हैं ये मालिक लोग। बच्चों के समान बात करते हैं।" चात्तु ने उन ईसाइयों के बारे में बहुत अच्छा प्रचार किया।

पंद्रह दिन बाद पाप्पच्चन ने चात्तु से पूछा, "पोल मालिक के यहां काम करने आओगे ? मजदूरी प्रतिदिन एक रुपया मिलेगी।"

चात्तु ने सारा दिन उसके विषय में सोचा। दूसरे दिन बीमारी के बहाने चात्तु अपने मालिक के यहां काम पर नहीं गया। तीसरे दिन भी वह काम पर नहीं गया। चौथे दिन बड़े सवेरे ही चात्तु फावड़ा लेकर पोल मालिक के बगान

में काम करने के लिए गया।

काम समाप्त होने पर उसी दोपहर को पाप्पच्चन ने चात्तु के हाथ में एक रुपए का नोट थमा दिया।

दूसरे दिन चात्तु के साथ चार और आदमी भी काम पर आए।

चारों तरफ यह खबर फैल गई,'पोल मालिक की पहाड़ी पर काम करने वालों को एक रुपया मजदूरी के अलावा दोपहर का भोजन भी मिलता है।'

इस खबर के फैलने के बहुत-से लोग पोल जमींदार के यहां काम करने के लिए आकर्षित हुए।

पोल के 'बड्लाम' बगान में काम करने बहुत-से लोग आने लगे। वे लोग पुराने जमींदार को छोड़ने लगे और नए मालिकों की शरण में आने लगे। देशी हिंदू जमींदार लोग परेशान होने लगे। फिर भी उन जमींदारों ने मजदूरी नहीं बढ़ाई। वे केवल समय का इंतजार करते रहे थे कि यह आकर्षण कितने दिन चलता है।

दो हफ्ते बाद 'बड्लाम' बागान के मजदूरों को दोपहर में भोजन देने की व्यवस्था बंद हो गई।

पाप्पच्चन ने मजदूरों को समझाया कि "राशन का चावल नहीं मिल रहा है। जब राशन का चावल मिलेगा तभी भोजन दिया जा सकता है।"

उस दिन उनको केवल मजदूरी ही मिली।

एक महीना बीत गया।

पाप्पच्चन जब एक दिन सबको मजदूरी बांट रहा था। जिन मजदूरों को मजदूरी मिली, वे पैसे भी गिनने लगे। उन्हें कुछ संदेह हुआ तो वे दुबारा उन पैसों को गिनने लगे। वे लोग उन पैसों को हाथ पर रख पाप्पच्चन को कहने लगे, "ये केवल छः आने ही हैं।"

"ठीक है छह आने ही दिए हैं।" पाप्पच्चन कठोर स्वर में बोला।

"क्यों, मालिक ! मजदूरी तो एक रुपया है ?"

"नहीं। अब केवल छह आने ही मिलेंगे। मरच्चीनी का दाम कम हो गया है। इसके अलावा तिरुवितांकूर से दो सौ मजदूर भी आ रहे हैं। कल या परसों तक वे यहां पहुंच जाएंगे। यदि आपको यह मजदूरी मंजूर हो तो काम पर आना। छह आने से ज्यादा एक पैसा नहीं मिलेगा।"

ऐसा कहकर पाप्पच्चन मुड़कर चला गया।

उस दिन मजदूर लोग उनको अनाप-शनाप बकते हुए चले गए।

वे बेचारे सोचने लगे कि आगे क्या होगा ? वे अब पुराने मालिकों को मुंह दिखाने लायक भी नहीं रहे। वहां की छत्र-छाया तो हमने ही खत्म कर दी।

कुछ लोग तो कहीं भी काम करने नहीं गए, अपनी झोंपड़ियों में ही बैठे रहे। पांच-छह लोग पुराने मालिकों के पैर पकड़कर रोए, छाती पीटने लगे और माफी भी मांगी। वे वहीं दुबारा काम में लग गए। कुछ लोग अपनी किस्मत पर निर्भर रहकर छह आने पर ही पोल की पहाड़ियों पर काम करते रहे।

एक महीना बीत गया लेकिन तिरुवितांकूर से एक भी मजदूर मलबार में नहीं पहुंचा। पाप्पच्चन एक बेंत की छड़ी लेकर मजदूरों के बीच में घूमता था और एक मिनट के लिए भी मजदूरों को आराम नहीं करने देता था।

"हरामजादो, बेकार खड़े हो। वहां खोदो, वहां फावड़ा चलाओ। कुत्तो, मैं तुम लोगों की हड्डी तोड़ डालूंगा।" इस तरह पाप्पच्चन गुर्राता था।

उसने उन बेचारों की पीठ और पैरों पर बराबर बेंत मारना शुरू किया। वे सब सहन करते रहे। वे अपना रोना कहां रोएं ? पाप्पच्चन ने उन तिरुवितांकूर वालों की असलियत का परिचय उन बेचारे गरीब मजदूरों को खूब कराया।

पच्चीस

मरियम संदूक में अपने पुराने सामान को ठीक-ठाक करके रख रही थी। उसी बीच उसको एक नया पोस्टकार्ड मिला। उसमें उसकी मामी एलि का पता लिखा हुआ था।

वह सोचने लगी कि उसने पुराने गांव के रिश्तेदारों को अभी तक एक भी चिट्ठी नहीं भेजी है। सारा सामान पेटी में ठीक-ठाक करके रखने के बाद उसने हाथ में वह कार्ड ले रखा था और बरामदे में आकर मेरिक्कुट्टी को बुलाया।

जब मेरिक्कुट्टी पास आ गई, तो मरियम ने कहा, "एलि मामी को एक चिट्ठी लिखनी है।"

मेरिक्कुट्टी फर्श पर एक चटाई बिछाकर पटरी रखकर उस पर घुटने पर पोस्टकार्ड रखते हुए हाथ में एक पेंसिल ली और लिखने के लिए तैयार हो गई। उसने सबसे पहले कार्ड के ऊपर 'ईसा मसीह' लिखा। मरियम ने चिट्ठी में लिखने का ब्यौरा बताया, "एलि मामी की जानकारी के लिए मरियम लिखती है, बात यह है कि मलबार पहुंचने के बाद बच्चे, उनके पिता और मैं, सब लोग सुखी हैं। हमने इधर पांच सौ एकड़ जमीन खरीदी है और...।"

मेरिक्कुट्टी लिखना छोड़कर, सिर ऊंचा करके पेंसिल का कोना जीभ में लगाते हुए बीच में कहने लगी, "माताजी ! पांच सौ एकड़ नहीं हैं। वर्गीस चेट्टन ने कहा है कि केवल बीस एकड़ हैं।"

मरियम मेरिक्कुट्टी को घूरकर देखने लगी, "बेवकूफ लड़की ! चुप रहो। मामी यहां आकर खेत नापकर देखेगी क्या ? पांच सौ एकड़ ही लिखो। मामी को यह नहीं बताना कि हम यहां केवल थोड़ी-सी जमीन खरीदकर गुजारा कर रहे हैं।" इस प्रकार मेरिक्कुट्टी ने पांच सौ एकड़ ही बड़े अक्षरों में लिखा।

मरियम दोनों हाथ मोड़कर गोद में रखे हुए है। सोच-सोचकर पत्र लिखवा रही है—

"यहां के लोगों को खेतीबाड़ी के बारे में कोई जानकारी नहीं है। यहां खेत बहुत ज्यादा खाली पड़े हैं। यहां अच्छे किस्म की मरच्चीनी की कलम भी नहीं मिलती। वहां से आने वाले किसी के हाथ अच्छे किस्म की मरच्चीनी की कुछ कलमें...।"

"माताजी, और लिखने को जगह नहीं है।" मेरिक्कुट्टी असहाय भाव से पेंसिल मुंह में डालकर मुस्कुराने लगी।

मरियम अपनी बेटी को घूरने लगी, "क्यों री ! दो वाक्य लिखते ही कार्ड भर गया ?" वह अपने हाथ में कार्ड लेकर दोनों तरफ देखती रही। निराशा के साथ वह कहने लगी, "हाथी के सिर के सामने अक्षरों को बड़ा बनाकर लिखने से लड़की ने कार्ड का सर्वनाश कर दिया।" फिर गुस्सा काबू में न आने के कारण उसने मेरिक्कुट्टी की पीठ पर एक घूंसा मारा।

फिर निराशा के साथ मरियम, हथेली पर मुंह टेककर बैठी रही।

मरियम अपनी मामी को और भी कई बातें पत्र में लिखकर बताना चाहती थी। वह केवल पांच सौ एकड़ जमीन खरीदने की बात ही नहीं बताना चाहती थी बल्कि और भी कई बातें लिखवाना चाहती थी। 'उनका जीवन बड़े ऐशोआराम से बीत रहा है। बच्चों के पिता मात्तन आजकल एक बड़े बागान के मालिक हैं। उन्होंने एक नया बंगला बनवाया, जिसमें पंद्रह नौकर रोज काम करते हैं।' इस प्रकार मरियम ये सब बातें विस्तारपूर्वक अपनी मामी को लिखना चाहती थी, ताकि उसकी मामी के हृदय में ईर्ष्या पैदा हो। वह एलि मामी के परिवार की कुशलता तक नहीं पूछ सकी। उस नासमझ लड़की के खेल ने सारा काम चौपट कर दिया। मरियम ने यह भी सोचा कि पांच सौ एकड़ सुनकर बाकी अन्य बातों के बारे में मामी स्वयं अंदाजा लगाकर समझ लेगी।

उसने उस कार्ड को शहर जाने वाले एक आदमी के हाथ डाकखाने में डालने के लिए दे दिया।

मरियम मन ही मन यह सोच रही थी कि मामी चिट्ठी में पांच सौ एकड़ जमीन पढ़कर अचंभे में पड़ जाएगी। वह शायद किसी व्यक्ति के हाथ अच्छी किस्म की मरच्चीनी की कलमें भेज देगी। लेकिन दुर्भाग्यवश वह चिट्ठी उस समय मद्रास के एक डेड लेटर बाक्स में अचेतावस्था में पड़ी थी।

छब्बीस

तोषेकुन्नत परिवार के वयोवृद्ध चाच्चप्पन्न नंबियार संध्या समय, ईश्वर प्रार्थना करके उठे ही थे कि उनके भानजे कुंजिकृष्णन नंबियार घर लौट आए। जैसे ही चाच्चप्पन्न नंबियार आरामकुर्सी पर आकर बैठे कि उन्होंने जोर से पुकारा। "कुंजिकृष्णन"

कुंजिकृष्णन नंबियार वयोवृद्ध के पास आए और नमस्कार किया। वे विनम्रावस्था में सिर झुकाकर उनके सामने खड़े हो गए।

"तू कहां से आ रहा है ?" वृद्ध व्यक्ति ने गुस्से भरी दृष्टि से भानजे को पांव से सिर तक घूरा।

"मैं चाक्को चेट्टन के घर गया हुआ था।" कुंजिकृष्णन नंबियार विनीत स्वर में बोला।

"देखो ! मैंने जैसे सोचा, उसी तरह ही हुआ है। अरे, तुम्हें शरम नहीं आती ? मैंने तुम्हें कितनी ही बार समझाया है कि तू इन चेट्टन लोगों से दोस्ती मत किया करो। अरे बेवकूफ ! मेरी बातों की कोई कीमत नहीं ? क्या यह वही चेट्टन है जो तुम्हारा गुरु है ?" बुजुर्ग गरजने लगे।

"मैं उसको अपने गुरु के रूप में नहीं, अपने दोस्त के रूप में मानता हूं।" कुंजिकृष्णन नंबियार ने विनीत भाव से उत्तर दिया।

"दोस्त ?" बुजुर्ग ने सिर हिलाया, "अच्छा, अच्छा ! बहुत अच्छे दोस्त को ढूंढ निकाला है। ये सब जानवर हमारे इस प्रदेश में केवल इस उम्मीद से आए हैं कि इस प्रदेश का सर्वनाश हो जाए। हमारा देश तो बरबाद हो रहा है। ये लोग अब यहां के पुराने बासिंदों का भी सर्वनाश करेंगे। ऐसा मालूम पड़ता है।"

"मामाजी ! आपका उन सबके लिए बुरा बोलना ठीक नहीं है। दुनिया के सब समाजों में अच्छे लोग भी हैं और बुरे लोग भी हैं।"

"यह बात इन बदमाशों के बारे में लागू नहीं है। ये सबके सब लुटेरे और बदमाश हैं। उनके पास तक नहीं जाना चाहिए। हो सकता है कि इन सबसे अपनी कमर में कटारें और छुरियां छिपाकर रखी होंगी।"

कुंजिकृष्णन नंबियार को हंसी आई।

"ऐसा मालूम पड़ता है मामाजी कि आपने इन सबकी कमर टटोली है। मामाजी, आप अपनी कमर में कभी-कभी कटार बांधकर इधर-उधर क्यों घूमते हैं ?"

"मैं आत्मरक्षा के लिए कभी-कभी कटार अपनी कमर में बांधता हूं।"

"ठीक ! वे भी इसी प्रकार आत्मरक्षा के लिए कटार बांधकर घूमते होंगे। अनजान जगह है न ? उनको क्या मालूम है कि कब और किस जगह मुसीबत आ जाए।"

"मैं पूछता हूं कि वे इस प्रदेश में क्यों आए ?"

"जीवन के कष्टों ने शायद उनको इस ओर भगाया होगा। मामाजी, आप ही कहा करते हैं कि जब मैसूर के सुल्तान ने मलबार पर आक्रमण किया, तब क्या-क्या दर्द भरी कहानियां हुई हैं ? पूर्वी पहाड़ी प्रदेशों में पूरे-पूरे आबादी वाले गांव थे। टीपू ने जब मलबार प्रदेश पर आक्रमण किया, तो सब दक्षिण के किसी न किसी भाग में जाकर बसे होंगे इस प्रकार आज ये दक्षिण भाग के ईसाई लोग यहां हमारे बीच में आ बसे हैं। पर मामाजी आप को एक चीज समझनी है। ये लोग यहां केवल चुपचाप बैठने के लिए नहीं आए हैं। ये लोग अपनी जिंदगी की पूरी कमाई इधर लाकर खर्च करके यहीं स्थायी रूप से रहने के लिए आए हैं। मुझे समझ नहीं आता कि आप जैसे अच्छे और बुद्धिमान लोग इन सबको बदमाश क्यों समझते हैं ?"

"नफरत इसलिए होती है कि ये लोग इस प्रदेश में चोरी और छीना-झपटी करते हैं। इन लोगों का केवल यही काम है।"

"मामाजी, मेहरबानी करके बिना आधार के आपको ऐसी बातें नहीं कहनी चाहिए। इन लोगों ने कितनी छीना-झपटी की है ? कितना डाका डाला है ? क्या आप बता सकते हैं ?"

"मैंने बहुत लोगों को ऐसा कहते हुए कई बार सुना है।"

"हां। कई लोग इस प्रकार कहते फिरते हैं। यह एक अच्छा मौका है। कोई भी गलत काम करता है तो वह सब इन चेट्टन लोगों के सिर पर ही थोपा जाता है। ऐसा प्रचार किया गया है कि यह वर्ग ही एक अपराधी वर्ग है। हमारे चात्तुक्कुट्टि नंबियार के बगीचे से रोज नारियल की चोरी हुआ करती थी। नंबियार ने आसपास के सब गांव में यह प्रचार कर दिया कि चेट्टन लोग ही नारियल की चोरी किया करते हैं। आखिर मात्तू नामक एक चेट्टन ने ही चोर को चोरी के माल सहित पकड़ा। मालूम है कि चोर कौन था ? चात्तुक्कुट्टी नंबियार का बेटा पद्मनाभन।"

"क्या ! ऐसी भी कोई घटना हुई है ? मैंने तो नहीं सुनी।"

"केवल यही नहीं है इस प्रकार की और भी कई घटनाएं हुई हैं। क्या इनके आने से पहले इस प्रदेश में चोरी और छीना-झपटी नहीं हुआ करती थी ? आज भी इनके बीच में जितने चोर हैं, उससे कहीं ज्यादा हमारे बीच में हैं। मुझे मालूम है, इधर आकर बसे लोगों में ज्यादातर निरीह और गरीब लोग हैं। कुछ चालाक लोग अपने जालों में फंसाकर इन गरीबों को यहां लाए हैं। ये गरीब

लोग अपनी जमीन-जायदाद बेचकर जो धन लाए थे वह सब यहां लगाकर बैठे हैं। इन गरीबों ने करोड़ों रुपया खर्च करके हमारे जंगलों को साफ किया। इस प्रकार जंगलों में खेती करने वाले इन लोगों को हमें धन्यवाद और सहानुभूति देनी चाहिए थी। कम से कम इसके विपरीत उन पर गलत आरोप तो नहीं लगाने चाहिए। हमें कम से कम यह सोचना चाहिए था कि इनके आने से हमारे पड़ोस में बाघ और गीदड़ के स्थान पर मानव समाज बस गया है।"

बुजुर्ग बहुत देर तक कुंजिकृष्णन नंबियार की बातों को सोचते रहे और फिर बोले, "क्या तुम्हारा बोलने का अर्थ यह है कि ये सबके सब पवित्र लोग हैं ?"

"आप स्वर्ग में ही ऐसा समाज नहीं पा सकेंगे जहां पर केवल पवित्र लोग ही हों। इसमें संदेह नहीं कि इनमें कुछ व्यक्ति बदमाश-लफंगे और धोखेबाज हैं। लेकिन मेरी प्रार्थना यह है कि इन चंद लोगों के नाम पर एक पूरे समाज को बदनाम नहीं करना चाहिए। मैं अपने दोस्त चाक्को की बात बताता हूं। वह अपने यहां एक स्कूल मास्टर था। वहां वह एक सुखी जीवन बिता रहा था। इस बीच कंजितोम्मन नामक एक बदमाश उसको फंसाकर यहां ले आया। उसने यहां कुछ खेत खरीदे। बाकी रुपयों को लेकर कुंजितोम्मन भाग गया। अब चाक्को बहुत पेरशानी में है। खेती करने के लिए रुपए नहीं। उसको कर्ज देने वाला कोई नहीं। वह वापस जा भी नहीं सकता। भोजन की कोई व्यवस्था नहीं। क्या वह मिट्टी खाएगा ? देखिए, उनके दुश्मन और शोषण करने वाले उनके ही बीच में हैं।"

"फिर चाक्को क्या कर रहा है ?" बुजुर्ग ने सहानुभूति के साथ पूछा।

"वह क्या कर सकता है ? वह अपने आपको कोसते हुए दिन काट रहा है। उसी चाक्को को आप कहते हैं कि वह कमर में कटार बांधकर घूमने वाला बदमाश है।"

"तो भी कुल मिलाकर उनका एक गंदा समाज है।" बुजुर्ग ने मुंह घुमाकर कहा, "मरी गाय का मांस सुखाकर खाने वाले लोग हैं।"

"इस स्थिति में उनके बारे में यह कहना उचित रहेगा कि वे बेचारे एकदम गरीब हैं। गरीबी से ही ऐसी गंदगी शुरू होती है। भुखमरी की स्थिति में आदमी ऐसा खाना भी खाने लगेगा जो कभी खाना नहीं चाहेगा। आपने अखबार में पढ़ा होगा कि बंगाल-अकाल के समय लोगों ने कुत्ते और बिल्लियों तक का मांस खाया था। ये लोग सब्जी और गोश्त खरीद नहीं सकते। अगर आप उनकी झोंपड़ियों में जाकर भीतर देखेंगे तब मालूम पड़ेगा कि ये कितने गरीब हैं। जंगल में सूखी लकड़ी बहुत मिलती है, इसलिए वे भोजन पकाकर खाते हैं। नहीं तो वे गाय का सूखा गोश्त भी बिना पकाए खा जाते।"

यह सब सुनकर चाच्चप्पन्न नंबियार का हृदय पिघल गया। वे बेचैन हो उठे।

"तुम जाकर खाना खाओ।" ऐसा कहकर भानजे को भीतर भेज दिया। फिर चाच्चप्पन्न नंबियार पुराना चश्मा पहनकर भागवत पढ़ने लगे।

सत्ताईस

बरसात शुरू हो गई। पहाड़ी के गड्ढों और तराई में वर्षा का पानी भर गया। सूखे पत्ते पानी में सड़ने लगे।

उसके साथ-साथ मलेरिया भी शुरू हो गया।

नमी और ठंडी वायु में वह विष बीजाणु फैलने लगे। वे पहाड़ियों से नीचे तराइयों की झोंपड़ियों तक मच्छर नामक हवाई जहाजों में सैर करने लगे। खेतों में मजदूर लोग कम आने लगे। झोंपड़ियों के भीतर लोग कराहते रहे।

"हूं, हूं, अरी थोड़ा पानी दो। मुझे पकड़ो। मेरा शरीर जोर से दबाओ।" चाक्कोच्चन लेटकर कांपने लगा। कुरियन को दो दिन से बुखार था। तीसरे दिन वह बिस्तर से उठ नहीं सका। उसका हृदय तड़पने लगा। गरम पानी पीता ही रहा, पर प्यास नहीं बुझी।

मरियम्मा भी मलेरिया के कारण कापने लगी। मरियम्मा के पति मात्तु ने झोंपड़ी की सारी चटाइयों और पुराने कपड़े खींचकर शरीर पर ओढ़ लिए, फिर भी ठंड से फर्श पर रेंगने लगा।

कई लोग मलेरिया से परेशान हो गए। जिनको मलेरिया नहीं हुआ, उन्हें यह सब देखकर एक तमाशा जैसा लग रहा था।

वर्की के साथ आया हुआ जेकब पांच एकड़ खरीदकर अपनी पत्नी एलिया और बेटे सैमन के साथ रहने लगा। एलिया की रिश्तेदार अनाथ आनिक्कुट्टी भी उनके साथ रहती थी। उस प्रदेश का सबसे अच्छा बागान उनका था। बगीचे के चारों ओर बाड़ लगाई हुई थी। उसके पास खेत था। खेत में तिल और केले की खेती थी। बगीचे में कई तरह की सब्जियों की खेती थी। बीच में घास की झोंपड़ी। सुंदर आंगन के किनारे-किनारे केले और पपीते की क्यारियां थीं। उस पर्णाश्रम में वे शांति और संतृप्ति के साथ रहते थे।

अंतोणी हर इतवार को गिरजाघर जाया करता था। पांच-छह मील दूर तक वे लोग—मर्द, औरतें और बच्चे अच्छे कपड़े पहनकर सामूहिक प्रार्थना में शमिल होने के लिए आया करते थे। उनके बीच में आनिक्कुट्टी को अंतोणी पहचान

लेता है। जब आनिक्कुट्टी बारीक सफेद कपड़ा सिर पर डालकर घुटना टेककर प्रार्थना करती थी तब अंतोणी सहानुभूति और प्रेम के साथ उसी को ही देखता रहता ,था। प्रार्थना के बाद लोग जब वापस जाने लगते तब आनिक्कुट्टी लज्जा के साथ निरीह भाव से अंतोणी की ओर देखकर, फिर सिर झुकाकर अस्पष्ट रूप से मुस्कुरा देती थी।

आनिक्कुट्टी की मनमोहक मुस्कुराहट, उसकी सुंदर काली आंखें, निष्पाप चेहरा अंतोणी के हृदय में एक अमिट छाप बन गई। उसने आनिक्कुट्टी में किसी देवी का प्रतिरूप देखा। उसको लगा कि आनिक्कुट्टी के चेहरे के चारों ओर एक प्रकाश चक्र है। काले रंग की बाइबिल को छाती से लगाए, एक छोटे बच्चे के हाथ को पकड़ सिर झुकाए धीरे-धीरे जब वह जाने लगी तो उस पवित्र कन्या को अपना जीवन-साथी बनाने के लिए उसने इच्छा प्रकट की।

एक दिन गिरजाघर से लौटते समय वह छोटा बच्चा दौड़कर आया और उसने अंतोणी का हाथ पकड़कर कहा, "आनि दीदी ने कहा है कि अगर पढ़ने के लिए उपन्यास वगैरह है तो दे दो।"

अंतोणी के पास उपन्यास या कहानी की किताब नहीं थी। उसने अपना संदूक खोलकर कुछ धार्मिक पुस्तकें और प्रवाचकों का इतिहास आदि आनिक्कुट्टी को पढ़ने के लिए भेज दिए।

अट्ठाईस

उस दिन शाम को बारिश खत्म हो गई। आसमान अब भी बादलों से घिरा हुआ था। पेड़ों की पत्तियों से बूंदें टपक रही थीं।

बारिश से भीगे पेड़ों के ऊपर लाखों जुगनू टिमटिमाने लगे। वह प्रकाश राशि एक साथ चमकती और बुझती। अंधेरे से भरा पहाड़ी प्रदेश जुगनुओं की प्रणयलीला की रोशनी में गंधर्वलोक जैसा चमकने लगा। वे एक साथ चमकते-चमकते, बुझते-बुझते फिर भी चमकते। उस प्रणय तांडव को थकावट नहीं होती, रोशनी धीमी नहीं होती, चमकने की लय बराबर जारी रहती।

इस प्रकार बरसात की रात लाखों हीरों की मालाएं पहनकर नाच रही थी।

अंतोणी, अपनी झोंपड़ी के बरामदे में चिंतामग्न होकर बैठा था।

एकदम दो मुलायम हथेलियों ने पीछे से उसकी आंखों को ढक लिया। वह चौंक पड़ा। फौरन उसने बाएं हाथ से बंदूक को और दाएं हाथ से उन मुलायम

हथेलियों को पकड़ा। वहां कंगन की आवाज भी सुनाई पड़ी।

कंगन वाले हाथों को अपनी आंखों से जबरदस्ती अलग करके उसने मुंह ऊपर करके देखा।

माधवी मुस्कुराती हुई पीछे खड़ी थी। अंतोणी कूदकर खड़ा हो गया और माधवी को घूरने लगा। उसको यह सूझा नहीं कि क्या कहना है। उसके मन में केवल यह भाव पैदा हुआ कि अब कोई भयानक घटना होने वाली है।

"साहब ! यहां क्या सोच रहे हैं ?" बच्चों के भाव में माधवी पूछने लगी। उस प्रश्न की मिठास ने अंतोणी को ठंडा कर दिया।

"मैं उन जुगनुओं को देख रहा था।" अंतोणी ने कहा। तब भी वह माधवी को संदेह भरी दृष्टि से देख रहा था। थोड़ी देर बाद उसने पूछा, "माधवी, अब यहां आने का कारण ?"

"मुझे अंतोणी के पास आने की इच्छा हुई। बस ! क्या अंतोणी के पास आ नहीं सकती ?"

"मैंने ऐसा नहीं कहा।" अंतोणी ने लालटेन की बत्ती को बढ़ाया।

माधवी का रूप निखर उठा। लाल रंग का तंग ब्लाउज, एक सुंदर सफेद धोती। धोती और ब्लाउज के बीच सुंदर पेट, कदली केले की कोंपल के समान दिखाई पड़ा। सुरमा लगाए हुए काली सुंदर आंखें, लाल-लाल होंठ, काले सुंदर सिर के बाल पर्दे के समान खुले पड़े हैं। वह ऐसे मालूम पड़ती थी जैसे कोई नाटक की नर्तकी हो। एक अकारण डर उसके मन में पैदा हुआ।

"मैंने यही पूछा था कि माधवी, अब इधर आने का कोई विशेष कारण है ?" अंतोणी की हिम्मत उसके मुंह की ओर देखने की नहीं हुई। इसलिए उसके पांव की ओर देखते हुए कहा। माधवी ने जवाब दिया, "अंतोणी यहां अकेले रहता है, यही एक विशेष कारण है।"

इसका व्यंग्यार्थ क्या है ? अंतोणी को यह नहीं सूझा कि आगे क्या कहना है।

नीरवता ! उस निःशब्दता में उसका डर एक पिशाच के समान बढ़ने लगा।

माधवी का लौटने का विचार नहीं था। माधवी उसके पास उस चारपाई पर बैठ गई।

अंतोणी परेशान हो उठा। अंतोणी को उसके मुंह की ओर देखने की या उसको वहां से जाने को कहने की हिम्मत नहीं हुई। वह उन पेड़ों की ओर देखने लगा जिनमें लाखों-लाखों जुगनू जगमगा रहे थे। बिजली और मिट्टी की संतान जैसे उन जुगनुओं को माधवी भी देखने लगी। उसको देखते हुए कहने लगी, "बहुत सुंदर दृश्य है।"

"मालूम है, वह क्या है ?" अंतोणी ने पूछा।

"जुगनू।"

"जुगनू हैं। पर मालूम है, वे क्या करते हैं ?"

"जगमगा रहे हैं।"

"वे क्यों ऐसे जगमगा रहे हैं ?"

"उनके मन में ऐसा करने की इच्छा हुई, इसलिए...।"

"ऐसा नहीं है। वे प्रेम-नृत्य कर रहे हैं।"

"प्रेम-नृत्य !" माधवी हंसने लगी।

"हां ! हम जो दृश्य देख रहे हैं, वह उनका प्रेम-नृत्य है।"

जुगनुओं के प्रेम-नृत्य के बारे में अंतोणी ने एक लेख पढ़ा था। उसको याद करते हुए कहा।

"हां, रात भर का विशाल प्रेम-नृत्य। हरेक जुगनू अपनी प्रेमिका को आकृष्ट करने के लिए रोशनी दिखाती है। उसके बदले उसकी प्रेमिका भी ऐसा करती है। इस प्रकार वह प्रेम-नृत्य जारी रहता है। आखिर सवेरा होने के पहले वे सब एक साथ...।"

आखिर का शब्द अंतोणी ने निगल लिया।

"वे सब एक साथ क्या करते हैं ?" माधवी एक नटखट लड़के के भाव में पूछने लगी।

"वह एक गंदा शब्द है। मैं नहीं कहूंगा।" अंतोणी सिर हिलाकर नीचे देख कर बैठ गया।

माधवी हंसने और सोचने लगी। यह एक नई जानकारी है। जुगनुओं को एक साथ चमकते हुए उसने कई बार देखा है। पर उसमें मोहब्बत और प्रेम की बात थी, उसको पता नहीं था। अब एक नए जोश से वह उस प्रणयोत्सव को देखने लगी।

प्रेम-नृत्य के साथ वे कीड़े अब भी जगमगा रहे हैं। सब पहाड़ियों पर वे जगमगा रहे हैं। आसमान के छह सात तारे धुंधलाकर चमक रहे थे। माधवी ने मुंह मोड़कर अंतोणी की ओर देखा। लज्जाभरी मुस्कुराहट होठों के बीच छिपाते हुए उसने अंतोणी से पूछा, "इस नर जुगनू के समान अंतोणी भी कभी किसी औरत की ओर जगमगाया है ?"

वह उस मुस्कुराहट को बढ़ाते हुए अंतोणी की ओर घूरने लगी। उसकी आंखें तेजी से हिलने लगीं। उसकी आंखें जुगनुओं के समान चमकने लगीं।

अंतोणी ने उसको देखा। उसको ऐसा लगा कि वे आंखें उसके कलेजे की ओर पंख फैलाए उठकर आ रही थीं। एक चमगादड़ उस झोंपड़ी के बरामदे में कई चक्कर काटकर अंधेरे में ओझल हो गया।

"माधवी, जल्दी से यहां से चली जा।" अंतोणी ने हिम्मत बांधकर कहा,

"असमय है। और इस समय चाचाजी आ जाए तो...।"

"आ जाएं तो...।" माधवी ने आंखें हिलाते हुए पूछा।

"तुम एक औरत हो न ?"

"ओ, हो ! यह बात कम से कम अब तो समझ लो।"

अंतोणी ने उसके होठों की ओर घूरकर देखा। उसके सुंदर, मुलायम होंठों से इतने तेज शब्द कैसे निकलते हैं ?

माधवी उठी।

"तब तो, साहब, मैं जाऊंगी।"

"डर लगता हो तो थोड़ी दूर मैं भी साथ आऊं ?"

"अब तो केवल अंतोणी को ही डर लगता है न ?"

वह मुंह मोड़कर, गला झटककर आंगन में उतरकर केलों की झाड़ियों में ओझल हो गई।

इस प्रकार वह दृश्य खत्म हुआ। उसी समय बहुत दूर जोण के बंगले में पोल, वर्गीस, चेरियान और वर्की ताश के खेल में मगन थे। दस रुपयों के नोटों का ढेर मेज पर पड़ा था। खेल में जितने रुपए मिलेंगे, सबकी शराब मंगाकर पिएंगे। ऐसा निश्चय था।

ताशों के जोरदार खेल व सिगरेट के धुएं से कमरे में अंधेरा सा हो गया। विजय का शोरगुल होता है। नोटों का ढेर एक जगह से दूसरी जगह बदला जाता है। वैराग्य बढ़ता है। दुराग्रह बढ़ता है। करीब सवेरे तक वह खेल जारी रहा।

उस दिन वर्की के बटुए के तीन सौ रुपए निकालकर जोण दारू की बोतलें खरीदने शहर गया।

उनतीस

जब ज्यादा परेशानी हुई तब चाक्को को कुंजिकृष्णन नंबियार ने बचाया।

कुंजिकृष्णन नंबियार ने चाक्को को एक हजार रुपए दिए। इस प्रकार दोनों ने मिलकर खेतीबाड़ी शुरू की।

चाच्चप्पन्न नंबियार की अनुमति लेकर ही कुंजिकृष्णन नंबियार ने चाक्को के साथ खेतीबाड़ी का काम आरंभ किया। लेकिन उस प्रदेश के कई लोगों को यह अच्छा नहीं लगा। उन्होंने कुंजिकृष्णन नंबियार को समझाया, "साथी से सावधान रहना। तिरुवितांकूर का है।"

कुंजिकृष्णन नंबियार करारा जवाब दिया करता था, "चाहे नुकसान हो या लाभ हो, रुपए तो इधर ही पड़े हैं। चाक्को उनको तिरुवितांकूर नहीं ले जाएगा। अगर वहां ले जाएगा तो भी तिरुवितांकूर भी केरल के भीतर ही है न ?"

"हां ! हम भी देखेंगे।" पर वे लोग कुछ देख नहीं सके। चाक्को और कुंजिकृष्णन नंबियार की खेतीबाड़ी एक विजय थी। केवल मरच्चीनी बेचने पर उन दोनों को पांच-पांच सौ का लाभ हुआ। उन लोगों ने अपनी खेतीबाड़ी का काम और बढ़ाया।

चाक्को कभी-कभी चाच्चप्पन्न नंबियार के घर आने लगा। धीरे-धीरे बुजुर्ग चाक्को को प्रेम करने लगा। चाक्को को दुनियां के बारे में बहुत कुछ जानकारी थी। इसके अलावा खेतीबाड़ी के बारे में उसको अच्छी जानकारी थी। इन कारणों से बुजुर्ग उस पर आकृष्ट हो गया। कभी-कभी वे दोनों धार्मिक बातों के बारे में भी चर्चा करते थे। चाक्को बिल्कुल एक ईसाई था, पर दूसरे धर्मो के प्रति उसे ईर्ष्या नहीं थी। वह किसी बात के बारे में जानकारी प्राप्त करने और उसको दूसरे लोगों में बांटने में भी सक्षम था।

इस प्रकार चाच्चप्पन्न नंबियार की ऐसी स्थिति आ गई कि चाक्को को देखे बिना एक दिन भी चाच्चप्पन्न नंबियार को नींद नहीं आती थी। वे दोनों रात में आठ-नौ बजे तक कुर्सियों में बैठे-बैठे बात किया करते थे। फिर चाक्को विदा लेकर घर जाकर ईश्वर की प्रार्थना करने के बाद भोजन करके सोने लगता था। चाच्चप्पन्न नंबियार उस समय भागवत पारायण करने लगता।

तीस

गिरजाघर बन रहा था। उसके पास ही पुरोहित लोगों का घर था। नया सुंदर बंगला, चारों ओर सुंदर फुलवाड़ी। सामने की विशाल बैठक बहुत सुंदर है। खिड़कियों पर मोटे शीशे और उस पर नीले पर्दे लगाए हुए हैं। बरामदे में भी सुंदर पर्दे कहीं-कहीं लगाए हुए हैं।

बैठक के आगे पढ़ने का कमरा और विशाल ग्रंथालय है। उसके आगे शयनकक्ष हैं। उसके बाद भोजनालय, रसोईघर आदि हैं। उसके आगे नौकरों के कमरे हैं। रसोईघर के आंगन में मुर्गियों के लिए दरबा बनाकर रखा है। उसमें अनेक जाति की कई छोटी-बड़ी मुर्गियां हैं।

वन प्रकृति के पीछे के उस सुंदर बंगले में फादर सैमण, फादर चुल्लिपरंबन

और एक ब्रदर रहते थे।

भोजनालय में सफेद कपड़ा बिछाया गया। मेज के दोनों ओर वे भोजन के लिए बैठे हैं। उनके साथ दो अतिथि भी हैं।

प्लेट, कटोरियां, छुरी, चम्मच, कांटा इत्यादि मेज पर रखे हुए हैं। उसके सामने एक बोतल में दारू है। रोटी, मक्खन, बड़े-बड़े बरतनों में गोश्त करी, तले हुए गोश्त, आमलेट आदि रखे हुए हैं। सॉस, सूप, मेवे आदि भी बहुत ज्यादा हैं।

फादर सैमण ने चम्मच से सूप पीते हुए भोजन प्रारंभ किया। बाकी साथी भी खाने लगे। बकरे की जांघ मसाला लगाकर घी में पकाकर ढेर कर रखा था। उसमें से एक लेकर फादर चुल्लिपरंबन काटकर खाने लगा।

भाप में पकाए गए बकरे के कलेजे, घी में पकाए जीभ, मुर्गी के अंडे से बनाई गई बैल की आंख, कटलेट आदि की ओर पुरोहितों और अतिथियों के हाथ पहुंचे।

तले हुए गोश्त खाते हुए फादर सैमण ने अतिथियों से कहा, "यहां अच्छा गोश्त नहीं मिलता। हमारे प्रदेश के बकरों का गोश्त बहुत स्वादिष्ट है।"

एक मेहमान ने कहा, "तो भी बहुत स्वादिष्ट पकाया गया है।"

"चाक्को बहुत अच्छा बावर्ची है।" फादर सैमण ने गोश्त का टुकड़ा खाते हुए कहा, "वह हाथी-पहाड़ी में रहने वाले एक अंग्रेज का बावर्ची था। विदेशी भोजन बनाने में वह माहिर है।"

यह सुनकर बावर्ची चाक्को ने एक तला हुआ जांघ मेहमान की प्लेट पर तिरछा रख दिया। उसके मन की इच्छा यह थी कि पहले खाओ, फिर राय बताओ।

वहां से करीब दो मील दूरी पर एक पहाड़ी की तराई की एक झोंपड़ी में तोम्मन चावल पका रहा था। पास ही एक चटाई पर उसके दो बच्चे मरे हुए मेंढ़कों के समान पैर फैलाकर नंगे पड़े थे।

तोम्मन ईश्वर प्रार्थना के साथ अंगीठी जला रहा था। पर वह आग पकड़ती नहीं। कई बार 'ईसा' का नाम लेकर कोशिश करने पर भी अंगीठी में आग नहीं उठी। अंगीठी कुछ चिड़चिड़ाती आवाज के बाद फिर बुझ गई। जली नहीं। कई प्रयत्न करने पर भी जली नहीं, बुझी पड़ी रही। आखिर कुछ सूखे पत्तों में मिट्टी का तेल डालकर जलाया गया। अंगीठी जल उठी। कुछ देर के बाद चावल पक गए। चावल ठंडे होने के बाद बच्चों को जगाकर खाना खिलाया, बरामदे से छह साल का उसका बेटा भी आ गया। सब लोगों ने चावल में नमक डालकर खाया।

भोजन के बाद तोम्मन बच्चों को लेकर निकल पड़ा। बारिश भी शुरू हुई।

छह साल का औसेप और चार साल का इट्टुप कंधे से कंधा मिलाकर गले में हाथ डालकर चलने लगे। औसेप सिर पर छतरी के बदले केले का एक बड़ा पत्ता पकड़े हुए था। तोम्मन के कंधे पर केवल चार महीने का एक बच्चा सोया पड़ा था। तोम्मन के सिर पर टूटी-फूटी एक देशी छतरी थी।

उस बारिश में भी वे आगे बढ़ते रहे। पहाड़ी नदियों में लाल रंग का पानी बड़ी तेजी से बह रहा था। पहाड़ी झींगुरों की आवाज से कान फट रहे थे। पहाड़ी घासों से ढकी हुई पगडंडियों को पार करते हुए वे आग बढ़े।

आखिर वे फादर सैमन के बंगले के आंगन में पहुंच गए। बाहर, आंगन या बैठक में कोई नहीं था। तोम्मन संदेह के साथ बाहर आंगन में ही खड़ा रहा। थोड़ी देर में पानी जोर से बरसने लगा। बच्चों को लेकर तोम्मन बरामदे में पहुंचा।

तोम्मन उस बंगले को देखने लगा। वह मकान ऐसा बनाया गया है जिस पर कोई भी प्राकृतिक खतरा असर न कर सके। उस बंगले को देखकर तोम्मन के हृदय में ईर्ष्या पैदा हुई। जब उसके हृदय में यह भाव पैदा हुआ कि वह गलत सोच रहा है तो पश्चाताप के साथ उसने अपने आप कहा, "वे तो ईश्वर के अपने आदमी हैं न ? उन्हें हमेशा अच्छे ही रहने चाहिए।"

इट्टुप कराहने लगा। तोम्मन ने उसकी ओर देखा। उसकी आंखें लाल रंग की हो गई। मुंह काला हो गया और पैर कांप रहे थे।

तोम्मन ने इट्टुप के माथे और छाती पर हाथ रखकर देखा तो उसको जोर का बुखार था।

"पिताजी ! मैं लेटना चाहता हूं।" उसकी आंखें अधखुली थीं और कराह रहा था।

तोम्मन ने हताशा होकर चारों ओर देखा। जोरों से पानी बरस रहा था। तोम्मन ने बच्चे को कंधे पर उठाया हुआ था। उसने इट्टुप को गोद में लिटाया और उसके पैर थपथपाने लगा। औसेप के शरीर में हमेशा खुजली होती थी। इसलिए वह हमेशा हाथ, पैर और शरीर को नाखूनों से खुजाता रहता था। वह फादर सैमण के बगीचे के सुंदर गुलाब के फूलों को देखने लगा और शरीर को नाखून से खुजलाने लगा।

आधे घंटे के बाद फादर सैमण भोजन के उपरांत मूसल के टुकड़े के समान एक जावा सिगार मुंह में दांतों के सहारे दबाते हुए बैठक में जाकर एक आरामकुर्सी पर लेट गया।

गोद में से इट्टुप को उठाकर बाईं बगल में दबाकर तोम्मन उठा और बैठक के किवाड़ पर जाकर विनीत भाव से सिर झुकाकर खड़ा हो गया।

"तू कौन है ?" पुरोहित ने धुआं निकालते हुए पूछा।

तोम्मन ने अपनी दुखपूर्ण कहानी पुरोहित को सुनाई।

एक साल पहले वह तिरुवितांकूर के आराकुषि नामक गांव से मलबार आया था। गांव की जमीन-जायदाद बेचने पर उसको सात सौ ब्रिटिश रुपए मिले थे। उसका छोटा भाई चेरियान, उसकी बीवी और चार बच्चे उसके साथ आए थे। कुल मिलाकर सात लोग आए थे। यहां आकर उन्होंने बीस एकड़ जमीन खरीदी। उसमें एक झोंपड़ी भी बनाई और खेतीबाड़ी शरू कर दी। चार महीने बीतने से पहले ही उनका सबसे बड़ा बच्चा बुखार से स्वर्ग सिधार गया था। फिर दो महीने बाद उसका छोटा भाई चेरियान भी मलेरिया के बुखार में चल बसा। पिछले महीने उसकी बीवी भी प्रसव के समय इस संसार से चल बसी। जंगली सूअरों ने सारी खेती को तहस-नहस कर दिया। सब बरबाद हो गया। उसको भी मलेरिया बीमारी ने पकड़ लिया। सबसे छोटे बच्चे को दूध देने के लिए कोई उपाय नहीं। बहुत कर्ज भी हो गया था। भोजन कराने के लिए कोई रास्ता ही नहीं है। इट्टुप को भी बुखार शुरू हो गया था। अब ये लोग भी यहां रहकर मरना नहीं चाहते। वे वापस अपने गांव को लौटना चाहते थे। सहायता करने के लिए कोई नहीं है। जो उसकी सहायता करने वाले थे, वे भी खुद दुखी और परेशान हैं। फादर मेहरबानी करके एक सौ रुपए कर्ज देकर सहायता करें। एक मुसलमान से पचास रुपए कर्ज लिए थे, उसे अब वापस देने हैं। वह रकम वापस दिए बिना, मुसलमान तोम्मन को यहां से जाने नहीं देगा। बाकी पचास रुपए वापस गांव पहुंचेंगे।

तोम्मन की करुणाभरी कहानी फादर सैमण ने ध्यान से सुनी।

तोम्मन का शुष्क हृदय फादर की करुणाभरी आंखों में खटक रहा था। आंसू बहाते हुए तोम्मन ने अपनी दुखद कहानी समाप्त की, "ईसा मसीह को ध्यान में रखते हुए इस बेचारे को और बच्चों को बचाइए। अपने लोग सब इस मिट्टी के नीचे बरबस दब गए। यहां सब विष है। जहर ! जहर ! एक पल भी इधर से बच जाएं, उतना पुण्य है ?..."

तोम्मन की गोद में बैठा वह मेंढक जैसा बच्चा उसकी छाती से दूध पीने की कोशिश कर रहा था। इट्टुप बेहोशी की हालत में दूसरे कंधे पर बैठा है।

फादर ने अपनी सफेद दाढ़ी सहलाते हुए नीचे देखा और शांत भाव से कहा, "मैं रुपए कहां से दूं ? गिरजाघर का काम खत्म नहीं हुआ। जितने का हिसाब होता है, उससे चार गुना रकम चाहिए, तभी काम पूरा होगा। इस नए प्रदेश में कहीं से भी आमदनी का कोई स्रोत नहीं है। इसलिए जितना मिलता है, उसमें से एक-एक पैसा गिरजाघर के काम के लिए अलग रखा हुआ है। तू सृष्टिकर्ता पर विश्वास करके यहीं ठहर जा।"

तोम्मन का हृदय टूट गया। वह रोते हुए कहने लगा, "कैसे ? मैं फिर

भी यहां ठहरूं ? खेतीबाड़ी दुबारा शुरू करनी पड़ेगी। उसके लिए रुपए चाहिए। एक सेर चावल खरीदने के लिए भी रुपया नहीं है। एक छंटाक नमक मिलने का भी कोई उपाय नहीं। इस बारिश के समय मैं क्या करूं ? अपनी खेती छोड़कर दूसरी जगह मजदूरी करने की इच्छा है, पर एक फावड़ा उठाने की भी मुझमें ताकत नहीं...।"

"ईसा पर विश्वास करो। सब ठीक हो जाएगा।" फादर के पास कहने के लिए केवल इतना ही था।

बारिश खत्म हो गई। तोम्मन कंधे से लगे बच्चों को जोर से चिपकाकर और औसेप को हाथ से पकड़कर अपनी झोंपड़ी में वापस चला गया। निस्सहाय, निर्जीव तथा अनिश्चततावस्था में...अंधेरे में...डर में...। हांफते हुए उसने उस झोंपड़ी में प्रवेश किया।

बरामदे में पानी भरा पड़ा था। एक लंबा सांप फूस की बनी झोंपड़ी के दरवाजे के छेद से भीतर को रेंगते हुए घुस रहा था।

गिरजाघर का काम पूरा होने से पहले ही पास के शमशान का क्षेत्र बढ़ाना पड़ा।

मृतकों की संख्या बहुत ज्यादा बढ़ गई। उसके अनुपात में शमशान में क्रासों का नंबर भी बढ़ गया।

लकड़ी के एक नए क्रास के नीचे तोम्मन और पास के एक छोटे क्रास के नीचे इट्टुप लेटे हुए थे।

तोम्मन के छोटे बच्चे को एक जंगली गीदड़ उठाकर ले गया था। औसेप को फादर सैमण ने अनाथालय भेज दिया।

तोम्मन की झोंपड़ी और खेत पुरानी वन प्रकृति में ही विलीन हो गए।

इकत्तीस

रविवार का दिन।

मरियम ने मेरिक्कुट्टी और जोणी को नहलाकर नए कपड़े पहनाए। उसके बाद उसने भी स्नान किया। वह भी नए कपड़े पहनकर तैयार हो गई थी। उसके बाद सब मिलकर गिरजाघर को रवाना हो गए।

वह हर इतवार को बच्चों के साथ गिरजाघर जाती थी। गिरजाघर में वह प्रार्थना करती थी, "हे कन्या माता ! पवित्र माता मरियम ! हमारी विनीत प्रार्थना को स्वीकार कीजिए। मेरे बच्चों और उनके पिता को हमेशा कुशल पूर्वक रखने

की कृपा कीजिए। खेती को नुकसान और जंगली जानवरों से बचाइए। मेरे पति को सद्‌बुद्धि दीजिए। खेतीबाड़ी बढ़ने और अधिक खेत मिलने पर मैं पवित्र मरियम और प्रवाचकों को श्रद्धानुसार भेंट चढ़ाऊंगी। गिरजाघर में अपने नाम पर चांदी का एक क्रास भी चढ़ाऊंगी...।"

हां, संपत्ति बढ़ने पर गिरजाघर में चांदी का एक क्रास चढ़ाने के लिए मरियम की बहुत इच्छा थी। मन ही मन सोचती थी कि गिरजाघर के मंच पर मोमबत्तियों की रोशनी में वह क्रास हमेशा चमकता रहेगा। प्रार्थना में शामिल होने वाले सब उस चमकते हुए क्रास की ओर इशारा करके बताएंगे, "वह पल्लिपरंबिल मात्तन की बीवी का है।" मरियम की मृत्यु के बाद भी उस क्रास को देखकर मरियम की याद करते रहेंगे। भविष्य में जोणी और मेरिक्कुट्टी अपने बच्चों के हाथ पकड़कर गिरजाघर में आएंगे और अपने बच्चों को उस क्रास को दिखाकर समझाएंगे, "वह तुम्हारी दादी का चढ़ाया हुआ क्रास है।"

इस प्रकार गिरजाघर के प्रार्थना हाल के मंच पर लहूलुहान ईसा मसीह की मूर्ति है जिसके पीछे कन्या मरियम की तेजस्वी मूर्ति है। उनके शिष्यों के सामने मरियम द्वारा चढ़ाया हुआ चांदी का वह क्रास हमेशा-हमेशा के लिए चमकता रहेगा।

पर मात्तन के सिद्धांत अलग ही हैं। उसको चाहे कितना भी क्यों न समझाया जाए, उसके बावजूद वह कभी गिरजाघर में ही नहीं, उसके पास तक, नहीं जाता था। जिंदगी में मात्तन दो चीजों से डरता था—पुलिस वालों से और गिरजाघर से। पुलिस वालों को याद करते समय उनकी लाल टोपी और गिरजाघर को याद करते समय उसके ऊपर का क्रास उसको घूरा करते थे। बहुत साल पहले एक बार अपने गांव कुत्ताट्टुकुलम में एक पुलिस वाले ने बिना किसी कारण के मात्तन के मुंह पर घूंसा मारा था। उसी दिन से उसे पुलिसवालों के प्रति डर पैदा हो गया। उसका ऐसा दृढ़ विश्वास हो गया कि पुलिसवाले उसको कहीं भी देखेंगे तो उसके मुंह पर घूंसा मारेंगे। उसके बाद पुलिस का नाम सुनते ही मात्तन प्रेत के डर के समान भागकर ओझल हो जाता था।

ऐसी बात नहीं कि मात्तन ईश्वर पर विश्वास नहीं करता था, बल्कि उसे ईश्वर पर विश्वास से ज्यादा डर हो गया था। जिस प्रकार एक पिता अपने बच्चों को शरारत करने पर दंड देता है उसी प्रकार मात्तन भी ईश्वर से डरता था। अपनी गलतियों के डर से ईश्वर से डरता था। वह समझता था कि ईश्वर गिरजाघर में वास करता है इसलिए वह गिरजाघर से दूर ही रहता था। गिरजाघर से भी अधिक डर उसको गिरजाघर के ऊपर लगाए हुए क्रास से है। क्रास को देखकर उसके मन में ईसा मसीह के दो हजार साल पहले के महात्याग की याद नहीं आती, बल्कि उसको श्मशान भूमि और वहां के वासी प्रेतों की याद आती है।

पुलिसवालों की लाल टोपी का अर्थ वह अपने जैसे सामान्य और सीधी-सादी जनता का शोषण और परेशान करने की प्रवृत्ति समझता था और गिरजाघर का अर्थ वह मृत्यु का चिह्न समझता था।

अब धीरे-धीरे क्रास के प्रति उसका डर बदले की भावना में परिवर्तित होने लगा। वह जब किसी भी क्रास को देखता तो उसे गुस्सा आता और दांत पीसता था। साथ ही उस पर पत्थर मारने लगता था।

एक दिन मात्तन क्रास पर पत्थर उठाकर फेंक रहा था कि फादर चुल्लिपरंबन ने पीछे से उसको पकड़ लिया, "महापापी ! तू क्रास पर पत्थर मार रहा है ?" फादर ने मात्तन के हाथ से पत्थर छीन लिया और उसको घूरकर देखने लगा।

"मैं क्रास पर बैठे गिद्ध को भगा रहा था।" मात्तन ने निचले होंठ को ऊपर उठाकर मुंह को टेढ़ा करके दूर देखते हुए जवाब दिया।

"गिद्ध ? गिद्ध तो वहां दिखाई नहीं दे रहा है।" फादर उसको संदेह के साथ देखने लगा।

"मैंने उसको पत्थर मारकर भगा दिया; उसके बाद वह वहां कैसे दिखाई देगा ?" पुरोहित को फिर कुछ कहने को नहीं था।

"तू कहां रहता है ? तुझे मैंने कभी भी गिरजाघर में नहीं देखा।"

"मैं तो कलियनूमला में रहता हूं।"

"तू गिरजाघर में क्यों नहीं आता ?"

"मेरे पास गिरजाघर में आने के लिए कपड़े नहीं हैं।"

"ओहो ! तो मेरे साथ आ—मैं तुझे अपना पुराना कुर्ता दे दूंगा।"

पुरोहित और मात्तन आगे-पीछे चलने लगे।

"तू दूसरों के खेत में मजदूरी करता है या तेरी अपनी खेतीबाड़ी है ?" चलते-चलते पुरोहित ने पूछा।

"कुछ भी नहीं कर सकता।"

"क्यों ? तू बीमार है ?"

"हां।"

"क्या ?"

"पेट में दर्द है। सहन करना मुश्किल है।"

"कितने साल हो गए ?"

"पांच साल।"

"तू हर दिन गिरजाघर में आकर प्रार्थना कर। तेरी बीमारी ठीक हो जाएगी, क्यों ?"

जवाब नहीं। पुरोहित ने मुड़कर देखा। मात्तन की छाया तक वहां नहीं थी। वह दूसरे रास्ते भाग निकला और पुरोहित की आंखों से ओझल हो गया।

बत्तीस

रात में माधवी पूर्व की पहाड़ी की ओर कभी-कभी देखा करती थी।

अंतोणी की झोंपड़ी की रोशनी उसको परेशान करती थी। वह उस छोटे-से दीपक को कभी मुस्कुराहट के साथ तो कभी झुंझलाहट के साथ दीर्घ सांस लेकर और कभी असहनीय दशा में देखा करती थी। उस समय उसकी आंखों से आशाओं की तरंगें प्रवाहित होती थीं। उसी के साथ उसके मन में जो भावनाएं पैदा होती थीं, उसमें आनंद की आंतरिक तरंगें तड़प उठती थीं।

पर उस दीपक की रोशनी का महत्व माधवी के लिए कितना महत्वपूर्ण था उसको अंतोणी नहीं समझता था। अंधेरी और नीरव-निश्चल रात में उस पहाड़ी के कोने में अज्ञात, किसी के संदेश के समान वह दीपक जल रहा था।

यद्यपि अंतोणी ने दीपक के सामने बाइबिल पढ़ने के लिए खोल रखा था लेकिन उसके मन में कुछ और ही विचार उठ रहे थे। वह सोच रहा था।

"पुरोहित का पवित्र जीवन—वही मेरे जीवन का लक्ष्य है। मैं चाहता हूं कि मैं निःस्वार्थ भाव से ईसा मसीह के संदेशवाहक के रूप में गरीब और पापी लोगों की सेवा में लग जाऊं। यह जीवन एक संन्यासी जीवन है।" इतना सोचने पर वह ईसा मसीह की तस्वीर की ओर मुंह करके खड़ा हो गया।

"पापी लोगों के पाप मिटाने के लिए ईसा ने अपना खून बहाया है। मैं भी उनका ही अनुसरण करूंगा। हे ईसा ! मनुष्य के पापों को अपने कांटेदार ताज में स्वीकार करके जो त्याग का संदेश आपने दिया है, उस विचारामृत का कण इस छोटे गुलाम को भी दे देना।"

वह ईसा के चित्र के सामने सिर झुकाकर तथा आंखें बंद करके घुटने टेक कर प्रार्थना करने लगा।

पूर्वी पहाड़ी की उस झोंपड़ी में जल रहे दीपक के चारों ओर उस योजना के कामुक विचारों की तितलियां उड़-उड़कर आती हैं और अपने आपको उस दीपक पर न्योछावर कर देती हैं। लेकिन उस संन्यासी को इस सबका कुछ भी ज्ञान नहीं।

आंतोणी प्रार्थना के बाद, फिर पवित्र ग्रंथ को खोलकर पढ़ने लगा।

"तुम कभी भी अपने पड़ोसी की पत्नी के संबंध में मत सोचो। अपने पड़ोसी के घर, खेत-बगीचे, नौकर-चाकर तथा किसी भी चीज को प्राप्त करने की इच्छा मत करो...।"

उसने ऊपर सभी बातों को दुबारा पढ़कर दुहराया और उस पर विचार-मग्न हो गया।

पश्चिमी पहाड़ी पर उस समय भी वह दीपक जल रहा था। उसने देखा—वह प्रकाश बिंदु चैत्र नक्षत्र के समान था।

माधवी अभी तक सोई नहीं थी।

उस दीपक ने उसके हृदय में कई यादों को पुनः जगाया। अंतोणी ने जिन आध्यात्मिक विचारों को संजो कर रखा है, उसे एक अज्ञात अंतर्धारा हिला रही है। उसके मन में ऐसा लगा कि किसी गंदे कीचड़ भरे झील के किनारे के ताप वायु में वह दीपक जल रहा है और वह उसको गलत रास्ते पर ले जाकर गड्ढे में डालेगा।

वह सिर झुकाकर पढ़ता रहा।

यह मालूम नहीं है कि वह कितनी देर तक इस तरह पढ़ता रहा। उसने सिर उठाकर देखा तो पश्चिमी पहाड़ी के दीपक की आंखें मुंद गई थीं। आधी रात की चिड़ियां डालियों में शोरगुल मचाने लगीं।

आंतोणी भी सोने से पहले की आखिरी प्रार्थना करके बिस्तर पर कंबल ओढ़ कर लेट गया।

अपने दैनिक कार्यक्रमानुसार वह अगले दिन सवेरे ही उठा। मदमस्त चलने वाली प्रातः काल की वायु प्राकृतिक सौंदर्य को चार चांद लगा रही थी। चांद अब भी ओझल नहीं हुआ था। चांदनी चमक रही थी।

उसने दीपक जला रखा था और कंबल से केवल मुंह बाहर निकालकर किताब खोलकर पढ़ रहा था।

कुछ देर के बाद पश्चिमी पहाड़ी के कुएं से पानी खींचने की आवाज सुनाई पड़ी। उसका ध्यान उस कुएं की ओर बदला। केवल छाया ही दिख रही थी। बरामदे में रस्सी पर फैलाए हुए सफेद कपड़ों पर चांदनी पड़ने की छाया पपीते के पत्तों की छाया जैसी लग रही थी, ऐसा लग रहा था जैसे कोई शैतान हाथ हिला रहा हो।

ऊषा धीरे-धीरे फैलने लगी। चांदनी और कोहरे के कारण पहाड़ियों के ऊपर के हरे जंगल अब अदृश्य थे। उस धुंधलेपन में भी पश्चिमी पहाड़ी से धुआं उठ रहा था। वह धुआं माधवी की अंगीठी का धुआं था जिसे वह जला रही थी।

जैसे-जैसे वह धुंधलापन धीरे-धीरे हट रहा था, पश्चिमी पहाड़ी के कोने में बांसों के झुंडों के ऊपरी भाग के फूल मोर के पंखों के समान हिल रहे थे। उसी के पास माधवी की अट्टालिका थी। उसी के नीचे से वह धुआं उठ रहा था।

अंतोणी प्रातःकालीन स्वप्नों की तरह यह सब देख रहा था। सूर्य देवता आसमान में चढ़ने लगे।

जंगल और खेत ऐसे दिखाई देने लगे, जैसे आइने में प्रतिबिंबित हो रहे हों।

अंतोणी ने देखा कि दूर खेत से होते हुए एक सफेद रूप उसकी झोंपड़ी की ओर आ रहा था। यह देखकर अंतोणी की आंखें खुली की खुली रह गईं माधवी !

माधवी पहाड़ी पर चढ़ने लगी। वह झोंपड़ी के आंगन में जाकर खड़ी हो गई। उसके हाथ में एक लोटा दूध था।

अंतोणी की ओर देखकर जब वह मुस्कुराने लगी तो उसके दांत चमेली के फूलों की तरह चमक रहे थे।

"साहब, दूध नहीं चाहिए ?" अंतोणी से बोलचाल की भाषा में माधवी ने पूछा।

अंतोणी गंभीर मुद्रा में बैठा हुआ था। "दूध, रसोईघर में पतीले में डाल दो।" उसने बाइबिल का पृष्ठ पलटते हुए कहा।

माधवी रसोईघर में घुस गई। वहां सारे बरतन इधर-उधर बिखरे पड़े थे।

उसने एक मिट्टी के बरतन का ढक्कन खोलकर देखा। बासी चावल। दूसरे में पकी मरच्चीनी बची हुई पड़ी थी।

उसने सारे बरतनों को इकट्ठा करके साफ किया। रसोईघर को भी झाड़ू से साफ किया और अंगीठी जलाकर दूध गरम करने लगी।

अंतोणी को यह अनुचित लगा। वह बीच-बीच में रसोईघर देखने जाता और फिर बरामदे में आकर बैठ जाता।

रसोईघर के काम समाप्त करके लोटे को लेकर माधवी बाहर आई। अंतोणी ने धन्यवाद के भाव से उसकी ओर देखा। माधवी ने सोचा कि वह कुछ न कुछ बोलेगा, पर वह कुछ नहीं बोला। मूर्खों के समान ऐसे ही बैठा रहा।

जब वह आंगन में उतरी तो अंतोणी ने उसको बुलाया। वह मुड़कर खड़ी हो गई। "माधवी, कल से दूध नहीं लाना।"

अंतोणी ने नीचे देखकर हिचकिचाते हुए कहा।

"मैं नहीं लाऊं या दूध नहीं चाहिए। क्या मतलब ?" माधवी ने उसकी ओर तिरछी आंखों से देखकर पूछा।

अंतोणी को यह मालूम नहीं था कि क्या जवाब देना है। माधवी अंतोणी के जवाब की प्रतीक्षा किए बिना चलने लगी। फौरन उसकी आंख आंगन के पपीते के पेड़ के ऊपर पड़ी। उस पेड़ के ऊपर एक पहाड़ी कौआ एक पके पपीते को चोंच मार रहा था। उसने लोटे को नीचे रखा और चारों ओर देखने लगी। पास ही एक बांस की छड़ी पड़ी थी। उस बांस को उसने पेड़ के ऊपर तक उठाया। कौआ उड़ गया। उसने उस छड़ी से पपीते को तोड़कर नीचे गिरा

दिया। झुककर उस फल को हाथ में लेकर वह अंतोणी के पास गई।

अंतोणी ने ऐसा बहाना किया कि उसके आने के बारे में उसे मालूम ही नहीं था। वह घुटनों में मुंह छिपाकर चुपचाप बैठा रहा।

"अंतोणी ! छुरी है ?" उसने जोर से पूछा।

अंतोणी के बिस्तर के नीचे एक शिकारी छुरी पड़ी थी। छुरी उठाकर पपीते का छिलका उतारने लगी। उसे काटकर एक टुकड़ा खाने लगी।

"कौए ने जिस फल को चखा है उसका स्वाद अजीब ही है।" उसने फल को चबाते हुए कहा। फिर उसने एक टुकड़ा काटकर अंतोणी की ओर बढ़ाया।

"मुझे नहीं चाहिए" अंतोणी ने अपने मन में ही सोचा, लेकिन कहा नहीं। उसका मुंह खुला ही नहीं। उसने फल का वह टुकड़ा हाथ में लेकर अपने पास ही रख दिया।

माधवी ने एक टुकड़ा और खाया। "आंगन में पड़े फल को कौआ चोंच मारने लगा। तब भी अंतोणी को नहीं चाहिए, है न ?"

अंतोणी कुछ नहीं बोला।

"आपने फल क्यों नहीं खाया ? क्या वह वर्जित फल है ?" वह जोर से हंसने लगी।

उस हंसी से अंतोणी को गुस्सा आ गया। वह एक वेश्या-सी हंसी थी। माधवी के चेहरे की ओर देखने को उसकी हिम्मत नहीं हुई। वे आंखें !-उनमें उसको बेहोश करने वाला विष है।

वह एक डरपोक है। उसके मन की चारदीवारी से टकराकर पिघलाने वाली तरगें उस हंसी से स्पष्ट होती है। माधवी की मुस्कुराहट में पाप के प्रलोभन के संकेत स्पष्ट हो रहे हैं। मुझे सावधान रहना चाहिए। कल का पुरोहित है वह। "अच्छा, पुण्यात्मा ! फिर मिलेंगे।" वह लोटा हाथ में लेकर चलने लगी। "ओह ! सांप !" वह वहां रुक गई। एक नाग पपीते की जड़ से होकर आगे को रेंगता हुआ बढ़ रहा था।

उस दिन शाम हो गई।

कृष्णन नंबियार पूर्व दिशा के जंगलों में गया हुआ था। चार दिन के बाद ही वापस आएंगे। माधवी की मामी भोजन करने के बाद सोने चली गई। माधवी भी अपने कमरे में चली गई।

पूर्वी पहाड़ी का दीपक जल रहा था। माधवी ने खिड़की से उस ओर देखा। एक तारे के समान अंतोणी का दीपक जगमगा रहा था।

माधवी चुपके-चुपके कमरे से बाहर निकलकर दरवाजा अच्छी तरह बंद करके आंगन में उतर आई, वहां कुछ देर संदेह से खड़ी रही। फिर वह धीरे से सीढ़ियां उतरकर खेतों से होकर पूर्वी पहाड़ी की ओर चलने लगी।

खेत पार करके वह जंगल के एक किनारे पहुंची। एक बंदर की चीख सुनकर वह चारों ओर देखने लगी। जंगल के भीतर एक पेड़ पर बैठकर दो बंदर बार-बार शोरगुल करते हुए कूद रहे थे।

वह घबराकर कुछ देर वहीं खड़ी रही। उसको शक हुआ कि पास की झाड़ियों में बाघ चल रहा है। बिना बाघ को देखे, रात में बंदर ऐसा शोरगुल नहीं करते। साथियों को मुसीबत की सूचना देने के लिए बाघ के मार्ग को लक्ष्य करके डालियों के ऊपर ही ऊपर दुश्मन का पीछा करते हुए बंदर शोरगुल करते रहते हैं।

माधवी घबरा गई और वहीं खड़ी रही। चारों ओर जंगल था और अंधेरा ही अंधेरा था। आसमान पर काले बादल थे।

हिम्मत करके वह धीरे-धीरे आगे बढ़ती रही। बंदरों का शोरगुल जगल के भीतर दूर-दूर तक चला गया। वह जंगल को पार करके खुले भाग में पहुंच गई। अंतोणी की झोंपड़ी का दीपक एक बड़े नक्षत्र के समान दिखाई देने लगा। उसको ऐसा लगा कि मानो वह दीपक सारे विश्व में रोशनी फैला रहा है। उसके पहुंचने का लक्ष्य भी वही प्रकाश है। वह जंगल पार करके किसी प्रकार अंतोणी के खेतों में पहुंच गई। उसका हृदय तब आश्वस्त हो गया जब उसके पैर कप्पा के पौधों की जड़ों से टकराने लगे।

वह धीरे से पहाड़ी पर चढ़ने लगी। आखिर वह अंतोणी की झोंपड़ी के आंगन में खड़े पीपल की छाया में छिपकर खड़ी हो गई।

अंतोणी पलंग पर सिर झुकाए बैठा हुआ सामने बाइबिल खोलकर पढ़ रहा था।

"ईश्वर ने आदम को बुलाकर उससे पूछा—आदम ! तू कहां है ?

उसने उत्तर दिया—बगीचे में मैंने आपकी आवाज सुनी। मैंने अपने को इसलिए छिपाया कि मैं नग्न था।

ईश्वर ने उससे पूछा—तुझको किसने समझाया कि तू नग्न है ? यहां तूने उसी पेड़ का फल खाया है, जिसे खाने को मैंने मना किया था।

उस पर आदम ने कहा—आपने जिस औरत को मेरे साथ बैठने के लिए भेजा था उसी ने मुझे वह फल दिया था, जिसे मैंने खा लिया है।"

अंतोणी उस वाक्य के अंत में जोर से उंगली दबाते हुए सिर उठाकर कुछ सोच रहा था।

वह सवेरे की उन सारी बातों को याद करने लगा। वह विभिन्न बातों को सोचता है। उसके आदम-बगीचे में भी एक सर्प घुस आया है। उस हव्वा ने आदम को भी खाने के लिए फल दिया। उसने उसको खा भी लिया था। उसको ईश्वर ने ताकीद की थी कि वह फल मत खाना। सब ऐसा ही हुआ था जैसे

कि बाइबिल में कहा हुआ है। कोई घटना होने वाली है। एक अकारण डर ने उसकी चेतनता को हिलाया, मन को गरम किया, विचार काले हो गए। वह आंगन की ओर घूरने लगा।

उस पीपल के पेड़ की छाया में कोई खड़ा है, शायद शैतान होगा ?

"कौन है ?" अंतोणी दीपक उठाकर, जोर से पूछने लगा।

"मैं हूं। एक औरत। तुम्हारे साथ बैठने के लिए आई हूं।"

माधवी जोर से हंसते हुए पेड़ के पीछे से आंगन में उतरकर नीचे आ गई।

"कौन ? माधवी !" अंतोणी घबरा गया। वह विश्वास नहीं कर सका।

"तू अब इधर क्यों आ घुसी ?" उसने गुस्से से पूछा।

माधवी जवाब दिए बिना धीरे से बरामदे में चढ़कर अंतोणी के पास पलंग पर बैठ गई।

अंतोणी कुल मिलाकर परेशान हो गया। उसको ईश्वर की प्रार्थना करने की इच्छा हुई।

थोड़ी देर बाद बाइबिल और ध्यान देकर पढ़ने लगा। माधवी की उपस्थिति उसको सताने लगी। वह एकाग्र नहीं हो सका। एक अज्ञात असह्यता। यद्यपि उसने बाइबिल का एक पृष्ठ पढ़ा भी, लेकिन एक शब्द भी उसके मन में नहीं जमा। माधवी ने अंतोणी के मन को हिमपर्वत के समान ढक दिया। वह बाइबिल के कुछ दृश्य मन में लाने का यत्न करने लगा। आदि मनुष्य का आदम बगीचा. .. पर वे सब अपना बगीचा, पपीते का पेड़, नाग और माधवी, सभी चित्र के रूप में बदल गए।

उसकी कल्पना शक्ति को कोई चीज दबा रही थी।

उस जवानी का पुरुषत्व अब अस्थिर हो गया था। यह सब कुछ उसको मालूम नहीं हो रहा था। उसको यह समझने की भी शक्ति नहीं थी कि उन प्रत्याघातों की विद्युत तरंगें ही उसके विचार स्रोतों को तरंगित कर रही थीं। वह जंगल की ओर देखते हुए बालों को नोचने लगा। और फिर, अकस्मात पागल के समान माधवी की तरफ सिर घुमाकर गरजने लगा, "तू यहां से चली जा।" उसकी आवाज अपनी इच्छाशक्ति को नहीं, बल्कि केवल हृदय की दुर्बलता को साबित कर रही थी।

माधवी हिली तक नहीं। उसने मुस्कुराते हुए पूछा, "मैंने अंतोणी पर कुछ किया है ? चुपचाप, कुछ कहे बिना यहां बैठी हूं न ? फिर क्यों मुझे इस तरह भगाते हो ?"

"तू चली जा..... और मुझे सोने दे।"

वह हठी बच्चियों के समान मुंह तिरछा करके, होंठ आगे बढ़ाकर कहने

लगी, "क्यों, मुझे देखकर अंतोणी को नींद नहीं आती ?"

"माधवी ! यहां देख ! बेकार की बातें मत कर। तू रात में यहां मत आया कर। तू कभी भी यहां न आना।"

माधवी का मुंह स्याह हो गया। आंखें काली हो गईं। वह उसको घूरकर देखने लगी। फिर बिना कुछ कहे वह आंगन में उतरकर चलने लगी।

अंतोणी ने आश्वस्त होकर दीर्घ श्वास छोड़ा। ईश्वर ने उसकी परीक्षा ली है। उस परीक्षा में उसकी जीत हुई है। शैतान के कब्जे से वह बच गया।

उसे अब ईश्वर की प्रार्थना करने की इच्छा हुई।

तो भी—तो भी—उसके सारे शरीर में जो उत्तेजना फैल गई थी, वह अब भी शिथिल नहीं हुई। उसके हृदय के कुछ अज्ञात कोनों में एक ऐसी निराशा हो रही थी जैसे उसने कुछ खो दिया हो। जन्म-जन्मांतर की उस ओर से एक आह्वान-सृष्टि का गुप्त मधुर गीत—उसके हृदय में गूंजने लगा.... वह अस्पष्ट विचारों से बाहर की ओर घूरने लगा।

उसी समय आसमान पर बादल घिर आए। अंतरिक्ष में भी खिंचाव होने लगा। आसमान बिजली के हाथ फैलाकर नंगी जमीन को टटोलने लगा। उन बिजलियों के आलिंगन में पहाड़ और तराइयां नंगी दिखने लगी।

आसमान क्षुब्ध होकर गरजने लगा।

आसमान की दीर्घ सांस की तड़प बढ़ने लगी। गर्जन ! आसमान और भूमि एक हो जाते हैं। उसके साथ-साथ पानी भी बरसने लगा...।

भयानक बारिश।

अंतोणी उस प्रकृति लीला को देखकर चुपचाप बैठा रहा।

थोड़ी देर बाद बरामदे में किसी की आवाज को सुनकर उसने मुड़कर देखा।

माधवी, दुबारा ?

वह बारिश में पूरी तरह भीग गई थी। वापस आ गई। ठंड में कांप रही थी। अपने हाथों से छाती को दबाए हुए, चुपचाप खड़ी हो गई।

अंतोणी ने उसकी ओर देखा। वह भीगे पताके जैसी है। सिर के बालों और कपड़ों के कोनों से पानी की बूंदें टपक रही थीं। ब्लाउज शरीर पर भीगकर चिपक गया था। उभरे हुए नुकीले स्तन ब्लाउज पर स्पष्ट दिखाई दे रहे थे। उसका भीगा शरीर इतना आकर्षक लग रहा था कि वह उसकी ओर देखता ही रह गया। उसने धीरे से ब्लाउज उतारकर पलंग पर रख दिया, फिर धोती खोलकर निचोड़ी।

अंतोणी यह सब कुछ भूल गया और उसके देखने में एकाग्रचित हो गया। वह छाया के समान नग्न खड़ी थी। अंगार के समान उसने उसको एक बार फिर देखा।

वह उसी हालत में वहां खड़ी रही। बिजली चमकते समय जैसे एक विशाल स्थान दिखाई पड़ता है, ठीक उसी प्रकार एक ही पल में उसको एक अज्ञात संसार का दृश्य सा दिखाई पड़ा।

एकांतता का सूत्र दोनों को बांधने लगा। एक ठंडी हवा दोनों को स्पर्श करने लगी। मूसलाधार बारिश की आवाज दोनों को सुनाई पड़ रही थी। अंतोणी की अंतरात्मा सृष्टि की प्रारंभिक दशा की अवस्था को देखने लगी। उस अवस्था में डूबा हुआ उसका मन अब वास्तविकता के किनारे पर आने लगा। उसके हृदय में ऐसा डर पैदा हुआ कि वह एक ऊंचे चट्टान पर बैठा हुआ है और थोड़ा फिसलने पर वह ऐसी अज्ञात गहराई में गिर जाएगा जहां उसका पता ही न लगे। उसमें कामक्रिया के सुसुप्त भाव अब जाग्रत होने लगे। रक्त की शिराएं भर गईं और मस्तिष्क में तनाव बढ़ने लगा। गरम धुएं में वह अंधा होने लगा। काम-कला का धुआं। विज्ञान, विवेक, वेद-दर्शन, आदर्श—सब उस आतिशबाजी के धूम्रपटल में ढक गए। प्राकृतिक भावनाएं दब नहीं सकीं। परमाणु विस्फोट से दस हजार गुना शक्तिशाली है। द्रवीकरण के बिना वह शोरगुल करने वाली ज्वालामुखी बुझेगी नहीं

उसके कंधे पर ठंडा स्पर्श और मुंह पर गरम सांस पड़ी।

'ठंड लगती है, ठंड लगती है, ठंड लगती है।' उसने उसके कान में कहा। वह उसके गले में हाथ डालकर उसके तड़पते सीने से चिपककर खड़ी रही।

अंतोणी के पैर कांपने लगे। वह उस चट्टान से अनजाने गिरने लगा। एक अज्ञात गहराई की ओर युग-युगांतर की शून्यता के तरंग प्रवाह की ओर, अजीब विस्मृति की ओर जिसमें प्रपंच तक धुएं के समान ओझल हो जाए, उस आत्मिक सुख की ओर, उस जीवन परंपरा की बोझ की ओर। वह निस्सहाय होकर उसकी कमर को स्पर्श करता हुआ, उस पर गिर पड़ा।

सब खत्म हुआ। वह चुपचाप निश्चल बैठा रहा। माधवी उसके पलंग पर आराम से सो रही है। उसका बाइबिल उसके पैर के नीचे दबा पड़ा है। उसके पन्ने इधर-उधर बिखरे पड़े हैं। उसे बाइबिल को हाथ में लेने से भी डर लगने लगा।

उसने उसकी ओर फिर देखा। वह नग्नता, उसके मन में घृणा पैदा कर गई। उसे डसकर सोई हुई उस विषैली नागिन को देखते-देखते उसको डर लगने लगा। उसको ऐसा बोध हुआ कि वह ईश्वर की प्रार्थना करने तक के लायक नहीं रहा। वह निस्सहाय होकर रोने लगा।

तैंतीस

मरियम चटाई पर लेटकर मलेरिया से तड़प रही थी। ठंड और सर्दी इतनी ज्यादा थी कि उसे सहना, कुछ करना उसके लिए मुश्किल था। ऐसा मालूम पड़ता था कि उसकी हड्डी के भीतर की मज्जा तक ठंड घुस गई हो। उसके सिर की नाड़ियां तथा अन्य नसें कांप रही थीं।

"मुझे दबाओ... हू-हू-हू। मुझे दबाकर रखो।" मरियम तड़पते हुए विकृत स्वर में पुकार रही थी।

मात्तन कुछ दूरी पर मरियम के ज्वर की तड़प को सुनकर मुंह तिरछा करके खड़ा था।

"शैतान ! मुझे दबाओ, जोर से दबाओ।" मरियम मात्तन की ओर गरजने लगी।

मात्तन अनुसरण करने वाले बच्चे के समान धीरे-धीरे घुटने टेककर मरियम के समीप बैठ गया और उसके मोटे शरीर को कहीं-कहीं से पकड़कर जोर से दबाने लगा।

मात्तन के दबाने के बावजूद मरियम को चैन नहीं पड़ रही थी। बुखार इतना अधिक था कि मानो उसकी छाती के भीतर कोई भाप का यंत्र चल रहा हो।

"मुझे जोर-जोर से दबाओ।" वह कराहने लगी।

मात्तन ने उसे चटाई पर लिटाकर ऐसे दबाना शुरू किया ताकि उसकी हड्डी पसली एक हो जाए। तब भी उसका शरीर टूट रहा था। वह हाथ-पैर हिलाकर पागलों के समान कुछ बड़बड़ा रही थी।

कुछ देर के बाद वह थोड़ा आश्वस्त हो गई। पसीना आ रहा था। उसको असीम प्यास लगी।

"अरी मेरिक्कुट्टी ! गरम पानी लाओ।" वह थकावट के साथ बेटी को बुलाने लगी।

"मांजी, जितना गरम पानी था, सब खत्म हो गया।" मेरिक्कुट्टी ने पतीले के ढक्कन को खोलकर कहा।

"अरी मेंढ़क के समान क्या खड़ी है ? बेवकूफ लड़की ! एक घड़ा पानी जल्दी से गरम करो। अरी मैं अब मर जाऊंगी।"

मेरिक्कुट्टी अंगीठी जलाने लगी।

मरियम थकावट के कारण कुछ देर तक वैसे ही पड़ी रही।

थोड़ी देर में कराहते हुए आंख खोलकर आसपास सब देखने लगी। मात्तन

उस समय भी उसके पास ही बैठा था। वह उसके शरीर पर कोई मलहम मल रहा था।

"हट जा।" मरियम ने मात्तन को धकेलकर अलग कर दिया। धीरे से उठकर बैठी, बिखरे बालों को संभालकर मुंह और स्तनों के बीच का पसीना पोंछकर, अधखुली आंखों के साथ चटाई पर बेचैन बैठी रही।

मेरिक्कुट्टी ने एक घड़ा गरम पानी उसके सामने लाकर रख दिया। मरियम एक कटोरी में गरम पानी डालकर पीने लगी। फिर कुछ दवाई की गोलियां भी गरम पानी के साथ पी गई। कम से कम छह सेर गरम पानी पिया होगा। वह बार-बार पानी पीती रही।

दूसरे दिन सवेरे मरियम का बुखार उतर गया, वह साधारण से ज्यादा चावल और मरच्चीनी खाकर, फावड़ा और कुदाल लेकर पहाड़ी की ओर निकल पड़ी।

चौंतीस

कुरियन पहाड़ी पर काम कर रहा था। इस बीच उसके पैर में जंगली बिच्छू ने डंक मार दिया। उसने पत्थर लेकर जंगली बिच्छू को मारकर पीस डाला। लेकिन उसके पैर का दर्द बढ़ता ही गया। काम छोड़कर झोंपड़ी को लौटना ही उसने उचित समझा।

दर्द असहनीय था। वह दर्द से दांत दबाता हुआ पहाड़ी के दूसरी तरफ अपनी झोंपड़ी की ओर चलने लगा।

झोंपड़ी में कोई आवाज नहीं। नारियल के पत्तों का दरवाजा बंद था। उसका बच्चा बरामदे में, एक चटाई पर सो रहा था। उसकी बीवी साराम्मा कहीं दिखाई नहीं दी।

उसने बरामदे में चढ़कर झोंपड़ी के भीतर देखा तो अंदर से सांड़ जैसी आवाज आ रही थी। वह किसी आदमी का शब्द था। मुसीबत समझकर कुरियन आसपास छिप गया और धीरे से नारियल के सूखे पत्तों के छेद से भीतर झांकने लगा।

कुरियन अपनी आंखों पर विश्वास नहीं कर सका। साराम्मा लगभग पूर्ण नग्नावस्था में चटाई पर तिरछी लेटी हुई थी। साराम्मा को एक आदमी अपने बाजुओं में लिए हुए आलिंगन कर रहा था। वह आदमी उसको लेकर सो रहा था। सोते वक्त उस आदमी का नाक से घुर्राने की आवाज आ रही थी। वह सांड़ की तरह आवाज निकाल रहा था। कुरियन ने वही सुनी थी।

उस आदमी का मुंह कुरियन ने साफ देखा लिया था। उस गंजे आदमी की सींग जैसी मूंछें और मूसल के टुकड़े के समान नाक देखते ही कुरियन ने आदमी को पहचान लिया। वह चाय की दुकान वाला चाकोचन था। अपनी नंगी पत्नी को आलिंगन करते हुए सुखनिद्रा की जयभेरी बजाने वाले चाकोचन को कुरियन कुछ देर तक देखता रहा।

जब उसने यह सब देख लिया तो उसके शरीर में आग-सी लग गई। वह दृढ़ निश्चय करके वापस मुड़कर चलने लगा।

कुरियन सीधे जाकर चात्तुक्कुट्टी की ताड़ी की दुकान में बैठकर, दो-तीन सेर ताड़ी पीकर, कलेजे को गरम करके जोश के साथ झोंपड़ी की ओर लौटा। उस बीच तक चाकोचन वहां से चला गया था। साराम्मा अंगीठी जलाने में व्यस्त थी।

कुरियन सीधे रसोईघर में घुसा और उसने साराम्मा की चोटी पकड़कर जमीन पर दे मारा। उसने उसको नीचे से ऊपर तक घूंसे और लातों से बुरी तरह मार-मारकर बुरा हाल कर दिया।

बिना कुछ कहे कुरियन उसको घूंसे मारता रहा। साराम्मा बिना आवाज, बिना किसी प्रकार के दुख या प्रतिरोध के एक लड़की के समान खड़ी मार खाती रही।

अपनी बीवी को इस प्रकार खूब पीटकर वह ऊब गया था। वह हाथ हिलाते हुए, मुंह टेढ़ा करके बरामदे में बाहर आ गया। उसने बीड़ी सुलगाई और किसी गहरी सोच में डूब गया। कुछ देर तक वह बरामदे में इधर-उधर टहलता रहा। फिर एक दृढ़ संकल्प के साथ बाहर निकला और ताड़ी की दुकान पर फिर पहुंच गया।

उस ताड़ी की दुकान में बहुत-से लोग बैठकर ताड़ी पी रहे थे। होटल मालिक कोच्चुवर्की, मोटा कुरुविला एक छोटी मेज की दोनों ओर बैठकर ताड़ी पी रहे थे। कोच्चुवर्की आंखें फाड़कर और कुरुविला आंखें मूंदकर ताड़ी को मुंह के भीतर उड़ेल रहे थे। कुंजबु ने ताड़ी पी और वहां से उठकर चला जाना ठीक समझा। उसने पहले ही करीवाली कटोरी को तीन बार उंगली से साफ करके चाटा। फिर भी वह उंगली रगड़कर चाटता रहा। कुंजबु मणियाणी, पेरुतेरी चात्तु, कुंजाप्पु और मलयन कुंजिरामन दूसरी मेज के चारों ओर बैठकर, सामने रखे ताड़ी के बरतनों में बैठी मक्खियों को भगाते हुए बातें कर रहे थे।

चात्तु ने ताड़ी के ऊपर से एक मक्खी उंगली से उठाकर बाहर फेंकी।

दुकान के भीतर दक्षिणी कोने में कोई रो रहा था। कुंजाप्पु मुंह मोड़कर देखने लगा। वह कृष्णन चेट्टियार था। वह हमेशा ऐसे रोता रहता था। ताड़ी पीते ही चेट्टियार नशे में धुत्त हो आता था और अपने परिवार के मरे हुए हर

एक आदमी की याद करके रोया करता था। उस बूढ़े के रोने की कोई परवाह नहीं करता था।

उसी समय कुरियन वहां घुस आया था। उसको अपनी पत्नी के साथ सोए चाकोचन से बदला लेने की धुन सवार हुई। इसीलिए वह फिर दुबारा पीने के इरादे से वहां आया था। सिर पर बांधा हुआ कपड़ा उतारकर कुरियन ने कंधे पर डाला और बेंच पर बैठ गया। उसने ताड़ी परोसने वाले एक छोकरे को इशारा किया। लड़के ने एक लोटा भरकर ताड़ी कुरियन के सामने रख दी।

हाथ में ताड़ी का लोटा उठाकर गाना गाने लगा। 'हमारे शरीर अलग-अलग होने पर भी हमारा कलेजा एक ही है न मेरी अच्छी ताड़ी ?' गाते हुए वह वरीत कुरियन के बेंच पर आकर बैठ गया। एक आंख वाले वरीत को भी, ताड़ी का लोटा हाथ में उठाकर, गाने की अलग-अलग धुनें गाते हुए, जगह-जगह बैठकर ताड़ी पीने में मजा आ रहा था।

विलायत के प्रधानमंत्री चर्चिल के समान मोटा-तगड़ा चौड़े मुंह वाला एक कुत्ता कुरियन के पैरों के पास लेट गया था।

ताड़ी की दुकान का मालिक चात्तुक्कुट्टी अपनी तिजोरी के सामने घुटने टेक कर श्री नारायणगुरु नामक संन्यासी का जीवन-चरित्र पढ़ते हुए ध्यानमग्न बैठा था।

कुरियन ने फिर दूसरी बार ताड़ी लाने के लिए आवाज दी।

ताड़ी भीतर पहुंचने के बाद कुरियन का भेजा चुस्त हो गया, कलेजे में खून तेजी से दौड़ने लगा, आंखें गरम होने लगीं और जीभ में खुजली शुरू होने लगी। उस परिवर्तन के साथ ही उसने ताड़ी का तीसरा गिलास भीतर उड़ेल दिया। फिर मुंह पोंछने के बाद वरीत की ओर घूरकर देखता रहा और उसने एक व्याख्यान शुरू कर दिया। वह व्याख्यान इतनी जोर-जोर से कर रहा था कि वहां के सब लोग आराम से सुन सकते थे।

"मैंने अपनी आंखों से अपनी बीवी साराम्मा को चाय की दुकान वाले चाकोचन के साथ सोते हुए देखा। साराम्मा की मैंने मार-मारकर चटनी बना दी है। उसकी हड्डियों को ऐसे तोड़ा कि वह अब हिलने-डुलने में असमर्थ है। वह पड़ी हुई है। आपको मालूम है कि मैं अब कहां जा रहा हूं ? सीधे चाकोचन की चाय की दुकान की ओर। एक खूनी क्रांति के बाद ही मैं शांत होउंगा।"

वहां बैठे सारे शराबी ताड़ी के गिलास बेंचों पर रखकर उसे घूर-घूरकर देख रहे थे। सब चुपचाप बैठे थे। उस समय भी केवल कृष्णा चेट्टियार के रोने की आवाज वहां सुनाई पड़ रही थी।

अपनी बीवी के कुकर्मों और उससे बदला लेने की जो भावना उसके दिल में थी उसके बारे में वह सारी दुनिया को समझाना चाहता था।

"यह सब उसी समय करना था।" एक आंख वाले वरीत ने उपदेश दिया। "अब चाकोचन की चाय की दुकान पर जाकर उसे मारने का कोई अर्थ नहीं। क्या सबूत के साथ उसकी चटनी नहीं बना सकता था ?"

"वह नंगा होकर चटाई पर सूअर के समान पड़ा सो रहा था, सोने वाले को मैं कभी नहीं मारता।" उसने जवाब दिया। उसने एक गिलास ताड़ी का और आर्डर दिया।

"साराम्मा उस समय क्या कर रही थी ?" मोटे कुरुविला ने पूछा।

"साराम्मा भी नंगी होकर उसका आलिंगन कर रही थी।" उसने यह सारा विवरण शरम छोड़कर दिया। सुनने वालों को मजा आ रहा था।

"साराम्मा का यह व्यापार ही है या... ?" होटल मालिक कोच्चुवर्की ने पूछा।

"यह बात कुरियन साहब बता नहीं सकता। यह तो साराम्मा ही बता सकती है।" हंसते हुए कुरुविला ने कहा।

"वह ठीक ही है।" मलयन कंजिरामन कुरुविला के पास आकर, बैठकर उससे सहानुभूति जताने लगा।

"जिस तरह बाघिन को आदमी के खून का स्वाद लग जाता है और वह फिर आदमी को खाने की फिराक में रहती है, ठीक उसी प्रकार यदि औरत किसी अन्य पुरुष के साथ काम का स्वाद लेती है तो वह समय निकालकर किसी न किसी प्रकार अपना स्वार्थ सिद्ध करने की तलाश में रहती है। सुना बड़े भाई !"

"जो औरत पर विश्वास करता है, वह बेवकूफ है।" कुंजबु मणियाणी ने छत की ओर देखते हुए कहा।

"क्या यह चेट्टन चाय की दुकान वाले चाको को खत्म करेगा ?" चात्तु कुंजबु के कान के पास उंगली देकर उसने धीरे से पूछा।

कुंजाप्पु ने कुरियन की ओर देखा। कुरियन आंखें बंद करके मुंह खोलकर झुके हुए गले के साथ बेंच पर गिर रहा था। थोड़ी देर बाद कुरियन बेहोश होकर उसी बेंच पर गिर पड़ा।

वहां जितने शराबी लोग थे, उन सबको निराशा हो रही थी। वे सब यह देखना चाहते थे कि अपनी औरत के यार से कुरियन बदला लेने के लिए कटार लेकर चाय की दुकान पर पहुंच जाएगा और उन दोनों में खून-खराबा होगा। यह नाटक रुक गया। कथानायक बीच में ताड़ी के नशे में भर गया। उस बदले का शोरगुल कुरियन की नींद में ही समा गया।

उसी समय एक लंबी सींग जैसी मूंछ वाले ने दुकान में घुसकर वहां बैठे सब लोगों को घूरकर देखा।

"वहां, वहां, वही है चाय की दुकान वाला चाको।" कुंजाप्पु ने पेरुतेरी

चात्तु की पीठ पर हाथ फेरकर इशारा किया।

सब लोगों ने उस व्यक्ति को ऐसे देखा, जैसे कि अब कुछ होने वाला है। किसी ने कुरियन को जगाने की कोशिश की। कुरियन चुपचाप सो रहा था।

चाको ने एक बेंच पर चढ़कर जोर से कहा, "सुनिए, भाइयो ! हमारा एक भाई मात्तन जो हम जैसे ही तिरुवितांकूर से आकर यहां बस गया था, उसे यहां के कुछ बदमाश लोगों ने मार दिया है और उसको उन लोगों ने अपना मूत्र भी पिलाया है। मात्तन जल्दी ही मरने वाला है।"

"उन लोगों ने उसको खंभे से बांध रखा है। आप सब यहां पर ताड़ी पीकर मस्त होकर बैठे हैं। सब लोग आइए। उन बदमाशों को सबक सिखाना है। अभी निकलिए, नहीं तो वे मात्तन भाई को मारकर गाड़ देंगे। इधर के ये बदमाश लोग ईसाइयों के पवित्र क्रास पर टट्टी फेंक रहे हैं। क्या हम इतना रुपया खर्च करके यह सहन कर सकते हैं ? सब चलिए। बदला लेने के बाद ही वापस लौटेंगे।

यह व्याख्यान सुनकर एक आंखवाला वरीत, मोटा कुरुविला और चार-पांच ईसाई ताड़ी का गिलास फेंककर जोश के साथ कूद पड़े और चाको के सामने जाकर खड़े हो गए।

"चलो, चाको भाई ! इन लोगों को सबक सिखाएंगे। तिरुवितांकूर के ईसाइयों का असली रूप इन लोगों ने देखा नहीं। अभी दिखाएंगे।" मोटे कुरुविला ने गरजते हुए कहा।

वे सब निकल पड़े। जाते समय वे कुरियन को भी जगाकर ले जाने की कोशिश करने लगे। पर कोई जवाब नहीं। जागता ही नहीं। जैसे कोई संपोला नमक पर गिरा पड़ा हो, इसी तरह बिना किसी कपड़े के वह सोया हुआ था। आखिर वे कुरियन को वहीं छोड़कर सब ईसाई मिलकर एक जुलूस के रूप में निकल पड़े।

पैंतीस

अंतोणी अपने चाचा के यहां गया और मजदूरों का वेतन लेकर, अपनी झोंपड़ी को लौट रहा था।

गिरजाघर के पास पहुंचते ही उसने किसी अर्थी ले जाने वालों के जय जयकार की आवाज सुनी। वह उस चौराहे पर खड़ा हो गया। शव को काली पेटी में बंद करके दो आदमी कंधों पर रखकर ला रहे थे। उनके पीछे-पीछे

सात-आठ ईसाई लोग भी थे। शव-यात्रा चुपचाप चली जा रही थी। उनमें एक आनिक्कुट्टी का चाचा जैकब भी था।

अंतोणी भी उनके साथ मिलकर गिरजाघर की ओर चल पड़ा।

"कौन है ?" अंतोणी ने पेटी में रखे शव की ओर इशारा करके चाय की दुकान वाले औसेप से धीरे से पूछा।

"जैकब भाई के साथ जो लड़की रहती थी आनिक्कुट्टी, बुखार था, बुखार।" औसेप ने धीमी आवाज में कहा।

आंतोणी चौंककर खड़ा रहा। वह विश्वास नहीं कर सका। यह सुनकर उसका दिमाग चकरा गया और उसे ऐसे लगने लगा जैसे कि सारी दुनिया चक्कर काट रही है। वह बेहोश होकर गिर पड़ा। वह जिस पवित्र कन्या की पूजा किया करता था, उसका शव उस काली पेटी के भीतर था।

उसने अपने सीने पर हाथ से क्रास का चिह्न खींचा और सिर झुकाकर चुपचाप उनके साथ चलने लगा...।

सूरज की किरणों ने आखिरी बार उस काली पेटी को थपथपाया। आनिक्कुट्टी मिट्टी के नीचे दबा दी गई। "तू मिट्टी है, तुझे मिट्टी में ही वापस जाना है।'' पुरोहित ने उस पेटी की ओर इशारा करते हुए कहा।

उसके बाद जब कभी गिरजाघर में अंतोणी जाता था, आनिक्कुट्टी के अंतिम विश्रामस्थल की ओर देखकर लंबी सांस लेता था। वह मार्मिक दुख के साथ उस जगह को देखता रहता था, जहां आनिक्कुट्टी हर रविवार को घुटने टेककर प्रार्थना किया करती थी। उसको ऐसा लगता था कि वह देवी अब भी सफेद कपड़ा सिर पर रखकर प्रार्थना करते समय नजरें ऊपर करके एक सपने के समान खड़ी है।

जब उधर जाता था तो चोरी-छिपे आनिक्कुट्टी की कब्र के ऊपर सुगंधित फूलों को चढ़ा आता और दुखभरे हृदय के साथ कहता, "आनिक्कुट्टी ! तू सौभाग्यवती है। तुझे ईश्वर ने इन पापियों के बीच में से बुला लिया। लेकिन फिर भी तुम्हें इतनी जल्दी हमें छोड़कर नहीं जाना चाहिए था।"

अंतोणी को यह संदेह था कि मेरे द्वारा किए गए पाप के फलस्वरूप ही ईश्वर ने आनिक्कुट्टी को अपने पास बुला लिया था।

"मैं पापी हूं। मैं पापी हूं। ऐसा पापी हूं कि पश्चाताप तक करने लायक नहीं। शैतान ने मुझे धोखा दिया है। मुझे ईश्वर का नाम तक लेने का अधिकार नहीं है।" वह आत्मनिंदा और टूटे हृदय के साथ हमेशा-हमेशा मन ही मन रोता रहता था।

छत्तीस

कुन्नोली नामक परिवार के बड़े नंबियार की अट्टालिका का आंगन एक कचहरी बन गया था। कुन्नोली परिवार की निजी संपत्ति बहुत विशाल थी। तिरुवितांकूर से तरंगों के समान लाखों ईसाई लोग आते रहे। वे प्रायः कुन्नोली परिवार के जंगल और खेत खरीद-खरीद कर खेती करने लगे थे।

बरामदे में बुजुर्ग नंबियार, मुख्य मुख्तार चात्तुकुरुप तथा कुछ दलाल आदि बैठे हुए थे। आंगन की चारदीवारी के पास खड़े कुछ ईसाई लोग अपनी फरियाद सुनाने के लिए आए हुए थे।

"औसेप को कुछ कहना है।" चात्तुकुरुप्प ने वृद्ध को समझाया।

"अरे, औसेप ! इधर आ।" चात्तुकुरुप्प ने आंगन में विनम्रता के साथ खड़े लोगों में से एक मूंछवाले आदमी को इशारा करके बुलाया।

औसेप ने दाहिना हाथ नाक की ओर आदरसूचक भाव से नमस्कार करने के लिए उठाया और आगे बढ़ा। वह बुजुर्ग के सामने विनीत होकर सिर झुकाकर खड़ा हो गया।

"कृष्णा ! पान।" बुजुर्ग ने बिना किसी विकार के बुलाया।

"अब, तूने अपने गांव को जाने का पूर्ण निश्चय कर लिया है न ?" चात्तुकुरुप्प ने पूछा।

"मालिक ! ऐसा ही निश्चय किया है।" औसेप ने वृद्ध की ओर देखकर निश्चय के साथ कहा। "मैं परेशान हो गया हूं। मेरी पत्नी भी इधर मर गई और दो बच्चे थे, वे भी मर गए। हाथ में जितना धन था, सब खत्म हो गया। तीन सौ रुपए तक का कर्ज भी हो गया है।"

"इसका खेत कहां है ?" बुजुर्ग ने पूछा।

"उधर, बहुत दूर, नकरी पहाड़ी के दक्षिणी कोने में।" चात्तुकुरुप्पन ने कहा।

"वहां कोई और खेती बाकी है ?" चात्तुकुरुप्पन ने औसेप से पूछा।

"मालिक! जाकर देख लिजिए। मैंने कुछ भी इस्तेमाल नहीं किया।"

"सब जंगली सूअर इस्तेमाल कर रहे होंगे।" कृष्णकुरुप्प ने जो पान दिया है, उसे मुंह में डालकर चबाते हुए बुजुर्ग ने कहा, "ठीक है, तूने कितना रुपया दिया था ?"

"चालीस एकड़ जमीन के चार सौ रुपए। कचहरी खर्चा के दो सौ। एजेंट आदि के डेढ़ सौ रुपए। जंगल काटने आदि की मजदूरी के लिए डेढ़ सौ। अर्थात कुल मिलाकर मैंने लगभग एक हजार रुपए खर्च किए हैं।"

"दूसरे खर्च को छोड़ो।" बुजुर्ग ने रोकते हुए कहा, "कुन्नोली परिवार को तूने चार सौ रुपए दिए हैं न ?"

"हां जी, मालिक ! चार सौ रुपए।"

"ठीक। अब कहो, हमें क्या करना है ?"

"मुझ पर इस समय तीन सौ रुपए कर्ज हैं। भविष्य में मेरा यहां रहने का विचार भी नहीं है। मैं वापस अपने गांव जाना चाहता हूं।"

"ठीक है, जा सकते हो।"

"मालिक ! मेरा खेत और बगीचा वापस ले लीजिए।"

"हमें अब खेत और बगीचे की जरूरत नहीं। इसे तू अपने किसी आदमी को ही दे दे।"

"इस समय इसे खरीदने वाला कोई नहीं मिल रहा है। मुझे बचाने के लिए इस समय आपके अलावा और कोई भी नहीं है।"

"खेत और बगीचे वापस लेकर हम क्या करेंगे ?"

"उसमें बहुत सारी खेती है।"

"कच्ची फसल। उस खेती पर निवेश करने के लिए हमारे पास भी रुपया नहीं है।"

"आप ही मुझे बचा सकते हैं।"

बुजुर्ग और चात्तुकुरुप्प ने आपस में कुछ गुप्त रूप से विचार-विमर्श किया। फिर चात्तुकुरुप्प जोर से बोला, "देखो। केवल दो सौ रुपए ही वापस मिलेंगे। अपनी जमीन की रजिस्ट्री और उससे संबंधित सभी कागजात हमें दे दो।"

औसेप बेचैन हो उठा। केवल दो सौ रुपए ? करीब तीन सौ रुपए तो मुझ पर कर्ज ही है।

"तीन सौ रुपए कर्ज दिए बिना मुसलमान वीरानकुंजि मुझे यहां से जाने नहीं देगा। मालिक, अपने गांव पहुंचने के लिए मुझे कम से कम एक सौ रुपए तो चाहिए ही। मेरी आपसे प्रार्थना है कि कम से कम पांच सौ रुपए मुझ गरीब को दे दीजिए।"

"क्या देखकर तुझे पांच सौ रुपए दिए जाएं ?" बुजुर्ग ने गुस्से के साथ कहा।

"कानून के हिसाब से तुझे एक रुपया भी नहीं मिलना चाहिए। फिर हम यहां खेती करने नहीं जा सकते। जो नए ग्राहक आते हैं, वे हमेशा नई जमीन की तलाश में रहते हैं। जिस जमीन को तुमने और सूअरों ने खोदा है, उसकी अब कुछ कीमत ही नहीं रह गई। धर्म के नाते हम तुम्हें दो सौ रुपए दे रहे हैं, उस खेत का दाम नहीं।"

"मालिक, किसी को भेजकर देख लीजिए। दो हजार रुपए की खेती वहां

पड़ी हुई है। न तो उसकी देखभाल करने के लिए आदमी है और न ही खर्च करने के लिए।"

"जाकर देखो कि उसे कोई खरीदने वाला है या नहीं ?"

"हमारे ईसाई लोग अपने खेत की भी देखभाल ठीक से नहीं कर पाते। मालिक ! यदि मैं और भी इंतजार करता रहूंगा तो जो खेती है, वह भी मिट जाएगी। उसके अलावा यह बेचारा गरीब, मलेरिया बीमारी से यहीं मर जाएगा।" फिर भी बुजुर्ग और चात्तुकुरुप्प ने आपस में कुछ गुप्त विचार-विमर्श किया। आखिर चात्तुकुरुप्प ने कहा कि औसेप की फरियाद के बारे में और किसी दिन सोचेंगे।

"कल शाम को वहां जाकर तेरी सारी खेती देखूंगा। तू सोमवार सवेरे यहां आ जा। तब जवाब दूंगा। अब तू जा सकता है।"

औसेप बुजुर्ग और मुख्तार को कृतज्ञता के साथ प्रणाम करके सिर झुकाकर वापस चलने लगा।

जब औसेप दरवाजे पर पहुंचा तब उसने देखा कि चार-पांच देशी लोग एक मोटे ईसाई के हाथों को पीछे से बांधकर धक्का देते हुए तथा खींचते हुए वहां ला रहे थे। इस बात को जानने के लिए वहीं ठहर गया।

वे लोग उस अर्द्धनग्न ईसाई को खींचकर बुजुर्ग के सामने खड़ा करके स्वयं भी विनीत भाव से खड़े हो गए। बुजुर्ग ने मुस्कुराते और हथेली हिलाते हुए पूछा, 'क्या बात है ?'

"मालिक ! यह एक बड़ा चोर है।" उनमें से एक बुड्ढे ने कहा, जिसने सिर पर चुन्नी बांध रखी थी, "इस शैतान की वजह से हम सब लोग बेचैन हैं। केला चोरी करना, नारियल तोड़कर ले जाना, घर में कोई नहीं हो तो रसोईघर में घुसकर भोजन खाकर भाग जाना, जाते समय जो चीज दिखाई पड़ती है उसे उठाकर ले जाना इत्यादि...इस सूअर चेट्टन का नित्य का काम है। इस शैतान के कारण इस प्रदेश के सब लोग परेशान हैं। एक दिन घाट पर धोबिन ने कपड़े सुखाने के लिए बिछा रखे थे तो कोई आदमी उन कपड़ों को उठाकर ले गया। शायद वह भी इसी बदमाश का काम होगा। कल रात यह चोरी करते समय हमारे हाथ में आ गया। जब यह बढ़ई आण्डी के घर में गाय चुराने घुसा, तब बढ़ई की पत्नी ने इसको देखा और जोर-जोर से चिल्लाई। यह घर के पीछे को दौड़ पड़ा। गलती से यह गोबर के गड्ढे पर जाकर गिर गया। जब गड्ढे में यह गोबर के ऊपर तैर रहा था तब हमने इसको पकड़कर बांध लिया। अब इसे इधर खींचकर ले आए हैं। आगे जैसे आपका आदेश हो...।"

बुजुर्ग उस कैदी की ओर सहानुभूति की दृष्टि से देखने लगा। गोबर के गड्ढे में लेटे एक भैंस के समान, गले में एक लौकेट भी है।

"यह कहां रहता है ?" बुजुर्ग ने पूछा।

"कलियन पहाड़ी पर खेती करने वाला चेट्टन है। इसको उनके लोग मात्तन चेट्टन के नाम से बुलाते हैं।

"अरे! ये लोग तेरे बारे में जो कहते हैं, सही है ?" बुजुर्ग ने मात्तन से पूछा।

मात्तन ने जवाब नहीं दिया। उसका उस समय का भाव ऐसा था कि इन सब चीजों से उसका कोई संबंध ही नहीं है और वह दूर ताड़ के पेड़ पर बैठे एक गिद्ध को ध्यानपूर्वक देख रहा था।

"अरे चेट्टन ! क्या तू गाय की चोरी करने वहां गया था ?" बुजुर्ग ने जोर से दुबारा पूछा।

जवाब नहीं।

"अरे चेट्टन ! क्या तूने मालिक की बात सुनी नहीं है ?" चानुकुरुप्प ने गुस्से के साथ पूछा।

मात्तन चुपचाप खड़ा रहा। उसने सुना कि वह गाय चुराने की कोशिश कर रहा था, केले व नारियल चोरीकर ले गया। धोबिन के कपड़े उठाकर भाग गया। पर, अपने नाम पर हत्या करने के आरोप लगाने पर भी अगर मात्तन नहीं बोलेगा तो... ?

"क्या यह बहरा है ?" बुजुर्ग ने गुस्से के साथ पूछा।

"नहीं, मालिक !" चुन्नीवाले बूढ़े ने कहा, "कल कुछ मार पड़ने पर जैसे हाथी चिंघाड़ता है, उसी तरह गरजता रहा। अगर इसको पुलिस स्टेशन ले जाया जाए, तो वे लोग इसका इलाज कर देंगे।"

"इसकी जरूरत नहीं।" बुजुर्ग ने आज्ञा दी, "इसको तत्काल एक सबक सिखा कर छोड़ दो। इसको ले जाकर बढ़ई के खलिहान के सामने बांधकर रखो। कल सवेरे खोलकर भेज दो। फिर भी यह चोरी करेगा तो पकड़कर पुलिस के हवाले कर देना। ले जाओ इसको।"

उस अपराधी को वे खींचकर ले गए। औसेप वहां से निकलकर चाको की चाय की दुकान में जाकर बैठ गया।

सैंतीस

कुन्नोली ने बुजुर्ग की आज्ञा के अनुसार मात्तन को खींचकर बढ़ई के खलिहान में लाकर बांध दिया।

उस वार्ता के साथ ही औसेप चाय की दुकान वाले चाको के पास पहुंचा। उसने कहा कि मात्तन को बढ़ई के खलिहान में बांधकर रखा है और उसको पेशाब पिलाया गया, गोबर खिलाया और मूसल से मार-मारकर उसकी सारी हड्डियां तक तोड़ दी गई। औसेप ने ये सब अतिरंजित करके जान-बूझकर बताया था। चाको यह सुनकर गुस्से से कांपने लगा।

चाको और औसेप ने मिलकर चारों तरफ की पहाड़ियों पर बसे सारे ईसाइयों के घर जाकर यह प्रचार किया और सबको उकसाया कि मात्तन को क्रूरता से दंड दिया जा रहा है और जान से मारने की धमकी भी दी जा रही है। यह खबर ईसाई समाज में दावाग्नि की तरह फैल गई इसी बीच चाको ताड़ी की दुकान पर भी गया था।

ताड़ी की दुकान से जो जुलूस निकला था, वह अगली पहाड़ी की तराई पर पहुंच गया। घूंसेबाज औसेप, तोडुपुषा तोम्मन, वर्गीज, हाथी मात्तु और बिल्ली की आंख वाला मत्ताई उसके साथ मिल गए। औसेप भी कुछ लोगों को लेकर आया था। कुरियन इट्टूप, जेकब और पौलोस उसके साथ थे।

इस प्रकार सब लोग बदला लेने की भावना से बढ़ई आण्डी के घर की तोड़-फोड़ करने का लक्ष्य लेकर चले थे।

शाम का समय था। अंधेरा छाने वाला था। लाठी, भाला, फरसा, कटार, खुखरी आदि के साथ मशाल जलाकर जयभेरी और शोरगुल के साथ वे लोग पहाड़ी पर चढ़ने लगे। इट्टूप के हाथ में एक लोहे की छड़ी थी, एक आंख वाले वरीत के हाथ में हंसुआ था। जेकब का हथियार गैंती थी। वर्की के हाथ में तिरण्डी मछली की पूंछ थी।

रास्ते में ही उन्होंने-कुंजिकण्टन की ताड़ी की दुकान देखी। वे उस दुकान को लूटने लगे। उन लोगों ने ताड़ी की दुकान के मालिक और नौकरों को मारकर भगा दिया और वहां जितनी ताड़ी और करी थी, सब खा-पीकर खत्म कर ली। तिजोरी तोड़कर रुपए आदि सब निकाल लिए। सारे बरतन, कटोरी, प्याली, बरनी सबको तोड़ दिया। उसके बाद वह जत्था आगे बढ़ा।

हाथी मात्तु ने नाक तक ताड़ी पी रखी थी। वह चार-पांच बार नीचे गिर गया। कुछ देर के बाद उसके लिए रेंगना भी मुश्किल हो गया। चेरियन और मोटा कुरुविला मिलकर उसको लेकर चलने लगे।

वे लोग रास्ते के पास खड़े केले और छोटे पेड़ों को काटते हुए, बाड़ियों पर आग लगाते हुए आगे बढ़ने लगे। वहां के देशी लोगों को उस शत्रुसेना का सामना करने की हिम्मत नहीं हुई। वे लोग नारे लगाते हुए आगे बढ़ते रहे।

"जो मरना चाहते हैं, वे हमारे सामने आ जाओ। आ जाओ। किसी ने भी हममें से किसी एक को हाथ लगाया तो उसकी आंतें काट देंगे और कुत्ते

को खिला देंगे। वे जोर-जोर से चिल्ला रहे थे। उसके साथ उस प्रदेश के सब निवासियों को गाली भी बक रहे थे।

नारियल के पेड़ के ऊपर से बिलाव मात्तु ने उन लुटेरों को देखा। हर दिन के समान बिलाव मात्तु ताड़ी चुराने नारियल के पेड़ पर चढ़ा था। ताड़ी का घड़ा एक हाथ में पकड़े हुए पेड़ से उतरकर वह भी इस जुलूस में शामिल हो गया।

ताड़ी के गंध पाकर हाथी मात्तु चिल्लाने लगा, "अरे ! मेरे लिए ताड़ी ले आ।" वह गरजने लगा।

अपनी ताड़ी को बचाना मुश्किल समझकर बिलाव मात्तु पीछे रुक गया। हाथी मात्तु हाथी के दूध पीने वाले बछड़े के समान हाथ-पैर हिलाकर, सिर मारते हुए, सिर नीचे करके कूदते हुए, कई पराक्रम दिखाने लगा। तब चेरियान और मोटा कुरुविला उसको नीचे जमीन पर डालकर अपना शरीर बचाकर चलने लगे।

हाथी मात्तु निराश होकर चिल्लाने लगा।

"अरे, बिलाव, थोड़ी सी मैं भी पिऊंगा। प्यास के मारे जीभ हिलती नहीं। अरे पुंझली के बेटे ! बढ़ई आण्डी को फांसी पर चढ़ाने के लिए मुझे भी ले जाओ।"

रास्ते में पड़े हाथी मात्तु पर किसी ने ध्यान नहीं दिया। होंठ पर दाग वाला कुरियन उसके पास आया। वह सिर झुकाकर खड़ा हुआ और गला पकड़कर डकारते हुए उल्टी कर दी। बिलाव मात्तु ने एक चट्टान की ओट में खड़े होकर पूरी की पूरी ताड़ी पी ली और उसने घड़े को दूर फेंक दिया। उसके बाद होंठ और मूंछ पोंछकर, दौड़ते हुए उस जत्थे में मिल गया।

वे गुंडे बढ़ई आण्डी के घर के सामने खेत के पास पहुंचे।

बढ़ई आण्डी और उसके परिवार के बाकी लोगों ने देखा कि ईसाई गुंडे उनके घर की ओर आ रहे हैं। वे सब घबरा गए और जल्दी से अपना घर छोड़कर, पीछे से जंगल की ओर भाग गए।

वे गुंडे बढ़ई के बगीचे में घुसे। बढ़ई का कुत्ता उनकी ओर भौंकता हुआ आया। औसेप ने उस कुत्ते को काटकर दो टुकड़े कर दिया।

उन्होंने सबसे पहले मात्तन को रस्सी काटकर बंधन-मुक्त कर दिया। जाल काटकर बाहर निकले हुए गीदड़ के समान मात्तन भागकर चला गया।

फिर वे लोग बगीचे में इधर-उधर पेड़-पौधों और केले आदि को काटकर नीचे डालते हुए इधर-उधर भागते नजर आए। उसके बाद वे बढ़ई के घर में घुस गए। घर में उनको जो कुछ मिला, सब लूटने लगे।

बाकी सब सामान तोड़ डाला गया। जेकब और मोटे औसेप ने गोशाला में जाकर एक गाय के बछड़े को काटा। जेकब ने उसका कलेजा और मांस

काटकर थैले में डालकर कंधे पर लटका दिया। जब सब कुछ तहस-नहस कर दिया और कुछ करने को बाकी नहीं रहा, तब एक आंख वाले वरीत ने बढ़ई के घर में आग लगा दी।

इसके बाद वे शोरगुल करते हुए लौटने लगे। हर एक के हाथ में कुछ न कुछ लूट का सामान था। कोच्चुवर्की के सिर पर दो पीतल के कलश और हाथ में ग्रंथों की एक गठरी। जेकब ने कंधे पर मांस का थैला लटकाया हुआ था, हाथ में बढ़ई आण्डी के औजारों की संदूकची और नारियल की एक टोकरी थी। हंसिया कमर में लगाकर, दो बड़ी कटोरी आपस में टकराकर गाना गाते हुए एक आंख वाला वरीत चल रहा था। उसके पीछे कुरुविला ध्यान में मग्न होकर चल रहा था। उसके हाथ में बढ़ई आण्डी की कुल्हाड़ी थी। और दूसरे हाथ में बढ़ई की लालटेन थी। कुरुविला ने बगल में एक मुर्गे को भी दबा रखा था।

बढ़ई की तिजोरी को चेरियान ने उठा रखा था। इट्टूप ने बढ़ई की पत्नी के कपड़े का संदूक उठा रखा था।

उनमें केवल एक आदमी के हाथ खाली थे। वह था बिलाव मात्तु। वह कभी-कभी हाथ हिलाता था, कभी दर्द से कराहता था। उसका कारण यह था कि उसने बढ़ई के कमरे में रखी हुई एक लकड़ी की पेटी के भीतर हाथ डालकर देखा था। असल में वह पेटी चूहों को पकड़ने के लिए रखी हुई थी। बिलाव मात्तु के हाथ में काफी दर्द था। इसलिए वह चलते-चलते कराहता ही रहा। उसकी उंगलियां सब पिचक गई थीं। उसकी किस्मत इतनी खराब थी कि उसके साथी लूट के सामान के साथ लौट रहे थे तो वह खाली कटे हुए हाथ के साथ कराहते हुए आ रहा था।

"अरे, भाई ! इस प्रदेश में पुलिस है ?" वर्की ने संदेह के साथ पूछा।

"मैंने कभी देखा नहीं। अगर है भी, तो क्या हुआ ? मैं नहीं डरता।" औसेप निडर होकर बोला।

वर्गीस यह सुनकर वहीं खड़ा हो गया और बोलने लगा। "एक बात है, अगर पुलिस को सबूत मिल गया तो सारा मामला खराब हो जाएगा।"

"कौन पुलिस पकड़ेगी ?" औसेप सिर हिलाकर पूछने लगा।

"वही मुझे देखना है। पुलिस नहीं, पुलिस का बाप आने पर भी मुझे नहीं पकड़ सकता। मुझे पकड़ेगा तो मैं उसकी बोटी-बोटी काट दूंगा।" औसेप ने कहा।

"गड़बड़ मत करो।" कोच्चुवर्की ने डरते हुए कहा, "हम ये सब सामान इधर नाले में फेंक दें।"

"तू फेंकता है, तो फेंक दे। मैं तो जितना सामान मिला, सबको अपने

घर में ले जाऊंगा।" इट्टूप ने हिम्मत बांधकर कहा।

पर बहुत लोगों को अब डर लगने लगा। उनके मन में यह विचार पैदा होने लगा कि उन्होंने बड़ी भारी गलती की है।

"हम सबको ये सब चीजें इधर फेंककर ही जाना अच्छा रहेगा।" वर्गीज ने उपदेश दिया—'पुलिस घरों में आकर छानबीन कर सकती है। तब सारा मामला गड़बड़ हो जाएगा।'

आखिर उनमें से बहुत लोगों के मन में आया कि वर्गीज ने जो कहा है, वह सही है।

चेरियान ने बढ़ई की पेटी तोड़कर देखा। उसमें साढ़े सत्रह रुपए, चांदी की एक माला और सोने का एक सिक्का था। उसने उसको अपनी धोती में बांध लिया और पेटी को नाले में फेंक दिया। कुरुविला ने लालटेन और कुल्हाड़ी को जंगल में फेंक दिया और मुर्गे का गला मरोड़कर हाथ में ले आया। उसने बढ़ई के औजारों की पेटी को कीचड़ में पैर की सहायता से दबा दिया। पर जेकब ने गाय के मांस और नारियल को नहीं फेंका।

इस प्रकार केवल खाने के चीजों को साथ लेकर वे लोग अपनी-अपनी झोंपड़ियों को लौटे।

अड़तीस

सवेरे के दस बज गए हैं। मात्तन जागा है, परंतु चटाई पर ही कंबल ओढ़कर सुहावने सपनों के साथ सुस्त लेटा हुआ था। मेरिक्कुट्टी घबराई हुई, दौड़ती हुई आई और कहने लगी, "मांजी ! मांजी ! कुछ लाल टोपी वाले लोग इस ओर आ रहे हैं। मालूम पड़ता है कि पुलिस है।"

यह सुनकर जैसे किसी के कुर्ते में आग लग जाए, मात्तन बिस्तर से कूद पड़ा, फिर नीचे देखकर पश्चिम की ओर आंगन में दौड़ा। वहां से वह भागने लगा। उसके पास यह सोचने का समय नही था कि वह कहां भाग रहा है। जैसे कोई जंगली सूअर कूदकर भागता है, उसी प्रकार वह झाड़ियों और बाड़ों को पार करके भागता रहा। वह एक पहाड़ी पर पहुंचा। चढ़ाई पार करके तेजी से दौड़ते हुए जंगल में पहुंचा। मात्तन की एक ही इच्छा थी कि पुलिस उसे खोज न पाए। इसके लिए वह बाघ की गुफा में जाकर छिपने के लिए तैयार था।

उस दिन सवेरे ही एक सब-इंस्पेक्टर और चार पुलिस कांस्टेबल उस गांव

में आए हुए थे। बढ़ई आण्डी के घर जिन लोगों ने आग लगाई, उनको पकड़ने के लिए पुलिस आई हुई थी। बढ़ई आण्डी के घर की कुछ चीजें अब भी जल रही थीं। सिर कटे हुए कुत्ते की लाश को कौए काट रहे थे। गोशाला में बछड़े का खून पड़ा हुआ था। बगीचे के पेड़-पौधे सब कटे हुए नीचे पड़े थे। ये सब देखकर असीम दुख के साथ आण्डी के परिवारवाले रो रहे थे।

इंस्पेक्टर ने पहले बढ़ई आण्डी और दो-तीन पड़ोसियों का बयान लिया। उसके बाद ईसाइयों की कालोनी में घुसे।

जब वे लोग कुरियन के घर पहुंचे तो उस समय कुरियन और साराम्मा एक ही बर्तन में खाना खा रहे थे। कुरियन यह भी नहीं कह सका कि पिछले दिन की लूटमार के विषय में वह कुछ नहीं जानता।

"यहां का आदमी कल रात ताड़ी की दुकान में ही सोया था। ताड़ी की दुकान के छोकरे केलन ने ही इस आदमी को आज सवेरे इधर पहुंचाया है।"

साराम्मा ने अपने पति को बचाने के लिए कहा। कुरियन ने भी उसके अनुकूल सिर हिलाया।

पुलिस वाले पांच-छह झोंपड़ियों में घुसे। कोई खास सबूत नहीं मिला। उसके बाद वे मात्तन की झोंपड़ी में पहुंचे। उनके पहुंचते ही मात्तन जंगल की ओर पीछे से भाग गया।

"यहां का चेट्टन कहां है ? उसको बुलाओ।" हैडकांस्टेबल कोरन ने आंगन में खड़े होकर मरियम को आज्ञा दी।

"यहां नहीं है। दो दिन से नहीं आए।" मरियम जोणी को छाती पर लेकर आंगन में आई।

"कहां गया है ?"

"मालूम नहीं।"

"यहां के चेट्टन का नाम क्या है ?" मरियम को नाम बोलने में शरम आई।

"कहो ! क्या नाम है ?"

"मात्तन मालिक।" मरियम अभिमान और थोड़ी-सी लज्जा के साथ बोली।

"वह कौन है ? तुम्हारा पति है ?" मरियम मुस्कुराते हुए चुप खड़ी रही।

"क्यों मुस्कुरा रही है ? कहो जल्दी, यह मात्तन तेरा पति है ?"

हां के भाव में मरियम ने सिर हिलाया।

"हट जा। इस झोंपड़ी की हम तलाशी लेंगे।" हैडकांस्टेबल और उसके साथी भीतर घुस गए। मरियम छाती पीटकर रोने लगी।

"चिल्लाओ मत।" पुलिस नं. 513 मरियम को देखकर झाड़ने लगा।

पुलिस वालों को वहां से चोरी का कोई सामान नहीं मिला।

उस दिन दोपहर तक वे लोग हर एक घर में घुस-घुसकर तलाशी लेते

रहे। आखिर इट्टूप की झोंपड़ी के भीतर से उनको बढ़ई की पत्नी के कपड़ों का संदूक मिला। इट्टूप ने उस बक्स को अंगीठी के पास छिपा रखा था।

पुलिस ने इट्टूप को पकड़कर दो घूंसे मारे, तो वह सारी बातें खोलकर बोलने लगा।

उसी शाम पुलिसवालों ने चाय की दुकान वाले चाको को तोड़ुपुषा वाले मोम्मन और बिल्ली की आंखों वाले मत्ताई को कैद किया।

कोच्चुवर्की पुलिस के कब्जे में नहीं आया। वह पहाड़ों को पार करके कुर्ग में जाकर बच गया।

एक आंख वाला वरीत वयनाड में अपने साले के पास पहुंचा। उसके बाद उस जगह होंठ में दाग वाले कुरियन को किसी ने भी नहीं देखा। घूंसा मारने वाले औसेप को पुलिस पकड़ नहीं सकी।

उनचालीस

जंगल के भीतर तक मात्तन दौड़ता रहा। वह थक गया था। इसलिए एक पेड़ के नीचे पड़ी लंबी और मोटी-सी जड़ पर जाकर बैठ गया।

चारों तरफ जंगल ही जंगल था। भयानक पृष्ठभूमि थी। कोई मनुष्य वहां नहीं था। कहीं-कहीं बड़े-बड़े पेड़ थे। वे बड़े मोटी बेलों से ढके हुए थे। बीच-बीच में बड़ी-बड़ी चट्टानें थीं। नीचे जमीन पर सर्वत्र सूखे पत्ते फैले हुए थे।

पुलिस कितनी भी कोशिश करे लेकिन वहां नहीं पहुंच सकती। मात्तन, निश्‍चिंत हो गया था।

जब वह बैठ गया तो हांफने लगा। शरीर पूरा पसीने से तर हो गया। असहनीय गर्मी महसूस हुई।

उसने धोती उतारी और पेड़ की जड़ के ऊपर बिछा ली। वह आसमान की ओर देखते हुए लेट गया।

वह कुछ भी नहीं सोच सका। उसको ऐसा मालूम पड़ा कि उसकी आंखों के सामने कोहरे जैसा कोई पर्दा पड़ा हुआ है। उस अस्पष्टता में केवल लाल टोपियों की कुछ तस्वीरें नजर आ रही थीं।

बढ़ई आण्डी के घर में पिछली रात जो लूटमार हुई थी, उसके विषय में मात्तन को कोई जानकारी नहीं थी। बंधनमुक्त होते ही वह भागकर सीधे घर आया। रात के भोजन के बाद वह आराम से सोता रहा। फिर मेरिक्कुट्टी की आवाज 'मांजी पुलिस' इतनी दूर भागने का कारण बन गई थी।

इस प्रकार वह वहां पर अपनी पुरानी निर्विकल्प समाधि में तल्लीन हो गया था, इतने में उसको महसूस हुआ कि वह जिस जड़ पर लेटा हुआ था, वह कुछ हिल रही है उसके बावजूद वह लेटा ही रहा। फिर भी वह जड़ हिल रही थी।

मात्तन ने चकित होकर चारों तरफ देखा। कोई प्राणी नहीं, फिर ऊपर देखा।

"मेरे भगवान !" पुकारते हुए मात्तन आगे कूदा। दोनों हाथ माथे पर रखकर अपने आपको रोकते हुए और सिर झुकाते हुए वहां से भाग खड़ा हुआ।

मात्तन जिस जड़ पर लेटा हुआ था, वह पेड़ की जड़ नहीं बल्कि एक अजगर की पीठ थी। उसका सारा शरीर डर के मारे पानी-पानी हो गया। फिर भी वह वहां से तेज़ी से भाग खड़ा हुआ।

उसकी दौड़ने की गति इतनी तेज थी कि मानो वह जमीन के छोर आने पर ही रुकेगा।

यद्यपि वह दौड़ते-दौड़ते थक गया था, फिर भी उस भयानक दृश्य की याद उसको आगे दौड़ाती ही जा रही थी। वह बिना रुके कम से कम तीन मील तक दौड़ा होगा।

आखिर वह एक घास के मैदान में पहुंच गया जहां पर वह बैठ गया।

पर पास वाले जंगल से जब जंगली हाथियों द्वारा पेड़ों को तोड़ने की आवाज सुनाई पड़ी तो मात्तन ने वहां से भी उठकर भागना शुरू कर दिया। वह उस पहाड़ी की दूसरी ओर की चट्टानों की ओट में जाकर गिर पड़ा और वहीं पड़ा रहा।

वह सोच रहा था कि किस प्रकार अपनी झोंपड़ी तक पहुंचे। लेकिन उसे दिशा का ज्ञान नहीं था। चारों ओर ऊंची-ऊंची पहाड़ियां थीं और पहाड़ियों पर एक हल्का नीला धुआं फैला हुआ था जिससे राह ढूंढना मुश्किल हो गया था।

प्यास से मात्तन की जीभ सूख गई थी। धूप तेज थी। वह धीरे से उठकर पानी की खोज करने लगा। पहाड़ी के एक कोने में एक नाला बह रहा था। नाले में उतरकर वह बैल के समान मुंह से पानी सुड़क-सुड़ककर पीने लगा। उसने पेट भरकर पानी पिया। पानी पीने के बाद उसको थोड़ी-सी शांति मिली।

वह आधा घंटा उस नाले के किनारे छाया में विराम करता रहा। वहां भी उसको डर लगा हुआ था। नाले के किनारे कीचड़ पर बाघ के पांव के निशान दिखाई दे रहे थे।

मात्तन को झोंपड़ी की ओर जाने की इच्छा थी, इसलिए वहां से उठकर चल पड़ा। वह कई पहाड़ियों को पार करता हुआ एक ऐसे जंगल में पहुंच गया जहां से आगे बढ़ना उसके लिए मुश्किल था। वह बहुत घना जंगल था।

उसको यह मालूम नहीं था कि उसे आगे क्या करना है। वह वहां पर एक बड़ी चट्टान की छाया में खड़ा हो गया।

उसी समय कुछ दूरी पर लोगों की चिल्लाहट और शोरगुल की आवाज सुनाई दी। मात्तन ने आंखें खोलीं और देखने लगा। मनुष्यों की आवाज लगती है। यह जानकर उसे खुशी हुई। फिर जब उसने अपने आपको देखा तो वह चौंक गया। उस समय वह नग्नावस्था में था। वह अपनी धोती को उस अजगर के शरीर पर छोड़ आया था जहां पर वह लेटा था। आदमियों का कोलाहल तेज होता गया, मानो उसकी ओर बढ़ा आ रहा हो। उसने बंदूक की गोली का धमाका भी सुना।

मात्तन घबराकर उसी चट्टान से सटकर खड़ा हो गया।

फौरन मात्तन के सामने एक अजीब प्राणी कूदकर आया।

वह एक जंगली आदमी-सा लगता था। उसका शरीर एकदम काले रंग का था। उसके पूरे मुंह पर छोटे-छोटे दाग थे। उस जंगली आदमी ने बगल में एक नंगी औरत को दबा रखा था। वह उससे छुटकारा पाने के लिए हाथ-पैर जोर-जोर से झटक रही थी। उस औरत को उसने अपने कंधे पर बलपूर्वक लादा और उस जंगल की ओर भागा। वह भयानक जंगली मनुष्य क्षणभर में उस घने जंगल के भीतर ओझल हो गया।

मात्तन निश्िंचत और निश्चल होकर खड़ा रहा। मात्तन को ऐसा लगा मानो वह भूतों की भयानक अजीब दुनिया में पहुंच गया है।

"वहां है, एक चट्टान के पीछे। उसको वहीं खत्म करो।" साथ ही गोलियों की आवाज भी आ रही थी। मात्तन के सामने ही चट्टान का एक टुकड़ा फटकर दूर गिर पड़ा। वह भी नीचे गिर गया। मात्तन के उठकर खड़े होने से पहले ही उसके हाथ-पैर बांध दिए गए थे।

"एक मिल गया।" कुछ लोग जोर-जोर से पुकारने लगे।

बंदूक, लाठी, भाला आदि लिए हुए चार-पांच नायर और दस-पंद्रह गंदे पणियर लोगों के एक संघ ने मात्तन को घेर लिया।

नग्न रूप में खड़े हुए मात्तन को वे लोग गुस्से से घूरने लगे।

"इस जंगली के गले में क्या लटक रहा है ?" एक ने पूछा।

"इसने कहीं से कोई लोहे का टुकड़ा चुराया होगा। दूसरे ने जवाब दिया।"

"यह तो जंगली नहीं मालूम पड़ता। इसके बाल साफ हैं।"

"अरे यह तो कोई अरबी है, अरबी।" दूसरे ने जोर देकर कहा, "इस तरह का एक प्राणी पिछले साल भी दिखाई पड़ा था। उसको देखकर कुंजुबु नायर डर कर भाग गया था।

"अरे तू जंगली है या अरबी ?" एक नौजवान ने मात्तन के सिर पर जोर

का एक थप्पड़ मारते हुए पूछा।

मात्तन चुपचाप रहा। उसका सिर मरियम के घूसों और थप्पड़ों से सूजा हुआ था।

"यह कुछ बोलता है—अरबी ही होगा।" उन लोगों ने सोचा।

वे लोग उस कैदी को खींचते हुए नारायणन नंबियार के खलिहान की ओर चल पड़े।

चालीस

उस खलिहान में नारायणन नंबियार जंगली खेतों की फसल कटवाकर रखा करता था। वह कभी-कभी वहां पर बने मकान में आकर रहता था। वह मकान जंगल में बनाया गया था। जब वे शिकार खेलने आते तभी उस मकान में कुछ दिनों तक डेरा डाले रहते।

वह मकान एक सुंदर पहाड़ी घाटी में बनाया गया था। उस मकान से थोड़ी दूरी पर पणियर लोगों का छोटा-सा गांव था।

मकान से एक मील की दूरी पर एक घना जंगल था। उसके भीतर कभी कोई आदमी नहीं जाता था। आसमान तक ऊंचे-ऊंचे पेड़। भीतर जाने के लिए कोई रास्ता ही नहीं था। उस भयानक जंगल के भीतर जाने की किसी की हिम्मत नहीं पड़ती थी। वहां की चौकोर पहाड़ियों के भीतर की झील में पुराने युग के विचित्र जल-प्राणी हैं। पानी के ऊपर बड़े-बड़े कमल के फूल दिखाई पड़ते थे। उस घने जंगल के भीतर पुराने जमाने के किले के खंडहर भी दिखाई पड़ते थे। जंगली हाथी उस किले के पास तक पहुंचते और डर के मारे वापस लौट पड़ते थे।

उस जंगल में रहने वाले जंगली लोगों के शरीर बिल्कुल काले और पूरे शरीर पर बाल ही बाल थे। जंगली औरतें उस झील में डुबकी लगाती थीं और कमल की जड़ों को काट-काटकर ले आया करती थीं। उस जंगल के पेड़ों पर ऐसे सांप लटकते रहते थे जिनके सिरों पर फूल होते थे।

इस तरह की कई कहानियां उस अज्ञात भूमि के बारे में प्रचलित थीं।

कुछ साहसी शिकारी लोग उस जंगल की खोजबीन करने के लिए उस जंगल के किनारे तक ही पहुंच सकते थे।

ऐसा सुना जाता था कि उस किले के भीतर 'अरबी और उसके बच्चे' रहते हैं। यह अरबी कौन है ? और उसके बेटे कैसे हैं ? यह बात किसी को

भी मालूम नहीं। उस जंगल के भीतर की बातें एक दिवास्वप्न के समान विस्मरणीय थीं।

लेकिन लोक प्रचलित था कि उस मायालोक के आस-पास कहीं जंगली आदमी भी रहा करते थे ऐसा भी सुना जाता था कि वे जंगली राक्षस कभी-कभी घाटी में उतर आते थे। और पणियर लोगों की औरतों को पकड़कर अपने साथ ले जाया करते थे। उस समय पणियर जोरों से शोर मचाते और चिल्लाते भी थे। उस शोरगुल को सुनकर पास वाले खेतों से सब लोग दौड़कर आ जाते थे। वे लोग मिलकर कभी चोरों को पकड़कर मारते थे तो कभी गोली भी चलाते थे। प्रायः वे जंगली उन औरतों को लेकर आसानी से उस जंगल के भीतर भाग जाते थे।

एक बार एक जंगली राक्षस औरतों को चुराने के लिए जब घाटी में उतरकर आया था तो उसी समय एक औरत को भगाते समय एक जंगली आदमी के बदले मात्तन गलती से गांव वालों के हाथ में आ गया।

नारायणन नंबियार और साथी मात्तन को खींचकर अपने खलिहान के आंगन में ले गए। खलिहान के बरामदे में पांच अतिथि भी बैठे हुए थे। वे अतिथि नारायणन् नंबियार के साले कुंजिअनंत कुरुप्प के साथ आए हुए थे।

नारायणन नंबियार हंसते हुए अपने साले के पास गया।

"अरे कैसे हो ?" अगर पहले खबर मिली होती तो मैं तुम्हारा इंतजार करता।

"ये लोग कौन-कौन हैं ?"

"अभी बताता हूं।" कुंजिअनंत कुरुप्प ने उस नग्न कैदी की ओर देखते हुए आश्चर्य के साथ पूछा, "आप लोग शिकार खेलते समय इस प्राणी को कैसे पकड़ कर ले आए ? यह वनमानुष है क्या ?"

"यह अरबी है ! अरबी ! आपने केवल अरबी के बारे में सुना ही होगा, अब आप अरबी को आंखों से देख सकते हैं। हम पणियर लोगों को ये अरबी लोग भगा रहे थे। तभी यह अरबी चट्टानों के बीच में छिपा खड़ा था। हमने इसको पकड़ लिया।" नंबियार ने विवरण दिया। मात्तन बहुत दुखी था और धीरे से सिर उठाकर बरामदे में बैठे सब लोगों की ओर देख रहा था। उन अतिथियों के बीच में एक परिचित चेहरे को देखकर मात्तन की आंख बाहर आने लगी। उसने तुरंत ही अपना हाथ हिलाया और विनती करने लगा, "जोण साहब, जोण साहब, मुझे बचाइए।"

वे लोग यही सोच रहे थे कि वह अरबी है। अब वे लोग आश्चर्यचकित हो गए कि वह मलयालम भाषा में कैसे बात कर रहा है।

जोण ने आगे आकर मात्तन के कंधे पर हाथ रखकर पूछा—अरे ! तुम

यहां कैसे ? तुम तो हमारे मात्तन हो न ? तुम कैसे इस तरह फंस गए ?

"हुजूर, मैं आपको सारा वृतांत सुनाता हूं।"

मात्तन ने दुखी होकर कहा, ''हुजूर ! मुझे खुलवा देने को कह दीजिए न ? मात्तन जमीन पर दो बार कूद पड़ा।

जोण ने नारायणन नंबियार से प्रार्थना के स्वर में कहा, "मेहरबानी करके इस आदमी को खोल दीजिए। यह न तो अरबी है और न हब्शी। यह तो हमारे ही जैसा तिरुवितांकूर से आकर बसा हुआ एक गरीब ईसाई है। यह एक नया बासिंदा है।"

नारायणन नंबियार ने चकित होकर मात्तन को देखा। फिर जोर से हंसते हुए कहा, "अरे बदमाश ! तूने तो हम सबको बेवकूफ बना दिया है। शरीर पर एक सूत तक नहीं पहना है और घने जंगल में घूम रहा है। अभीतक तुमने एक शब्द तक नहीं बोला। शायद यह पागल भी हो सकता है ?" नारायणन नंबियार ने जोण की ओर देखकर पूछा।

"पागल तो नहीं है", जोण ने हंसी दबाते हुए कहा, "इस आदमी की आदत ही ऐसी है।"

जोण ने अपना अंगोछा लेकर मात्तन की कमर में बांध दिया।

"इसका धंधा क्या है ? इस तरह घूमना-फिरना ही इसका धंधा है ?'' कुंजिअनंत कुरुप्प ने पूछा।

"ऐसा नहीं है, इस आदमी की अपनी खेती-बाड़ी वगैरह है।" मेहमानों से चेरियान महाशय ने कहा।

"कहां ?"

"जोण साहब के बगान से छह मील पश्चिम दिशा में, कलियन पहाड़ी पर।"

"बाबा ! कलियन पहाड़ी पर ?" नारायणन नंबियार ने आश्चर्यचकित होकर पूछा।

"यहां से कम से कम दस मील दूरी पर है। वहां से किस रास्ते से यह यहां तक घने जंगल से होकर आया ?"

"वे सब बाद में पूछेंगे ? इसको थोड़ा खोल दीजिए।"

"अरे अंबू ! इसको खोल दो।" नारायणन नंबियार ने अपने मुख्तार अंबुकुरुप्प को आज्ञा दी।

इस प्रकार मात्तन स्वतंत्र हो गया।

मुख्तार अंबुकुरुप्प और इसके साथी दूसरे नायर लोगों को बहुत निराशा हुई और गुस्सा भी आया। वे बहुत मुश्किल से उसे पकड़कर लाए थे। उसे ऐसा बांधा हुआ था जैसे किसी रीछ को बांधकर ले आते हैं। अब तो वह दक्षिण

से आया हुआ एक चेट्टन निकला। उनके मन में आया कि उस गंजे चेट्टन का सिर पत्थर लेकर फोड़ दे।

मात्तन हाथ फैलाकर आंगन में सिर झुकाकर बैठा रहा। जोण धीरे से उसके पास जाकर बैठ गया और सारा कुछ पूछकर समझने की कोशिश करने लगा।

मात्तन की साहसिक यात्रा का विवरण सुनकर वे सब लोग आश्चर्य में पड़ गए। उन्हें हंसी भी आने लगी।

कुंजिअनंत कुरुप्प ने अपने साथियों का परिचय नारायणन नंबियार से कराया।

"आप रिटायर्ड पुलिस इंस्पेक्टर माधवन अटियोडी हैं। आप अटियोडी के बहनोई दामोदर कुरुप्प मिलिट्री में कमीशंड अफ्सर हैं। और ये हमारे मिस्टर जोण, यहां के एक बागान के मालिक हैं। वे दोनों व्यक्ति जोण के दोस्त हैं—मिस्टर चेरियान और मिस्टर वर्गीज तिरुवितांकूर से यहां आकर बसे जमींदार लोग हैं। हम सब दो दिन से शिकार खेलने के लिए यहां आए हैं।"

"बहुत खुशी की बात है" नारायणन नंबियार ने मेहमानों का स्वागत करते हुए कहा।

"एक बड़े शिकार का सारा प्रबंध कर देता हूं। मैं भी आपके साथ आऊंगा। शाम तक हम निकल चलेंगे। अब आप लोग भोजन करके मजे से आराम कीजिए।"

नारायणन नंबियार ने अंबुकुरुप्प को बुलाकर सबके लिए बढ़िया खाना बनाने के लिए प्रबंध करने का आदेश दिया।

"आप लोग इधर बैठिए। मैं पणियर लोगों की झोंपड़ियों तक होकर आता हूं। मालूम नहीं है कि वे जंगली अरबी कितनी पणियर औरतों को उठाकर ले गए हैं।

नारायणन नंबियार एक-दो नायर लोगों को साथ लेकर पणियर की झोंपड़ियों की ओर चल पड़ा।

पणियर की झोपड़ियों से रोने-चिल्लाने की आवाज आ रही थी। तीन पणियर औरतें दिखाई नहीं दे रही थीं।

नारायणन नंबियार ने उन लोगों को जब यह विश्वास दिलाया कि जिन पणियर लोगों की बीवियां खो गई हैं, उनको दुबारा शादी करने के लिए चावल, कपड़ा, शराब और कुछ रुपए भी दिए जाएंगे। तब वे लोग शायद शांत हुए और उनका चिल्लाना बंद हुआ।

फिर शिकार की तैयारी शुरू हो गई।

बंदूकें साफ करके रखी गई। टार्चों में नए सेल डाले गए। गोलियां ठीक-ठाक की गई। शिकारी थैलियां बांधी गई। जंगल में खाने के लिए भोजन रखा गया।

जंगल में रास्ता दिखाने, सामान ढोने और सहायता करने के लिए कुछ शिकारी पणियर लोगों को भी बुलाया गया।

शाम होते-होते वे निकल पड़े। उस जत्थे में मात्तन को भी मिलाया गया। नारायणन नंबियार ने मात्तन को पहनने के लिए एक निकर और खाकी कोट दिया।

इकतालीस

मैसूर के कुर्ग की पहाड़ियों से शुरू होने वाली पहाड़ी नदी चट्टानों, सुरंगों, विशाल घने जंगलों से होते हुए बड़ी तीव्र-गति से बह रही थी। वह नदी दो पहाड़ियों के बीच में से गुजरकर तराई में प्रविष्ट हुई और अंत में एक बड़े गहरे गड्ढे में आराम करने लगी।

उस गोलाकृति गड्ढे के चारों ओर घना जंगल था। शीशम, सागवान आदि के ऊंचे-ऊंचे पेड़ों पर मोटी जंगली बेलें लटकी हुई थीं, जिनमें बहुत-से जंगली सांपों का वास था। घने जंगलों के कारण एक इंच भी जमीन नहीं दिखाई दे रही थी। बांस की झोपड़ियों के बीच में से हुंकार की आवाज सदा सुनाई पड़ती थी।

फाल्गुन का महीना आरंभ हो गया था। वहां के गड्ढों का लगभग आधा पानी सूख गया था। उन गड्ढों के किनारे पर जो चट्टानें हैं वे बरसात के दिनों में पूरी तरह से पानी में डूबी रहती थीं। लेकिन आजकल पूर्ण नग्न दिखाई पड़ रही थीं। जहां पानी सूखकर केवल कीचड़ मात्र रह गया था, वहां बाघों के पैर के निशान पड़े हुए थे। नदी में जहां पानी बहता था, वहां अब रंग-बिरंगे गोल-गोल चिकने पत्थर पड़े थे।

उस नदी का टेढ़ा-मेढ़ा दृश्य अब ऐसे दिखाई दे रहा है जैसे कि कोई जंगली सांप लेटा हुआ हो और उसने जगह-जगह अंडे दे रखे हों।

उस रात को वहां पर असाधारण शोरगुल सुनाई दे रहा था। उस निरीह प्रदेश में कुछ मनुष्यों की आवाज सुनाई पड़ रही थी। जंगली बेलों और झाड़ियों को काटकर कुछ आदमी रास्ता बनाते हुए उस पानी के जोहड़ों की ओर आ रहे थे। हाथों में खुखरी पकड़े हुए थे और लोगों के सिरों पर जंगली झाड़ियों के गट्ठर रखे हुए थे। उनके पीछे-पीछे तीर-कमान, मछली की टोकरियां आदि लिए हुए औरतों का जत्था आ रहा था। उनके पीछे चटाई, मशालें और मिट्टी आदि के बर्तन लिए हुए बहुत सारे बच्चे आ रहे थे और उनके साथ-साथ बहुत

सारे कुत्ते भी आ रहे थे। उस पानी के तालाब के पास पहुंचकर आदमियों ने अपने सिर पर रखी लकड़ी की गठरियों को नीचे उतारा और विश्राम करने लगे। औरतों ने भी तीर-कमान नीचे रखकर तालाब के पास फर्श तैयार किया। बच्चे अपने हाथ में लिए हुए सामान को इधर-उधर रखकर तैरने के लिए तालाब में कूद पड़े। कुत्ते इधर-उधर घूमते रहे।

वे लोग वहां से छह मील दूरी के कारिपाला गांव के निवासी हैं। कुल मिला कर करीब एक सौ आदमी थे। वे उस तालाब में मछलियां मारने के लिए नशीले पेड़ के पत्तों को कूटकर डालने के लिए आए हुए थे।

शाम हो गई थी। औरतें भोजन तैयार करने लगीं। आदमी तालाब के दोनों ओर बांध बनाने की कोशिश में थे। तालाब में नदी के मुहाने पर एक बड़ा पेड़ खड़ा था। चंदिरन ने सुझाया कि 'उस पेड़ के नीचे बांध बनाना उचित होगा।'

वे लोग बड़े-बड़े पत्थरों को खींचकर लाने लगे और उस तालाब के ऊपर तंग जगह में बांध बनाने के लिए डालने लगे। उसके बाद जो छेद रह गए थे उनमें उन्होंने छोटे-छोटे पत्थर और पेड़ों की डालियां ठूंसकर उस बांध को ऐसा कर दिया कि पानी का रिसना तक बंद हो गया। तालाब के नीचे उन लोगों ने दूसरा एक बांध भी बना लिया।

छोटे बच्चे जंगली बेंतों को काट-काटकर नए तीर-कमान बनाने लगे।

रात पड़ने वाली थी। जंगली जानवरों को डराने के लिए उन्होंने सूखे पेड़ों में आग लगा दी। सूखी झाड़ियों को मशाल के रूप में हाथ में लेकर इधर-उधर हजारों लोग घूम रहे थे। परछाइयों को देखकर कुत्ते जोर-जोर से भौंक रहे थे।

चंदिरन नदी के किनारे जहां-तहां कुछ गड्ढे बनाने लगे। चामन और अंबू ने नशीले पौधे के पत्तों को तोड़-मोड़कर उन गड्ढों में भर दिया और ऊपर से रेत डालकर कुछ पानी भी डाल दिया। आदमी और औरत हाथों में नुकीली लाठियां लेकर गड्ढे में पड़े उन नशीले पौधों के पत्तों को जहर बनाने के लिए कूटने को तैयार खड़े हो गए। एक-एक गड्ढे के चारों तरफ छह-छह या सात-सात आदमी और औरतें खड़ी हो गईं। उसके पास ही उन्होंने गाना भी शुरू कर दिया।

गीत के लय के साथ ही साथ मूसलें गड्ढे में चलने लगीं। जैसे कुम्हार का चक्का घूमता है। वे भी उसी तरह घूमते और मूसलें गड्ढों में मारते रहे।

वे पुराने जमाने के बहादुर लोगों की वीरगाथाएं गा रहे थे। उनमें से चंदप्पन बूढ़ा हो गया था। वही लंबी सांस ले लेकर गा रहा था। दूसरे लोग उसके गाने की धुन को दुहरा रहे थे।

शिकारी ने शिकार करते समय बाघ को खत्म कर दिया था और उसकी जीभ काट ली थी, लेकिन लौटते समय उसे एक सांप ने काट लिया और वह

रास्ते में ही मर गया।

अंग्रेजों से लड़ाई करते समय पषशी राजा हार गया। अपनी इज्जत के डर से उसने अपनी अंगूठी के हीरे को निगल लिया और इस दुनिया से चल बसा। उन लोगों के गीतों का ऐसा-ऐसा अर्थ था। गाते समय वे लोग बीच-बीच में ताली बजाकर जोर-जोर से चिल्लाते भी थे।

उन नशीले पत्तों और डालियों को कूटकर उन्होंने एक जगह ढेर लगा लिया था। फिर उन्होंने दुबारा उन गड्ढों में उसी प्रकार पत्ते, डालियां रेत और पानी डाला और कूटने लगे।

"रामा, इन कूटे हुए नशीले मसाले को इकट्ठा कर लो।"

कुछ लोग चिल्लाए।

"केला, मिट्टी लाओ।" दूसरे लोग भी चिल्लाने लगे।

फौरन ही सब कुत्ते मिलकर भौंकने लगे। उसी वक्त जंगल के भीतर से शोर गुल सुनाई देने लगा और रोशनी की किरणें फैलने लगीं।

करिपाला लोगों ने अपना गाना बंद कर दिया और उस आवाज को ध्यान से सुनने लगे। वे लोग शिकारी थे जो शिकार की खोज में टार्च की रोशनी फैला रहे थे।

नारायणन नंबियार और उसके कुछ साथी नदी के किनारे पहुंच गए।

करिपाला लोगों का प्रधान चंदप्पन आगे बढ़ा और नंबियार को प्रणाम करके उसके सामने सिर झुकाकर विनीत भाव से खड़ा हो गया।

चंदप्पन और उसके सभी साथी नारायणन नंबियार के नौकर थे।

"क्यों चंदप्पन, पानी में नशीला मसाला डालने आए हो ? खुशी की बात है, क्योंकि हम भी इस तरफ शिकार खेलने आए हैं।"

"मालिक की जैसी आज्ञा हो" चंदप्पन हाथ जोड़कर खड़ा रहा।

उसके बाद अडियोडी की ओर मुड़कर नारायणन नंबियार ने कहा, "यदि आपकी तबीयत ठीक नहीं है, तो लेटकर आराम कीजिए। आपकी सेवा के लिए मात्तन को इधर छोड़ देंगे। हम लोग शिकार खेलकर बड़े सवेरे यहां पहुंच जाएंगे।"

अडियोडी ने यह सुझाव स्वीकार कर लिया। चंदप्पन को बुलाकर अडियोडी ने आज्ञा दी।

"मालिक को इधर छोड़कर हम लोग जाते हैं। इनकी पूरी सेवा होनी चाहिए।"

"मालिक की जैसी आज्ञा" चंदप्पन ने विनीत स्वर में जवाब दिया।

"मात्तन कहां है ?" नारायणन नंबियार ने मात्तन को बुलाया।

मात्तन सिर झुकाते हुए आगे आया। उसने कंधे पर दो हरिणों और कुछ

खरगोशों को रखा हुआ था जो शिकार करते हुए मारे गए थे।

"तुम भी इधर बैठो।" नारायणन नंबियार ने कहा।

"सोना मत।"

नारायणन नंबियार अपने साथियों के साथ जंगल में घुसकर नजरों से ओझल हो गया।

चंदप्पन ने अडियोडी के सोने के लिए पत्तों का एक बिस्तर तैयार किया। अडियोडी उस हरे पत्तों के बिस्तर पर लेट गया।

फिर जंगल के भीतर से कुछ अस्पष्ट आवाज सुनाई दी। उसे सुनकर मात्तन डर गया। वह उस समय आग के नजदीक बैठकर आग सेंक रहा था। आग के पास कच्चा मांस रखकर चुपचाप बैठे रहना मात्तन को ठीक नहीं लगा। उसने हरिण की एक जांघ काटकर आग में डालकर भूनी। जब गोश्त पकने लगा तो उसकी गंध पाकर सारे कुत्ते मात्तन के पास चक्कर काटने लगे। मात्तन उन कुत्तों की परवाह किए बिना उस पके गोश्त को काट-काटकर खाने लगा।

अडियोडी आसमान की ओर चेहरा करके बिस्तर पर लेटा रहा। बादल बिल्कुल नहीं थे। आसमान पर हजारों तारे चमक रहे थे। उस समय भी करिपाला लोग धीमी आवाज में गा रहे थे। उनके गीतों को सुनते-सुनते अडियोडी को नींद आ गई।

वह कितनी देर इस तरह सोए रहा, उसको मालूम ही नहीं। कुत्ते मिलकर जब जोर-जोर से भौंकने लगे, तब अडियोडी ने जागकर आंखें खोली।

सब करिपाला लोग चटाई बिछाकर सो गए थे। उन्होंने धीरे से मात्तन की ओर देखा। उन्होंने देखा कि पास वाले पेड़ों के बीच में एक छाया हिल रही है। अकस्मात एक छोटी पोटली मात्तन के पास आकर गिरी और मात्तन ने फौरन उसको उठाकर अपने खाकी कोट की भीतरी जेब में रख ली। जब मात्तन ने नजर घुमाकर संदेह के साथ अडियोडी की ओर देखा तो अडियोडी आंखें बंद करके सोने का बहाना करने लगा।

पांच मिनिट बाद अडियोडी ने आधी आंख खोलकर उसकी तरफ देखा। वह छाया ओझल हो गई थी। मात्तन एक लकड़ी पर सिर रखकर सोने की तैयारी कर रहा था।

काफी सोचने के बावजूद अडियोडी को उस घटना में छिपी हुई बात समझ में नहीं आई। अडियोडी के मन में आया कि उस घटना के पीछे कोई न कोई रहस्य जरूर है।

वह क्या हो सकता है ?

आधे घंटे के बाद अडियोडी उठकर बैठ गया और चारों तरफ देखने लगा। नशीली सामग्री को कूटकर थके हुए करिपाला लोग गहरी नींद में सो रहे

थे। पेड़ों के नीचे करिपाला औरतें और बच्चे भी सो रहे थे। कुत्ते तक गहरी नींद में सो रहे थे। मात्तन सांस लेते समय खुर्राटे भरकर सो रहा था।

अडियोडी मात्तन के पास धीरे से उठकर पहुंचा। उसके सामने जो आग थी। उसमें अब केवल अंगारे मात्र रह गए थे।

अडियोडी ने मात्तन के चेहरे की ओर देखा। मात्तन गहरी नींद में सो रहा था। अडियोडी ने बहुत संभालकर मात्तन के खाकी कोट की भीतरी जेब में हाथ डालकर उस पोटली को निकाला। उसमें एक लिफाफा था। लिफाफे के भीतर दस रुपए के नोटों की एक गड्डी थी। सब एकदम नए-नए नोट थे। वह नोटों की गिनती कर नहीं सका। केवल अंदाजा लगाया कि करीब सौ नोट होंगे।

अडियोडी ने नोटों को लिफाफे में डालकर उसे मात्तन के कोट की जेब के भीतर वैसे ही डाल दिया और वापस आकर अपने बिस्तर पर लेट गया। फिर अडियोडी को नींद नहीं आई। उसने सोचा कि फिर भी कोई घटना हो सकती है, इसलिए मात्तन की ओर देखते हुए लेटा रहा। पर कुछ भी नहीं हुआ।

बयालीस

बड़े सवेरे ही करिपाला लोगों ने उठकर मशालें जलाई। बड़ी-बड़ी लकड़ी काटकर पहले से ही पानी के किनारे डाली हुई थीं। वे लोग मशालें हाथ में लेकर लकड़ियों पर बैठकर पानी के तालाब के भीतर उतरे और पूरा नशीला सामान पानी में चारों तरफ घोल भी दिया। सारा जहर पानी में फेंकने के बाद वे लोग उन लकड़ियों को लेकर किनारे पहुंचे और दुबारा सोने चले गए।

अडियोडी ने जागकर आंखें खोली तो करीब-करीब सवेरा होने वाला था। करिपाला लोग बड़े जोश-खरोश के साथ मछली के शिकार की तैयारी कर रहे थे। करिपाला औरतें नाश्ता बनाने के लिए अंगीठी जला रही थीं। मात्तन पैरों के बीच में हाथ अड़ाकर बड़ी जोर की आवाज के साथ खर्राटे भर रहा था।

अडियोडी बैठकर सिगरेट पीने लगा। पिछली रात का हादसा उसके मन को दुबारा तंग करने लगा। शिकार खेलने के लिए गए हुए लोग अभी तक वापस नहीं आए।

सवेरा हो गया। घासों की कोपलों और पेड़ों के पत्तों पर जो ओसकण थे, वे सब सूर्य देवता के प्रकट होने के कारण ओझल होते जा रहे थे। उस तालाब का पानी अब रोशनी में चमकने लगा। जैसे-जैसे सूर्य आसमान पर चढ़ने

लगा तालाब का पानी गरम होने लगा। उसी के साथ नशे की शक्ति भी बढ़ने लगी। नशा लगने से मछलियों की आंखें जलने लगीं और पानी में कभी ऊपर आती तो कभी डुबकी लगाती। यह क्रम निरंतर चलने लगा।

करिपाला आदमी और औरतें तीर-कमान और टोकरी लेकर पानी में उतरकर खड़े हो गए। कुछ लोग खुखरी हाथ में लेकर लकड़ियों पर बैठकर तालाब के भीतर चले गए। एक-दो आदमी जाल लेकर पानी के भीतर इधर-उधर घूमने लगे।

नशा लगने के कारण तड़पती हुई मछलियां पानी के ऊपर ही ऊपर तैरने लगीं और वे लोग तीर मारने लगे। तीर लगने पर तड़पकर मछलियां पानी के भीतर डुबकी लगाती थीं। पर तीर और तीर के पीछे लगी हुई रस्सी मछली को बचने नहीं देती थी। वे लोग रस्सी पकड़कर खींचकर मछली को बाहर निकालकर तीर को निकाल लेते थे। मछली के सिर फोड़कर टोकरी में डालते थे। बांध के ऊपर इधर-उधर रखी हुई बड़ी-बड़ी टोकरियां मछलियों के ढेर से भर गईं।

पानी अच्छी तरह गरम होने के बाद बड़ी-बड़ी मछलियां भी प्रत्यक्ष होने लगीं। लकड़ियों पर खुखरी के साथ बैठे हुए करिपाला नौजवान उन बड़ी मछलियों का भी शिकार करने लगे।

अडियोडी ने घड़ी की ओर देखा। दस बज गए थे। शिकारी लोग अभी तक वापस नहीं आए। उसके मन में कई तरह के डर और संदेह पैदा होने लगे।

मात्तन ने अपने खाकी कोट को उतारकर एक पेड़ के नीचे रखा। केवल निकर मात्र पहनकर करिपाला लोगों के साथ मछली मारने लगा है।

गयारह बज गए।

मछली के शिकार के बाद करिपाला लोग भोजन करने लगे। छोटे लड़के छोटी मछलियों को आग में भूनकर खा रहे थे। औरतें मछलियों की खाल उतार कर पेट और गला साफ करके सुखाने लगीं। वे लोग उन सूखी मछलियों को बारिश के दिनों में खाने के लिए इस्तेमाल करते थे।

करिपाला लोग अब वापस घर जाने के लिए तैयार खड़े थे। मछलियों में सबसे अच्छी और बड़ी मछलियों को चुनकर एक जगह ढेर लगा रखा था। वे मछलियां मालिक को देने के लिए थीं। वे लोग मालिक का इंतजार करने लगे।

तालाब के किनारे पेड़ों का झुंड था। उसके बीच में से नारायणन नंबियार और उनके साथी प्रगट हुए।

नंबियार के दोनों कंधों पर दो बंदूकें रखी हुई थीं। पीछे से वर्गीस की लाश लेते हुए कुंजिअनंत कुरुप्प और दामोदर कुरुप्प चले आ रहे थे। शिकारी थैले, टार्च, बंदूकें आदि लेते हुए बाकी लोग भी आ गए। उनके साथ एक भूत

के समान खाली हाथों चेरियान भी आया।

सब लोग निश्शब्द और उदास दिखाई दे रहे थे। जैसे सब लोग श्मशान से लौट रहे हों।

अडियोडी घबराकर उनकी ओर दौड़ पड़ा और पूछने लगा, "क्या हुआ ?" उन लोगों ने वर्गीस को एक चटाई पर लिटाया। अडियोडी ने वर्गीस की नाड़ी जांचनी चाही, लेकिन नारायणन नंबियार ने रोकते हुए कहा, "नहीं, स्पर्श मत करना, लाश है।"

"अरे बाप रे ! वर्गीस मर गया ? कैसे ? शेर ने पकड़ लिया था क्या ?"

"नहीं" नारायणन नंबियार सिर हिलाकर कंधों की बंदूकें नीचे रखकर एक चट्टान पर बैठ गया। कुछ देर स्तब्धता से उसकी ओर देखता रहा, कुछ बोला नहीं।

"वर्गीस कैसे मरा ?"

"गोली लगने से मरा।" नारायणन नंबियार ने बहुत दुखी होकर कहा।

अडियोडी ने सबकी ओर संदेह के साथ देखा।

"गलती से गोली लग गई थी क्या ?" अडियोडी ने नारायणन नंबियार से पूछा।

"ऐसा ही समझो। अब मजबूर हैं।"

अडियोडी ने संदेह के साथ चेरियान की ओर और फिर मात्तन की ओर देखा।

मात्तन मछलियों की एक टोकरी हाथ में लिए हुए चेरियान के समीप अचंभे से मुंह खोलकर खड़ा हुआ था।

पिछली रात जो छाया हमारी ओर बढ़ रही थी, वह मात्तन की ओर फेंकी गई पोटली थी। उस पोटली के बारे में अडियोडी ने याद किया। वह मात्तन और चेरियान के बीच की घटनाओं को बांधने वाली एक कड़ी थी, जिसे उसने आसानी से समझ लिया था।

"अब तुम लोग क्या करने की सोच रहे हो ?" अडियोडी ने पूछा।

"फौरन खलिहान को जाना चाहिए। जाते ही पुलिस को खबर भी देनी है।" नंबियार ने कहा।

पर वे लोग उसी समय नहीं निकल सके। वे सब बहुत थके हुए और भूखे भी थे। इसलिए उन्होंने वहीं थोड़ी देर विश्राम करके आगे बढ़ने का निश्चय किया।

तैंतालीस

खलिहान में पहुंचते ही नारायणन नंबियार ने एक चिट्ठी लिखी और अपने मुख्तार को चिट्ठी देकर पुलिस स्टेशन पहुंचाने को कहा। उन्होंने जोण, चेरियान और मात्तन को जबरदस्ती पकड़ खलिहान में बिठाया।

शाम होते-होते दो पुलिस के सिपाहियों को साथ लेकर पुलिस इंस्पेक्टर सुलेमान खलिहान में पहुंचा। अडियोडी जब पुलिस इंस्पेक्टर था तब सुलेमान इंस्पेक्टर अडियोडी का अर्दली था। बाद में इंस्पेक्टर अडियोडी की सिफारिश पर ही सुलेमान को तरक्की मिली थी।

अपने पुराने बॉस को वहां देखकर सुलेमान ने बहुत आदर के साथ सैल्यूट मारा। अडियोडी सुलेमान को मकान के ऊपर की मंजिल में ले गया। वहां उन दोनों ने एक घंटे तक गुप्त बातचीत की। उसमें नारायणन नंबियार भी शामिल था। उसके बाद इंस्पेक्टर ने नीचे उतरकर जोण को अलग एक कोने में बुलाकर बातचीत की। फिर चेरियान और मात्तन को अपने पास बुलाया।

"वर्गीस की मृत्यु के बारे में तुम्हें कुछ पता है ?" इंस्पेक्टर ने पूछा।

"मालिक ! मुझे कुछ भी पता नहीं। हम सब बंदूकें तैयार करके जंगल में जगह-जगह बैठे हुए थे। उसी बीच गोली की आवाज सुनाई पड़ी। मैंने सोचा कि बारहसींगा या शेर को गोली मारी गई है इसलिए मैंने टार्च दिखाकर साथियों को बुलाया। कोई जवाब नहीं मिला। मैंने जंगल में ढूंढा, तो वर्गीस एक जगह गिरा पड़ा था। वह मर चुका था। मुझसे विश्वास करना मुश्किल हो गया। मैं घबरा गया। थोड़ी देर में नारायणन नंबियार और साथी लोग वहां पहुंच गए। इतना ही मुझे मालूम है। मुझे मालूम नहीं है कि किसकी बंदूक की गोली से वर्गीस की मृत्यु हुई। शायद, गलती से वर्गीस की बंदूक से गोली निकली होगी। हमने वर्गीस की बंदूक की जांच की तो उसमें एक गोली कम थी।

दुख के कारण चेरियान आगे कुछ कह नहीं सका। आंगन में मंच पर पड़ी लाश की ओर इशारा करते हुए चेरियान ने कहा—मैं और वर्गीस भाई-भाई के समान थे। पिछले कुछ समय से मैं ही वर्गीस को खर्च के लिए रुपए-पैसे दिया करता था।

"तुमने कभी गोली नहीं चलाई ?" इंस्पेक्टर ने पूछा।

"मैंने कल एक भी गोली नहीं चलाई। मेरी बंदूक में पूरी गोली भरी हुई है।"

इंस्पेक्टर ने मात्तन को बुलाया, "अरे ! इस मृत्यु के बारे में तुम्हें कुछ पता है ?"

मात्तन ने नीचे देखते हुए सिर हिलाया।

"अरे ! मेरी ओर देखकर बोलो।" इंस्पेक्टर ने मात्तन के सिर पर हाथ लगाया। मात्तन ने आंखें ऊपर उठाईं।

"यह कुर्ता तुझे किसने दिया ?" इंस्पेक्टर ने झटके से मात्तन के कुर्ते के भीतर हाथ डालकर पूछा।

मात्तन के जवाब देने के पहले ही इंस्पेक्टर ने कोट की जेब से वह पोटली बाहर निकाल ली। मात्तन मुंह खोलकर खड़ा रहा। चेरियान का मुंह पीला पड़ गया।

"यह पोटली तुझे कहां से मिली ?" इंस्पेक्टर ने आहिस्ते से पूछा। मात्तन कुछ नहीं बोला।

"अरे ! चेट्टन, क्या तुमने मेरी बात नहीं सुनी ? यह पोटली तुझे कहां से मिली ?"

मात्तन कुछ नहीं बोला।

"इसके अंदर क्या है ? बोल।" इंस्पेक्टर ने पोटली की ओर इशारा करके पूछा।

कोई जवाब नहीं।

इंस्पेक्टर ने उन लोगों के सामने वह पोटली खोली।

उसमें सौ-सौ रुपए के कई नोट देखकर वे सब लोग चकित हो गए। जोण उन नोटों को दोनों ओर उलट-पलटकर देखने लगा।

"इतने ज्यादा नए नोट तेरे हाथ में कहां से लगे हैं ?" इंस्पेक्टर मात्तन को घूरने लगा।

मात्तन ने जवाब ही नहीं दिया।

"वह उसका कोट नहीं है। नारायणन नंबियार ने दिया है। कल यह मात्तन चेट्टन बिना कोई कपड़ा पहने, न न रूप में इधर पहुंचा था। मात्तन के बारे में चेरियान ने बताया।

"तुझसे नहीं पूछा। तू वहां चुपचाप बैठ।" इंस्पेक्टर ने चेरियान को रोका।

"अरे चेट्टन, जरा बता तो, इतने रुपए तुम्हारे हाथ में कैसे आ गए ? इंस्पेक्टर ने बहुत शांत भाव में मात्तन से पूछा।

मात्तन ने कुछ भी उत्तर नहीं दिया।

'छप' पटाखे की आवाज आई। मात्तन के चेहरे पर तमाचा पड़ा। मात्तन को भी बाद में ही मालूम हुआ कि उसके गालों पर तमाचा लगा है। वह दोनों हाथ चेहरे पर रखकर कुत्ते की तरह भों-भों कर रोने लगा।

"जल्दी बोल।" इंस्पेक्टर का रूप बदल गया। वह एक बार और पिटाई करने के लिए हाथ उठाकर खड़ा हो गया।

"मालिक, मुझे मत मारिए" मात्तन ने हाथ जोड़कर कहा।

"तो सच बोल।"

"मुझे यह इसने दिया था।" मात्तन ने चेरियान की ओर इशारा किया।

"झूठ ! एकदम झूठ ! बिल्कुल मुझे इसका कोई पता नहीं।" चेरियान ने उस शैतान की तरफ मुंह टेढ़ा करके उत्तर दिया।

"यू शटअप्प" इंस्पेक्टर ने चेरियान के कंधे पर घूंसा मारते हुए कहा।

"कब दिया था ?" इंस्पेक्टर ने मात्तन की ओर देखकर पूछा।

"कल रात को, जहां मछली पकड़ रहा था, वहीं दिया था।"

"क्या कहकर दिया था ?"

"कहा था, हाथ में रखो।"

"क्या तुमने इसको खोलकर देखा कि इसके भीतर क्या है ?"

"नहीं, मैं भूल गया।"

नोट जिस कागज में बंधे हुए थे, उसको इंस्पेक्टर ने वहां बैठे हुए सब लोगों को दिखा दिया था। नोटों को एक अखबार के टुकड़े में लपेटा गया था, अखबार के एक कोने पर चेरियान का पता लिखा था। कागज पर एक लेबल चिपका हुआ था जिसमें चेरियान का पता चिपका हुआ था।

इंस्पेक्टर ने कांस्टेबलों से कहकर चेरियान और मात्तन को हथकड़ी डलवाई।

वर्गीस की लाश को पोस्टमार्टम के लिए शहर भेजा गया। इंस्पेक्टर और कांस्टेबल लोग उस दिन नारायणन नंबियार के साथ खलिहान में ही ठहरे। चेरियान और मात्तन को भी कैदी के रूप में वहीं ठहराया गया। जोण भी वहीं ठहरा। दूसरे दिन बड़े सवेरे वे लोग चेरियान और मात्तन को लेकर उसके डेरे पर गए। नारायणन नंबियार और अडियोडी भी साथ थे। रास्ते में से वे लोग उस प्रदेश के पटवारी को भी ले गए।

जब चेरियान के घर की तलाशी ली गई। तब जैसा इंस्पेक्टर ने संदेह किया था वैसी ही सारी चीजें पकड़ी गई। एक गुप्त कमरे में जाली नोट बनाने की मशीन, छापने की मशीन, स्याही आदि सारी चीजें पड़ी थीं। एक तरफ छपे हुए नोट सुखाने के लिए रखे हुए थे, जो उन्हें मिल गए।

इंस्पेक्टर ने तलाशी के बाद सब चीजों को बांधकर मुहर लगाई और रिपोर्ट तैयार की। उसके बाद साक्षी लोगों के स्टेटमेंट पर हस्ताक्षर करा लिए गए। फिर नारायणन नंबियार और अडियोडी को धन्यवाद कहा और उनसे विदा लेकर हथकड़ी लगे कैदियों को साथ लेकर पुलिस-स्टेशन की ओर चल पड़े।

स्टेशन पर पहुंचते ही इंस्पेक्टर ने चेरियान को अपने कमरे में बुलाया।

चेरियान की ओर देखकर फौरन इंस्पेक्टर ने पूछा, "वर्गीस को गोली मार कर कत्ल करने का तुम्हारा क्या उद्देश्य था ?"

चेरियान कांप गया। वह आंख फाड़कर चारों ओर देखने लगा।

"तुमने क्यों वर्गीस का कत्ल किया ?" इंस्पेक्टर ने बड़े गुस्से में पूछा।

"मैंने नहीं मारा।" चेरियान ने थके हुए स्वर में कहा।

"नहीं, बहाना मत बनाओ, मिस्टर चेरियान ! अभी सब सही-सही बताना तुम्हारे लिए अच्छा रहेगा। अभी मैं एक दोस्त के रूप में पूछा रहा हूं। सब साफ बोल देने से अच्छा ही होगा। वर्ना लॉक-अप में भेंट करने के लिए हठ करोगे, ऐसे, मैं उसके लिए भी तैयार हूं।"

इंस्पेक्टर ने एक सिगरेट जलाई। जलती हुई माचिस की तीली को देखते हुए, मुस्कुराते हुए इंस्पेक्टर अपने आप बोला।

इंस्पेक्टर की मुस्कुराहट और जोर-जबरदस्ती ने चेरियान के कलेजे को जला दिया।

काले गड्ढे में पड़ी उसकी आंखें चंचलता से इधर-उधर घूमती रहीं। उसको लगा कि वह एकदम विषैले धुएं में पड़ा हुआ है।

"क्या कहते हो ?" इंस्पेक्टर का सवाल था। उनका एक-एक शब्द मूसल के समान उसके कलेजे पर जोर से लग रहा था।

"आपके पास क्या सबूत है कि मैंने ही वर्गीस का कत्ल किया है ?" हिम्मत करके आखिर चेरियान ने इंस्पेक्टर से पूछ ही लिया।

"मिस्टर ! सबूतों के बारे में मैं देख लूंगा।" इंस्पेक्टर मुंह टेढ़ा करके बोला, "तुमने वर्गीस का कत्ल क्यों किया ? क्या उद्देश्य था।"

चेरियान थोड़ी देर निश्शब्द होकर नीचे देखकर खड़ा रहा। फिर धीमे से सिर ऊपर उठाकर कहा, "मेरी गोली गलती से वर्गीस के सीने पर लग गई, वह मर गया। मेरा वर्गीस को कत्ल करने का कोई इरादा नहीं था।"

इंस्पेक्टर ने किसी विकार के बिना चेरियान की आंखों के भीतर देखा।

"क्या तुमने यह नहीं कहा था कि तुमने कल गोली चलाई ही नहीं ? तुम्हारी बंदूक भरी हुई थी और वर्गीस की बंदूक से एक गोली निकली हुई थी। वह कैसे हुआ ?"

"शिकार के पहले ही हम दोनों ने बंदूकों को आपस में बदल लिया था। वर्गीस ने कहा था कि मेरी बंदूक उसे अच्छी लगती है। इसलिए मैंने ऐसा किया था।"

"फिर वर्गीस को गोली लगने के बाद बंदूकों को बदल दिया था न ?"

"हां"

"मिस्टर चेरियान ! तुमने अब जो कहा, शायद वह सच होगा। लेकिन उससे भी तुम्हें बचने की उम्मीद नहीं है। पूरी तरह सच बोलो। तुम्हें एक चीज ध्यान में रखनी चाहए कि आधा सत्य, झूठ से भी ज्यादा आफत को बुला लेता

है।"

"मुझे और कुछ नहीं बोलना है।"

"तुम्हारी आंखें बोलती हैं कि तुम्हारे पास और बहुत कुछ कहने के लिए है।" इंस्पेक्टर चेरियान की आंखों के भीतर देखते हुए खड़ा रहा।

चेरियान ने अपने होठों को काटते हुए चंचल होकर दूर देखा।

"मेरे सवाल का तुमने अभी तक जवाब नहीं दिया। मैं तुमको उसके बारे में सोचने के लिए पांच घंटे का समय दे रहा हूं। छह बजे मैं यहां लौट आऊंगा। उस समय तक सब सोच विचारकर तैयार होकर खड़े रहना।"

इंस्पेक्टर ने कुर्सी से उठकर 513 को बुलाया।

"इस आदमी को भोजन देकर, लॉक-अप में बांधो। कोई भी इसके पास नहीं जाए। मैं छह बजे लौट आऊंगा। उस समय मेरे सामने हाजिर करना।"

कांस्टेबल चेरियान को लॉक-अप करने के लिए ले गया। इंस्पेक्टर भोजन करके आराम करने के लिए अपने घर को चला गया।

शाम को छह बजे इंस्पेक्टर कमरे में आ गया। कांस्टेबल ने चेरियान को हाजिर किया।

"क्या सोचा है तुमने ?" इंस्पेक्टर ने शांत भाव से पूछा।

"दरअसल वर्गीस को मैंने ही गोली से मारा है।"

"कारण ? कारण ?" इंस्पेक्टर ने धीमे से पूछा।

चेरियान सब खोलकर बोला। चेरियान ने कहा कि वह जाली नोट बनाया करता था और किसी प्रकार उसके बारे में वर्गीस को पता चल गया, तो उसको छिपाने के लिए बीच-बीच में वह वर्गीस को बहुत रुपए दिया करता था। आखिर एक बार ट्रावनकोर जाने के लिए बहुत सारा रुपया वर्गीस ने मांगा था। उसने जाली नोट वर्गीस को दिए तो वर्गीस ने स्वीकार नहीं किए। वह असली नोट के लिए हठ कर रहा था। असली नोट दो दिन बाद देंगे, तब तक जाली नोट हाथ में रखने के लिए वर्गीस सहमत हो गया। असली नोट देने के बाद जब तक वर्गीस जिंदा रहेगा, तब तक उसको चैन नहीं मिलेगा, इस कारण से ही जंगल में जब अनुकूल समय मिला, तो वर्गीस का उसने कत्ल किया।

"मात्तन के हाथ से जो नोट मिला वह... ?" इंस्पेक्टर ने पूछा।

"वर्गीस के कोट की जेब में जो नोट पड़ा था, वही है। उसकी लाश की तलाशी लेते समय पुलिस जाली नोट देखेगी तो आफत हो जाएगी, इसलिए उसे उठाकर मात्तन के हाथ में दे दिया था।"

"मिस्टर चेरियान ! मेरे काम को तुमने हल्का बना दिया, उसके लिए धन्यवाद।" इंस्पेक्टर ने चेरियान के कंधे को थपथपाते हुए कहा। "सच बोलने के लिए मैं तुम्हारा अभिनंदन करता हूं। मुझे तुम्हारे साथ सहानुभूति है। आगे

तुम्हारा जीवन कानून की हथेली पर निर्भर है। इसी हिम्मत के साथ अदालत का सामना करो। ईश्वर तुम्हारी रक्षा करें।"

इंस्पेक्टर ने चेरियान के सबूतों से रिकार्ड बनाया।

चेरियान को लॉक-अप में ले गया। चेरियान के हृदय से एक बड़ा बोझ उतर गया। तो भी उसने देखा कि उसका भविष्य पूर्ण रूप से अंधेरे से भरा पड़ा है।

चौवालीस

उस दिन पालकोट के बड़े बुजुर्ग की अट्टालिका के विशाल आंगन में फरियाद करने आए हुए लोगों की संख्या बहुत ज्यादा थी। उन फरियादवालों में ज्यादातर ईसाई लोग थे। वे लोग अपने खेतों को किसी कीमत पर भी बेचकर वापस तिरुवितांकूर जाना चाहते थे, क्योंकि उनके परिवार के कई लोग वहां पर मलेरिया बीमारी में मर गए और खेतों को जंगली सूअरों ने नाश कर दिया था। उनके पास आगे खेती बाड़ी करने के खर्चे के लिए रुपए भी नहीं थे।

बड़े बुजुर्ग पान खाते हुए अपनी बेंत की पुरानी आराम कुर्सी पर लेटे हुए थे। बीच-बीच में पीक थूकने के लिए पीकदान भी पास रखा हुआ था। पास ही उनका प्रधान मुख्तार खड़ा था। मुख्तार का नाम था रामकिटाव। रामकिटाव फरियादवालों से बातें कर रहा था।

पतला-सा, लंबा, एकदम काले रंग का एक ईसाई बिल्कुल सफेद और बड़े-बड़े दांत बाहर दिखाते हुए हंस रहा था। वह बड़े बुजुर्ग के सामने हाथ जोड़कर खड़ा हो गया।

"तू कौन है ?" रामकिटाव ने पूछा।

"शैतान पमाड़ी की झोंपड़ी में रहने वाला औसेप हूं मैं।" औसेप मुंह के सारे दांतों को दिखाते हुए एक बार फिर हंसा।

"तुझे क्या चहिए ?"

"मुझे इस प्रदेश से फौरन निकल जाना है।"

"तुझे कौन रोकता है ? वापस अपने गांव जाने के लिए यहां की इजाजत की जरूरत नहीं।" रामकिटाव ने थोड़ा गुस्से के स्वर में कहा।

"मालिक से आखिरी विदा लेने के लिए ही मैं आया हूं।" औसेप ने एक बार और बड़े बुजुर्ग को प्रणाम किया।

"हां, हां, तो तू जाने के लिए तैयार होकर आया है। अच्छी बात है। पर

एक बात है—तूने खेत, बगानों का क्या किया ?" बुजुर्ग ने पूछा।

"थोड़ा-सा मैंने अपने पास रखा है।" औसेप ने बगल से कागज की एक पोटली बाहर निकाली और उसे खोलकर बड़े बुजुर्ग को दिखाई।

एक सेर लाल मिट्टी।

"एक किलो मिट्टी होगी।" औसेप ने उसके वजन का अंदाजा लगाते हुए कहा, "इस कमाई को साथ लेकर मैं तिरुवितांकूर वापस जा रहा हूं। इस मिट्टी ने मेरे चार बच्चों, मेरी प्यारी बीवी, मेरे साढ़े तीन हजार रुपए और मेरे जीवन के तीन महत्वपूर्णा वर्षों को बरबाद कर दिया। इस मिट्टी की पोटली मैं अपने राज्य के प्रधान डाक्टर सर सी. पी. रामस्वामी अय्यर को भेंट में दूंगा।"[1] औसेप ने उस पोटली को अपनी बगल में रखा और जोर से हंस पड़ा।

उस आदमी का बर्ताव उस बूढ़े बुजुर्ग और मुख्तार किटाव की समझ में बिल्कुल नहीं आया। किटाव ने कहा, "अरे चेट्टन ! ऐसा मालूम पड़ता है कि तुम्हारा दिमाग सही नहीं है।"

औसेप ने जैसे उसकी बात सुनी ही नहीं। औसेप ने अपने भाषण को जारी रखा, "हम लोग तिरुवितांकूर से दो चीजों के डर से बचने के लिए यहां आए थे: एक गरीबी, दूसरी वहां के प्रधान। लेकिन हम लोगों को बरबाद करने के लिए यहां पर पहले ही तीन चीजें तैयार थीं: एक घास, दूसरा जंगली सूअर और तीसरा मलेरिया। हम लोग उस पंडित के डर से भागकर इधर आए। लेकिन यहां घास, सूअर और मलेरिया ने हमें बरबाद कर दिया। मैं अब ऐसे ही वापस जा रहा हूं। अपने खेतों को मैं अब किसी को बेचना भी अच्छा नहीं समझता। वहां जो खेती बची हुई थी। सबको मैंने अपने हाथों से ही काट-काटकर बरबाद कर डाला और वहां सब जहरीले पेड़ों के बीज बो दिए। मेरी इच्छा है कि वहां जहरीले पेड़ों का एक जंगल बन जाए। उन जहरीले पेड़ों की हवा के झोंके सारी जगह जहर ही जहर फैला दें, क्योंकि इस विष-भूमि के लिए वे विषैले पेड़ ही उचित हैं। इस मिट्टी की पोटली को लेकर मैं सीधे त्रिवेंद्रम जाऊंगा। वहां जाकर मैं प्रधान सी. पी. से कहूंगा कि मिस्टर स्वामी ! पहले हम तिरुवितांकूर के ईसाई लोगों को विश्वास था कि हमारे लिए दुनिया की सबसे ज्यदा जहरीली चीज आप ही हैं। पर अब मैंने आपसे भी ज्यादा जहरीली चीज खोज़ निकाली है। इसलिए यह खतरनाक जहरीली चीज मैं आपको भेंट करता हूं।"

औसेप ने मलबार से विदा ली, "मालिक को मेरा आखिरी प्रणाम ! शायद

---

1. यहां के प्रचलन के अनुसार कई ईसाई लोगों का विश्वास था कि ट्रावनकोर के प्रधान डा. सी. पी. रामस्वामी अय्यर उनके विरुद्ध थे और इस कारण से ही उनको अपने गांव छोड़कर मलबार की पहाड़ियों में रहने के लिए जाना पड़ा।

नौ-दस साल बाद मैं जिंदा रहा गया तो आपसे अवश्य मिलूंगा, क्योंकि मैं इन विषैले पेड़ों के जंगल को देखना चाहता हूं।"

वह अपने सारे दांतों को दिखाकर एक बार और हंसा और मुड़कर लेफ्ट-राइट, लेफ्ट-राइट करके चला गया। उसके बाद औसेप को उस प्रदेश में कभी भी किसी ने नहीं देखा। वह तिरुवितांकूर जाकर मिट्टी की वह पोटली डा. सी. पी. को नहीं दे सका, क्योंकि तब तक डा. सी. पी. तिरुवितांकूर छोड़कर भाग गए थे।

औसेप के जाने के बाद एक लंबा और पतला आदमी पीले रंग के कपड़े पहने हुए बहुत बेचैनी के साथ सीढ़ियां चढ़कर आ रहा था। वह चश्मा पहने था। संदेह और आदर के साथ बड़े बुजुर्ग के सामने आकर वह खड़ा हो गया, "तू कौन है ?" किटाव न पूछा।

"मेरा नाम, पोल है। यहां की पांच सौ एकड़ जमीन मेरे पास है।" पोल ने कहा।

बड़े बुजुर्ग ने उस आदमी को पहचान लिया। दो साल पहले उस बरामदे में आकर बैठे उस इंडियन अंग्रेज को वे भूल नहीं सकते। लेकिन आज उस आदमी का रूप और ढंग बदल गया है। उसके भद्दे चेहरे पर लंबे दाग दिखाई दे रहे थे। यद्यपि उसके पास अब रेशमी कपड़े, रिस्ट वाच, सोने की जंजीर आदि नहीं हैं, बल्कि नाक के ऊपर केवल एक पुराना चश्मा बाकी है।

"खेती बाड़ी अच्छी तरह चल रही है न ?" बुजुर्ग ने पूछा।

"मालिक ! मैं वह कहानी पूरा कह नहीं सकता। मैं बरबाद हो गया हूं। अगर मैं तंदुरुस्त हो गया तो वापस अपने गांव चला जाऊंगा। आपको साढ़े तीन हजार रुपए देकर जो जमीन मैंने आपसे खरीदी थी, उस पर मैंने आठ हजार रुपए और खर्च किए। अब उस पर ज्यादा रुपया खर्चा करने में मैं असमर्थ हूं। इसलिए सब कुछ बरबाद हो गया है। उन खेतों और बागानों को आप वापस ले लीजिए। आप जो मर्जी हो मुझे दे दीजिए।"

"पोल को पांच सौ रुपए देकर प्रणाम-पत्र वापस ले लो।" कुरुप्प ने मुख्तार से कहा।

"कल सवेरे सारे प्रमाण-पत्रों को लेकर यहां आ जाना।" मुख्तार ने पोल से कहा।

पोल कुरुप्प को प्रमाण करके चुपचाप वापस चला गया।

"राम ! दो साल पहले, इस आदमी को छह रुपए एकड़ के हिसाब से जमीन देते समय तुमने क्या कहा था, याद है ?" कुरुप्प ने हंसते हुए अपने मुख्तार की ओर उंगली से इशारा करके पूछा।

तब तक एक दुबला-सा नाटा आदमी वहां आ गया।

कुरुप्प ने उसकी ओर देखा।

एक दुखी दुबला-सा आदमी। उसकी बड़ी-बड़ी आंखें पीले रंग की थीं। वह आदमी बीच-बीच में बुरी तरह खांस रहा था। उसने सीने पर हाथ रखकर खांसते हुए कहा, ''मालिक, मेरी जमीन आप वापस ले लीजिए। जो मर्जी हो मुझे दे दीजिए।"

उसकी बैचेनी और दुख को देखकर बुजुर्ग को दया आई, "कौन है यह ? इसकी जमीन कौन-सी है ?" बुजुर्ग ने मुख्तार से पूछा।

किटाव थोड़ी देर सोचता रहा, "हां, हां ! समझ में आ गया। इसकी जमीन कलियनमला और चक्करा पहाड़ी की सीमा पर है। यह बहुत बहादुर आदमी था। जब यह यहां आया था इसके साथ पच्चीस लोग भी थे। उनका नेता यही था। उस समय यह एक सेठ था। एक अच्छा शिकारी भी था। इसी ने पिछले साल कल्लोरा पहाड़ी पर दो बड़े-बड़े बाघों को शिकार करके मार दिया था। इसका नाम वर्की है। अरे तेरा देश कहां है ?"

"मुण्डक्कयं" वर्की ने सीने पर हाथ फेरकर कहा।

"वर्की को कुल मिलाकर कितना नुकसान हुआ ?" बुजुर्ग ने दुख के साथ पूछा।

"श्रद्धेय मालिक ! मुझे तीन बच्चों, बीवी और छह हजार रुपए का नुकसान हुआ है। अब मेरे पास केवल यह शरीर ही बाकी है।"

"तेरी खेती-बाड़ी में क्या है ?"

"काजू, पपीता आदि सब कुछ था। लेकिन मेरे भाग्य में उसका उपभोग करना नहीं था।"

वर्की कांपने लगा। पीले रंग की उसकी आंखें लाल होने लगी। कांपते हुए, कराहते हुए वह खंभे को पकड़कर आहिस्ते से फर्श पर बैठ गया।

"मेहरबानी करके थोड़ा गरम पानी दीजिए।" वर्की ने कराहते हुए कहा।

"अरे कौन है ? सोंठ वाला गरम पानी लाओ।" बुजुर्ग ने जोर से कहा।

नौकर कण्णन ने एक पीतल का लोटा भरके सोंठ वाला गरम पानी लाकर दिया।

वर्की ने एक बार में ही उसको गटक लिया फिर और पानी के लिए इशारा किया। कण्णन ने पीतल के एक बड़े बर्तन में सोंठ वाला गरम पानी लाकर उसके सामने रख दिया। वर्की ने बड़ी-बड़ी आंखें दिखाते हुए वह गरम पानी पूरा का पूरा पी लिया।

किटाव ने कण्णन को दक्षिण दिशा के मकान के बरामदे में एक चटाई डाल देने के लिए कहा।

"वहां जाकर लेट जाओ।" किटाव ने वर्की को धीरे से उठाया। वर्की उठकर

चटाई पर जाकर लेट गया।

बुजुर्ग भोजन करने के लिए भीतर चले गए। रामकिटाव किसी पुराने प्रमाण-पत्र को पढ़ते हुए आरामकुर्सी पर लेट गया।

वर्की को बुखार चढ़ गया और तड़पने लगा। उसकी हर एक नस कांप रही थी। उसको ऐसा लग रहा था कि उसका कलेजा अपनी जगह से निकलकर सारे शरीर के भीतर घूम रहा है और सारी हड्डियां पिघलकर खून में मिल गईं।

एक घंटे बाद वर्की का बुखार कम हो गया। वह धीरे से उठ बैठा और गरम पानी पीने लगे।

बुजुर्ग भोजन के बाद किसी अदालती काम के विषय पर रामकिटाव से चर्चा करने लगे।

वर्की बहुत धीरे से बुजुर्ग के पास पहुंचा।

"मेरे मालिक ! मुझे बचाइए।" वर्की ने कराहते हुए और खांसते हुए कहा।

"नहीं तो, मैं अभी मर जाऊंगा। मुझे थोड़ी-बहुत दे दीजिए।"

बुजुर्ग ने किटाव के साथ मंत्रणा करके वर्की को सौ रुपए देने का निश्चय किया।

"प्रमाण पत्र सब कहां हैं ?" किटाव ने पूछा।

"मैं लाया हूं।" वर्की ने गंदे कपड़े में बांधे हुए प्रमाण-पत्र बरामदे में रख दिए।

किटाव ने वर्की के हाथ में सौ रुपए का एक नोट रख दिया। फिर कागजों पर उससे हस्ताक्षर करा लिए।

वहां से कलियन पहाड़ी पहुंचने के लिए तीन मील पैदल जाना था। कड़ी धूप थी। वर्की सिर पर तौलिया बांधकर छाया के समान पूर्व की ओर चल पड़ा।

पहाड़ी रास्ते के किनारे कहीं-कहीं कुछ जंगल काट-काटकर बाड़ लगाई हुई थी। नए बासिंदों की कर्मभूमि। उस बाड़े के आस-पास ही कहीं-कहीं टूटी-फूटी बाड़ियां भी दिखती थीं। वह पुरानी थीं। उस जमीन के मालिक मलेरिया और जंगली सूअरों से तंग आकर वहां से भाग गए थे। वहां कहीं-कहीं खाली झोंपड़ियां और कुएं भी दिखाई पड़ते थे।

उन पहाड़ी खेतों में ऐसे लोगों के प्रतिरूप दिखाई पड़ रहे थे जो मलेरिया की बीमारी से मर गए थे या जो वहां की प्रतिकूल परिस्थितियों से बेचैन होकर सब कुछ वहीं छोड़कर वापस चले गए। उन पहाड़ी खेतों को बनाने में उन्होंने रुपया और पसीना पानी की तरह बहाया। साथ ही सुबह से शाम तक प्रकृति के साथ लड़ते रहते थे। उनकी आशाएं थीं कि उनके पसीने की एक-एक बूंद सोने के सिक्के पैदा करेगी। लेकिन उनकी आशाएं निराशाओं में बदल गईं। उनकी किस्मत में परिश्रम का फल भोगना नहीं लिखा था।

वर्की की आंखों में आंसू बहने लगे। वह उन दुखभरे दृश्यों को देखते-देखते अपने बागान में पहुंच गया। वर्की ने अपने खेत के पास खड़े हो चारों ओर देखा।

जंगली सूअरों ने सारी खेती को खोदकर तहस-नहस कर डाला था। काजू और केले के पेड़ फल देने लायक हो गए थे। उसने उन्हें अपने खून-पसीने से सींचा था। उसके मन में दिवास्वप्न आ रहा था कि मानो उसकी झोंपड़ी के सामने उसके बच्चे अब भी खेल रहे हैं। उसको उस स्वप्न में यह भी दिखाई दे रहा था कि उसकी अपनी पत्नी साराम्मा उस समय खेती बाड़ी करने के लिए खेत में गई हुई है।

वर्की अपनी आंखों से बहते आंसू नहीं रोक पा रहा था।

डूबते सूरज की लाल किरणें वहां पड़ रही थीं। मानो उस खेत के केले उसको अपनी ओर बुला रहे हैं। उस शांत वातावरण में उसके कानों में कुछ अजीब आवाजें सुनाई पड़ रही थीं।

वह कहीं जाने के लिए तैयार खड़ा था, लेकिन वह यह नहीं सोच पा रहा था कि कहां, किस जगह जाए ? वह उस प्रेतभूमि को निर्निमेष देखता ही रहा। उस पहाड़ी खेत के सुंदर घेरे में ही उसका जीवन चिपका हुआ था। उसका परिवार वहां की मिट्टी के नीचे दब गया था। वह अब कहां जाए ?

दूसरे दिन सवेरे वहां के एक काजू के पेड़ की टहनी में वर्की का शरीर लटका हुआ दिखाई दिया। वह कत्ल का केस नहीं था, क्योंकि वह सौ रुपए का नोट जो उसको जमीन के मालिक ने दिया था अब भी उसकी कमर में वैसे ही बंधा हुआ था।

पैंतालीस

माधवी ने सवेरे ही सारा घरेलू काम खत्म कर दिया था। वह सामने बरामदे में आकर खड़ी हो गई।

घर में आज वह अकेली है। उसका मामा कृष्णन नंबियार पूरब की पहाड़ियों के खेतों की तरफ गया हुआ था। वहां फसल काटने का समय था। पूरी फसल कटवाने के लिए और भी चार-पांच दिन लगेंगे। उसकी मामी कुंजिकुरुंबा अपनी छोटी बहन की बेटी के घर गई हुई थी जो वहां से लगभग छह मील दूर था। वहां वह दावत में गई हुई थी। माधवी की नौकरानी मंजला को आज छुट्टी मिल गई।

माधवी किसी असाधारण बेचैनी के कारण से ही बरामदे में इधर-उधर टहल रही थी। फिर एक बार उसने पान खाया और सिर के बाल खोलकर बरामदे के खंभे से पीठ लगाकर कंघी करते हुए पूर्व की ओर मुंह करके खड़ी हो गई। पूर्व दिशा में जो पहाड़ी दिखाई दे रही थी, वहां जाना उसके लिए मना था। उस बरसाती रात की घटना के बाद वह अंतोणी की कट्टर दुश्मन बन गई थी। अंतोणी ने जिस पुण्याभिलाषा को संजोकर रखा था, माधवी ने अपने चुंबनों से उसे राख बना दिया। जंगल में लगी वह आग अब तक बुझ नहीं पा रही थी। उस तरह की रंगीन रातों के लिए उसका हृदय तड़प रहा था। पर उस दिन से अंतोणी परकटी चिड़िया के पंखों के समान हो गया। उसने आगाह कर दिया, "भविष्य में तेरी छाया तक मेरी इस पहाड़ी पर नहीं पड़नी चाहिए।"

माधवी ने खंभे पर सिर टेककर अपने बिखरे बालों के अंदर उंगली दौड़ाई। माधवी अंतोणी के उस सशक्त शरीर और उस स्वर्णिम रात की सोच में डूब गई। कामदेव के समान सुंदर उस छोटे वैरागी को प्रेम का दीवाना बनाने का उसका सारा प्रयत्न बेकार हो गया।

उसने निराशा के साथ खून जैसी पीक को आंगन की ओर थूका।

धीरे-धीरे उसने खेतों की ओर देखना शुरू किया।

उस खेत में फसल काट ली गई थी। खेत खाली थे। वहां जितनी गाएं चर रहीं थीं, कड़ी धूप होने के कारण पास वाले बड़े पेड़ की घनी छाया में जाकर आंख बंद करके आराम करने लगीं।

आसमान में उड़ रहा एक गिद्ध नीचे की ओर आया और उसी पेड़ की एक डाली पर बैठ गया।

दोपहर होने के कारण सब जगह शांति थी। छाया बढ़ने लगी।

मस्त जवानी का नशा और मस्ती उसके कलेजे को नोंच रही थी। एक अज्ञात बेचैनी।

उसकी आंखें फौरन खेतों की उत्तर दिशा की ओर पहुंच गई। दोपहर की छाया के समान एक छोटी छाया खेतों में से होकर उसकी ओर आ रही थी।

उसका चेहरा लाल हो गया और मुस्कुराने लगी। वह काला रूप जो एकदम झुका हुआ था, लाठी टेकते हुए बहुत मुश्किल से अहाते की सीढ़ियों से चढ़कर आंगन में पहुंच गया। वह सूखी मछली के समान एक बुढ़िया थी। घुटने तक की एक काले रंग की धोती पहनी हुई थी। सूखे पत्ते के समान उसका मुंह कांपता था। सिर के सूखे बाल बिखरे पड़े थे। गले में काले रंग के धागे पर रुद्राक्ष पहन रखा था। दाहिनी बगल में ताड़पत्तों की एक छोटी-सी टोकरी दबाई हुई थी।

वह है 'करिंपाती कुंबा'। करिंपाती लोगों की बुढ़िया जादूगरनी।

"कुंबा आ गई, मैं बहुत खुश हूं।" माधवी ने बुढ़िया का स्वागत किया।

बुढ़िया ने माधवी की बातें सुनीं ही नहीं, क्योंकि वह कानों से बहरी हो गई थी। वह अपनी छोटी-छोटी आंखों से माधवी को देखते हुए मुस्कुराने लगी।

"आओ। भीतर कमरे में चलकर बैठें।" माधवी ने झुककर बुढ़िया के कानों में जोर से कहा।

दोनों भीतर के कमरे में जाकर बैठ गईं।

कमरे का दरवाजा ठीक तरह से बंद करने के बाद माधवी चारपाई पर बैठ गई। बुढ़िया ने लाठी नीचे रखी और बगल की टोकरी हाथ में लेकर जमीन पर बैठ गई।

"क्या तुम जानती हो कि तुम्हें मैंने किस काम के लिए यहां बुलवाया है ?" माधवी ने पूछा।

"नहीं। यह मैंने अंदाजा लगा लिया था कि छोटी मालकिन को कोई धोखा हुआ है।"

माधवी के तंग ब्लाउज के नीचे नग्न पेट की ओर बुढ़िया ने व्यंग्य से इशारा करते हुए, अपने नीले रंग की जीभ को बाहर दिखाते हुए पूछा, "वहां कुछ फंसा तो नहीं ?"

"नहीं, कुंबा ! सब ठीक है।" माधवी ने अपने पेट के निचले भाग को थपथपाते हुए कहा।

"फिर क्या गड़बड़ हुई है ? दुश्मन है ?

"एक इंसान को खत्म करने के लिए नहीं, बल्कि उसको मनाने के लिए कुंबा की मदद की जरूरत है।"

"इंसान को मनाने के लिए मेरी छोटी मालकिन को दवाई और जादू की क्या जरूरत है ? केवल ये आंखें और चेहरा काफी है। कोई भी राजा मान जाएगा।

"केवल आंख और चेहरे से नहीं उसके अलावा और कई तरीकों से कोशिश करने पर भी आदमी नहीं मानता।" माधवी ने दुख के साथ कहा।

"अरे, साला ! ऐसा भी इंसान है ? कौन है वह साला ?" कुंबा ने जबड़ा हिलाते हुए पूछा।

"दवाई को कामयाब करने के लिए आदमी के नाम की जरूरत तो नहीं ? ऐसी चीजों की जरूरत तो केवल जादू करते समय होती है न ?"

"दवाई और जादू दोनों एक साथ काम करने से काम जल्दी हो जाता है।"

"फिलहाल तो केवल दवाई इस्तेमाल करना है। जादू नहीं करना है।"

"छोटी मालकिन की जैसी मर्जी। गुलाम ने तो केवल जानकारी के लिए

पूछा था। गुलाम को समझाने पर छोटी मालकिन को कभी कोई आफत नहीं होगी।"

"ओ ! कुंबा से कहने में कोई तकलीफ नहीं है। आदमी के बारे में बता दूंगी। वहां, उस पूर्व की पहाड़ी पर रहने वाला एक संन्यासी है।"

"संन्यासी है ? दाढ़ी वाला संन्यासी ?"

"दाढ़ी अभी तक उगी नहीं। ताजा जवानी है।"

"वह वहां तपस्या कर रहा है ?"

"नहीं, उस आदमी के लिए मैं ही तपस्या कर रही हूं। वह एक किसान है।"

"खेती करने वाला संन्यासी ?" कुंबा ने चकित होकर पूछा।

"हां, दक्षिण का एक ईसाई है।"

"अरे, चेट्टन है ?" कुंबा ने डर से जीभ काटते हुए पूछा, "तो करना क्या है ? ये चेट्टन लोग कुछ भी करने को नहीं हिचकते। ये जानवर, मंदिरों और शिवलिंगों को धूल में मिलाने वाले शैतान हैं। मैंने ऐसे दो शैतानों को जादू के जरिए खत्म कर दिया। एक को पागल भी बना दिया। छोटी मालकिन का ऐसे शैतान से मोहब्बत करना अच्छा नहीं है।"

"कुंबे ! वह नौजवान गन्ने के समान तगड़ा और मजेदार है, लेकिन उसने कलेजे पर धर्म का किला मजबूत बनाकर रखा है। उस किले में घुसने का कोई रास्ता नहीं है। वह औरतों को देखते ही आंख बंद करके ईश्वर का नाम रटना शुरू कर देता है। फिर एक बार तो मैंने उसको फंसा ही दिया।"

माधवी ने वह घटना कुंबा को विस्तार से बता दी। वह घटना सुनकर बुढ़िया अपने मसूढ़ों को दिखाते हुए बहुत देर तक हंसती रही।

"किसी दूसरी औरत की गंध तक उस नौजवान के पास नहीं गई है। मैं उसको गुलाम बनाना चाहती हूं। उसको चाहने के लिए मेरा कलेजा जलकर राख हो रहा है। मेरी इच्छा को पूरा कर दो कुंबा।" चमकती हुई आंखों से माधवी ने कहा।

कुंबा थोड़ी देर विचारों में डूब गई। उसने जबड़े को छाती पर लगाया और मुंह खोलकर चुपचाप बैठी रही। फिर आहिस्ते से टोकरी में हाथ डाला और उसमें से छोटी-छोटी बोतलें और जड़ी-बूटियां बाहर निकालने लगी।

एक छोटी बोतल को लेकर ढक्कन निकालकर नाक से सूंघने लगी। उसने कहा, "यह बाघ की जीभ से बनाया हुआ चूर्ण है। इससे ज्यादा जहर पाताल में भी नहीं मिलेगा।"

उस बोतल को बंद करके अलग रख दिया और दूसरी एक बोतल को हाथ में उठा लिया।

"यह तेल सूअर के दांतों से बनाया गया है। इसमें से एक बूंद देने पर आठ महीने का गर्भ भी नष्ट हो जाएगा। छोटी मालकिन को इस समय शायद इसकी जरूरत हो, इसलिए ले आई...। जो छोटी मालकिन को चाहिए था—वह इधर है। वशीकरण चूर्ण।"

कुंबा ने एक छोटी बोतल हाथ में उठाकर कहा, "इसे आधा तोला भोजन में मिलाकर मर्द को खिलाने पर मर्द नेवला और नागिन तक से मैथुन करने के लिए उत्तेजित हो जाता है।"

माधवी ने हाथ फैलाकर वह बोतल ले ली।

"इसकी एक बोतल और दो।" माधवी ने दूसरी बार हाथ आगे बढ़ाया। कुंबा ने सिर हिलाकर मना किया।

"इतना काफी है। काली नागबेल का पराग इसमें मिला दिया है। मात्रा ज्यादा देने पर आदमी पागल हो सकता है।"

"मैं सावधानी से इस्तेमाल करूंगी। मेरे पास एक बोतल और रहने दो।" माधवी हठ करने लगी। कुंबा ने टोकरी में से टटोलकर एक बोतल और माधवी को दे दी। एक और पुड़िया माधवी को देते हुए कुंबा ने कहा, "छोटी मालकिन, इसे भी पास रखिए। यह सुरमा है। यदि इस स्याही जैसे सुरमे को अपनी आंखों में लगाएंगी तो जिस आदमी की इच्छा करेंगी उसे एक बार देख लेने पर वह मेंढ़क के समान आपके पीछे कूद-कूदकर आ जाएगा।"

माधवी ने उस पुड़िया को भी संभालकर रख लिया।

कुंबा बाकी सब पुड़ियों को और बोतलों को अपनी टोकरी में डालकर जाने की तैयारी करने लगी।

माधवी ने उठकर अपना संदूक खोला और उसमें से एक नई धोती और एक रुपया लेकर कुंबा को दिया। कुंबा ने हाथ जोड़कर उन्हें स्वीकार कर लिया।

"छोटी मालकिन ! गुलाम होकर आऊं। करिंपाती कुंबा फिर कभी आपके सुंदर चेहरे को देख सकेगी या नहीं—मालूम नहीं। मैं जिंदा रहूंगी या नहीं, बहुत बुढ़िया हो गई हूं। अगले साल खेती के समय तक कुंबा जिंदा रह जाएगी तो अवश्य आएगी।"

"कुंबा तुम बहुत दुखी हो।" माधवी ने तसल्ली देते हुए कहा, "कुंबा ! चिंता मत करो। अभी पच्चीस साल और जिंदा रहोगी। मेरा काम हो जाएगा, तो तुम्हें तो मैं विशेष पुरस्कार देने के लिए फिर बुलवाऊंगी। तब जरूर आना। सुना ?"

माधवी कुंबा के साथ आंगन तक चली गई।

कुंबा कांपते पैरों से आगे बढ़ते हुए वापस जाने लगी। माधवी देहली पर खड़ी रही।

फौरन उसकी आंखें पूरब की पहाड़ी की ओर गई। अंतोणी पहाड़ी से नीचे उतर रहा था।

अंतोणी कुर्ता पहने हुए था। माधवी को मालूम हुआ कि अंतोणी अब अपने चाचा चेरियान के घर जा रहा है।

अंतोणी के पहाड़ी से उतरकर नीचे के खेतों को पार करते हुए अगली पहाड़ी की तराई में ओझल होने तक वह उसे खड़ी-खड़ी देखती रही।

फिर वह अपने कमरे में आकर दवाइयां लेकर जांच करने लगी।

माधवी को उस दवाई और दवाई बनाने वाली जादूगरनी बुढ़िया पर पूरा विश्वास था। कुंबा को ऐसी कई औषधियां और जड़ी-बूटियों की जानकारी थी। जो दुनिया में और किसी को मालूम नहीं थी। कुंबा के पिताजी भी एक मशहूर जादूगर और वैद्य थे। यह उस करिंपाला परिवार की परंपरागत गुप्त विद्या थी।

माधवी थोड़ी देर में नहाने के लिए तालाब में गई। नहाने के बाद नए कपड़े पहनकर जब वापस आंगन में आई तो उसने चंपक के एक फूल को तोड़कर बालों में पिरो लिया। फिर उसने चारों ओर देखा।

वह खेत से होकर पूरब की ओर तोंडियान पहाड़ी पर चढ़ गई और अंतोणी की झोंपड़ी में पहुंच गई। अंतोणी की बिल्ली रसोईघर के पास बैठी हुई थी। झोंपड़ी में और कोई नहीं था।

माधवी रसोईघर में जाकर बरतनों के ढक्कन उठाकर देखने लगी। एक मिट्टी के बर्तन में चावल पकाकर रखी हुई थी। दूसरे बर्तन में कप्पा की सब्जी थी।

माधवी ने सब्जी के बर्तन में अपने पास रखे हुए बोतल का चूर्ण डाल दिया और उंगली से उसे खूब हिलाकर फैला दिया। बाद में ढक्कन वैसे ही रखकर जल्दी से बाहर आ गई। उसके बाद चारों ओर देखते हुए चुपके से पहाड़ी से उतरकर नीचे आ गई। नीचे तराई की झाड़ियों से जलाने के लिए कुछ लकड़ियां बटोरकर अपने घर को चली गई।

छियालीस

अंतोणी जब जोण के बंगले पर पहुंचा तो वहां पर केवल वर्की था। वर्की ने अंतोणी से कहा कि जोण साहब, वर्गीस, चेरियान और एक नए मेहमान के साथ शिकार खेलने दूर कहीं जंगल में गए हुए हैं।

"चाचा जी आज वापस आएंगे ?" अंतोणी ने थोड़ा निराश होकर पूछा।

"मालूम नहीं। शायद आने की संभावना नहीं है। अरबी पहाड़ों की तरफ गए हैं।"

"मुझे जल्दी है, चाचा जी से मिलना था। चाचा जी बहुत दिनों से हमारे खेत देखने नहीं आए।"

"क्यों ? वहां का क्या समाचार है ? खेती-बाड़ी अच्छी तरह चल रही है न ?"

"मजदूर लोग नहीं मिलते। कप्पा की फसल पक गई है। इसलिए काटने का समय हो गया है।"

"चेरियान कल सवेरे जरूर आ जाएंगे। अंतोणी, आज वापस मत जाइए न !"

"जाना ही पड़ेगा। झोंपड़ी में कोई नहीं है।"

"आप तकलीफ मत कीजिए। मैं वहां चला जाऊंगा। मुझे अकेले शिकार को भी जाना है। सुना है कि उस तोंडियन पहाड़ी के पास सांभर हरिण आया करते हैं। एक को अवश्य पकड़ना है। रात होने पर अंतोणी की झोंपड़ी में ही सो जाऊंगा।"

अंतोणी ने बिना संदेह के वर्की की ओर देखा।

"यदि मैं शिकार को चला जाऊंगा तो इस बंगले में बाद में कोई नहीं रहेगा। तोम्मन नौकर भी शहर गया हुआ है। अंतोणी, आज रात आराम से यहीं सो जाओ। शिकार के बाद मैं अंतोणी की झोंपड़ी में सो जाऊंगा। क्यों ?" अंतोणी मना नहीं कर सका।

"वहां झोंपड़ी में खाने के लिए कोई चीज होगी ?" वर्की ने पूछा

"कप्पा की सब्जी और चावल पकाकर रखा है।"

"बस, काफी है।"

वर्की उठकर कपड़े बदलने लगा। निक्कर, नीले रंग की बनियान, कानवास आदि पहनकर बंदूक, गोली, शिकारी टार्च आदि लेकर निकल पड़ा।

"कल सवेरे जब मैं यहां वापस आ जाऊंगा तभी तुम यहां से निकलना। हरिण का गोश्त पकाकर खाएंगे। उस समय तक चेरियान भी वापस आ जाएगा।"

"क्या मैं चाचा जी की झोंपड़ी में सोऊंगा ?" अंतोणी न पूछा।

"नहीं, वहां अकेले मत सोना। आजकल उस जगह जंगली हाथी बहुत आते हैं। चेरियान कहता है कि आजकल वहां भूत-प्रेत की भी करामातें बहुत ज्यादा हैं। चेरियान भी आजकल वहां बिल्कुल नहीं जाता। वह आजकल यहीं सोया करता है। अंतोणी, मेरे कमरे में ही सो जाना। मेरे लिए जो भोजन बनाकर रखा हुआ है, उसे खा लेना।" यह बात कहते-कहते वर्की आंगन में उतर गया और सीधा दक्षिण दिशा की ओर चल पड़ा।

संध्या होते-होते वर्की अंतोणी की झोंपड़ी में पहुंच गया।

वर्की को पूर्ण विश्वास था कि जिस लड़की को उसने उस दिन देखा था,

उसके और अंतोणी के बीच में प्रेम-संबंध है और वह रात में अंतोणी की झोंपड़ी में आया करती है। अगर वह उस रात को वहां उस झोंपड़ी में आ जाती है, तो उसका काम आसानी से हो जाएगा। उस कामी राक्षस का विचार था कि यदि रात दस बजे तक वह उस झोंपड़ी में आ जाती है तो अति उत्तम होगा और यदि उस समय तक वहां नहीं पहुंचती, तो हिम्मत बांधकर वह सीधे उसके घर जाकर उसके साथ मौज लेगा। वर्की समझता था कि हर एक औरत को सोना और रुपया देकर वश में किया जा सकता है। माधवी को फंसाने के लिए उसने अपने साथ एक तोला सोना रखा हुआ था।

वर्की ने बंदूक और दूसरी चीजों को चारपाई के नीचे छिपाकर रख दिया। दीपक जलाया और झोंपड़ी के भीतर एक बार जांच पड़ताल की। उसके बाद दीपक को लेकर रसोईघर में घुसा। अंतोणी ने उससे जैसा कहा था, उसी प्रकार भोजन तैयार था। उसने अपने-आप कहा कि भोजन के बाद चारपाई पर कंबल ओढ़कर सोने के बहाने लेटे रहेगा। वह चावल और कप्पा की सब्जी खाने लगा।

सैंतालीस

मुलायम रेशम के गद्दे पर लेटने पर अंतोणी को नींद नहीं आई। उसको लकड़ी के तख्ते पर सोने की आदत थी। आधी रात तक वह करवट बदलता रहा। नींद नहीं आई। अंत में उसने उठकर जमीन पर एक दरी बिछाई और उस पर सो गया।

नित्यनियमानुसार अंतोणी पांच बजे उठकर सूरज निकलने तक ईश्वर की प्रार्थना करता रहा।

किसी के आने से पहले बंगला छोड़कर जाना उसको ठीक नहीं लगा। सवेरे दस बज चुके थे। लेकिन वर्की भी वापस नहीं आया। शाम को नौकर तोम्मन आ गया था। लेकिन वर्की के पहुंचने से पहले उसने बंगला छोड़ना उचित नहीं समझा। इसलिए मजबूर होकर अंतोणी ने वह रात वहीं बिताई।

उसके दूसरे दिन सवेरे ही अंतोणी निराशा के साथ अपनी तोंडियन पहाड़ी को निकल पड़ा।

उसके मन में चिंता के साथ भय उत्पन्न हो रहा था कि वर्की चेट्टन उस समय तक वहां क्यों वापस नहीं आया। अंतोणी कभी भी बराबर दो दिन तक अपनी खेती और झोंपड़ी छोड़कर दूसरी जगह नहीं रुका था। अगर वर्की ने हठ नहीं किया होता तो वह उसी शाम को अपनी झोंपड़ी को वापस चला जाता।

उसके हृदय में भयानक विचार तथा एक अंधविश्वास जाग उठा कि कहीं उसकी झोंपड़ी में कोई मुसीबत तो नहीं आ गई। ईश्वर को याद करता हुआ वह वहां से चल पड़ा।

वह कुलियन पहाड़ी के नीचे मोड़ पर पहुंचा ही था कि पास के एक काजू के पेड़ के नीचे छोटी बच्ची रोती हुई खड़ी मिली।

अंतोणी ने उस लड़की के पास जाकर देखा तो आश्चर्य हुआ कि वह मात्तन चेट्टन की बेटी है।

"बेटी, तू यहां खड़ी होकर क्यों रो रही है ?" अंतोणी ने मेरिक्कुट्टी के कंधे पर हाथ रखकर दया के भाव में पूछा।

"अम्मा की तबीयत ठीक नहीं। वह खून में भीगी पड़ी है। बुलाने पर बोलती नहीं।" मेरिक्कुट्टी ने रोते हुए कहा।

"हे भगवान ! क्या हुआ, बेटी ? पिताजी वहां नहीं हैं ?"

"पिताजी पहले ही कहीं चले गए हैं। डाक्टर को बुलाने के लिए घर में और कोई नहीं है। मांजी बुलाने पर जवाब भी नहीं देती।" वह फूट-फूटकर रोने लगी।

"बेटी, रोओ मत। शायद मां थकान के कारण नहीं बोल रही होगी। तू मेरे साथ आ, चल हम जाकर देखें।"

अंतोणी और मेरिक्कुट्टी पहाड़ पर चढ़कर झोंपड़ी की ओर चल पड़े। जोणिक्कुट्टी रोते हुए बरामदे में खड़ा था।

झोंपड़ी के भीतर दृश्य का देखकर अंतोणी बेहोश हो गया। मरियम आंख बंद करके पड़ी थी। उसके कपड़े खून से लथपथ होकर शरीर से चिपके हुए थे। ऐसा लग रहा था कि किसी ने उसके पेट में चाकू मारकर कत्ल कर दिया है।

अंतोणी रहस्य को समझ नहीं सका। उसने मरियम की नाड़ी की भी जांच की। सांस बंद थी।

"मुन्नी, इधर ही खड़ी रहो। मैं जाकर डाक्टर को बुला लाता हूं।" अंतोणी मेरिक्कट्टी को वहां छोड़कर डाक्टर को बुलाने के लिए दौड़ पड़ा।

वहां से तीन मील दूरी पर डाक्टर थामस की दुकान थी। अंतोणी ने जंगल और पहाड़ियों को जल्दी से पार किया और डाक्टर के पास जाकर सारी कहानी सुनाई। डाक्टर फौरन उसके साथ निकल पड़ा।

डाक्टर मरियम की जांच करके सिर झुकाकर कमरे के बाहर निकला।

"यह औरत मरी पड़ी है।" डाक्टर ने साबुन लगाकर हाथ धोते हुए अंतोणी से कहा।

"हां ! मरियम भाभी मर गई ? मैं पुलिस को खबर देता हूं।" अंतोणी

ने सोचा कि किसी ने मरियम के पेट में चाकू मारकर कत्ल कर दिया है।

"यह एक कत्ल है।"

"उस औरत को किसी ने स्पर्श तक नहीं किया। इसकी मृत्यु गर्भपात से हुई हैं। ऐसा लगता है कि गर्भकाल में उसने बहुत ज्यादा कुनैन की गोली खा ली थी और इसके अलावा गुह्य भाग की चोट से सेप्टिक भी हो गया था।"

अंतोणी के लिए वे सब नई खबरें थीं। वह चुपचाप खड़ा सुनता रहा।

डाक्टर और अंतोणी दोनों बाहर को चल पड़े। डाक्टर अपने घर को और अंतोणी सीधे गिरजाघर की तरफ चल पड़ा।

फादर चुल्लिपरंबन ने अंतोणी की सारी बातें ध्यान से सुनने की कोशिश की। फिर फादर ने हाथ उठाकर कहा, "यह वही मात्तन है जो ईसा मसीह की मूर्ति पर पत्थर फेंकता था। यह एक महापापी है।"

"कैसा है, मुझे मालूम नहीं। पर मरियम भाभी एक महान आत्मा थीं और ईश्वर की भक्ति करती थीं।" अंतोणी ने दयाभाव से कहा।

"वह तो मुझे मालूम है, बिल्कुल मालूम है।" फादर ने दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए कहा।

"मरियम का अंतिम संस्कार करने का सारा खर्च यहां से हम कर देंगे।"

अंतोणी ने पुरोहित को धन्यवाद दिया और प्रणाम करके लौट गया।

उसको अपनी झोंपड़ी और वर्की के बारे में जो चिंता थी, वह दुबारा सताने लगी। वह बहुत तेजी से अपनी पहाड़ी की ओर चलने लगा।

रास्ते में पोल के मुख्तार पाप्पच्चन ने उसको रोका।

"अंतोणी, कहां से आ रहे हो ?"

अंतोणी ने दुख के स्वर में मरियम भाभी की मृत्यु के बारे में उसे कह सुनाया।

"तुमने अपने चाचा की बात नहीं सुनी ?" पाप्पच्चन ने पूछा।

"नहीं, मेरे चाचा, जोण साहब के साथ शिकार खेलने गए थे। लेकिन अभी तक वापस नहीं लौटे।"

"तेरा चाचा पुलिस स्टेशन में बंद है। वह जाली नोट बनाता पकड़ा गया। उनके सारे जाली काम पुलिस को मालूम हो गए। आज सवेरे पुलिस चेरियान को भी पुलिस स्टेशन बुलाकर ले गई।"

अंतोणी यह सुनकर सुधबुध खोकर वहीं खड़ा रह गया।

"वे मात्तन को भी पकड़कर ले गए। किसी ने जंगल में गोली मार कर वर्गीस की हत्या कर दी। सुना है कि मात्तन और चेरियान दोनों ने मिलकर वर्गीस को खत्म कर दिया है।"

पाप्पच्चन ने जो कुछ भी सुनाया, अंतोणी ने सब कुछ सुन लिया था।

लेकिन इतनी सारी दुख की बातें सहन करने की शक्ति अंतोणी में नहीं रही।

"मेरे प्यारे पाप्पच्चन चेट्टन ! मैं अब क्या करूं ?" अंतोणी फूट-फूटकर रोने लगा।

"सबसे पहले सीधे पुलिस स्टेशन जाकर अपने चाचा से मिलो।" पाप्पच्चन ने उसको सलाह दी।

अंतोणी पुलिस स्टेशन की ओर दौड़ पड़ा। पुलिस स्टेशन वहां से लगभग छह मील दूर था जिसे उसने दौड़ते-दौड़ते तय किया।

जब वह पुलिस स्टेशन पहुंचा तो उसने एक पुलिस कांस्टेबल से अपने चाचा के बारे में पूछा। उसने अंतोणी को बताया कि चेरियान लॉक-अप में है और इंस्पेक्टर ने आज्ञा दी है कि शाम को छह बजे तक कोई भी उसके पास नहीं जा सकता है।

अंतोणी ने थाने के बरामदे में इंतजार किया।

छह बजे इंस्पेक्टर पहुंच गया। अंतोणी ने एक कांस्टेबल को अपने चाचा चेरियान को इंस्पेक्टर के कमरे में ले जाते हुए देखा। साढ़े छह बजे इंस्पेक्टर बाहर आया।

अंतोणी ने विनयपूर्वक इंस्पेक्टर को प्रणाम करते हुए कहा, "चेरियान मेरा चाचा है। मुझे एक बार उनसे मिलने दीजिए।"

"मुलाकात के लिए केवल पांच मिनिट हैं।"

चेरियान ने बेटे को कुछ खास बात नहीं बताई, कहा, "तुम झोंपड़ी में रहो। अदालत में मेरा फैसला होने तक तुम मुझसे मिलने मत आना। मैं ईश्वर के दंड का इंतजार करता रहूंगा।"

अंतोणी रोते हुए वापस आ गया।

पुलिस स्टेशन के सामने अंतोणी जोण साहब से मिला। जोण मात्तन को जमानत पर छुड़ाने के लिए आया हुआ था।

"तेरे चाचा ने हमें भी बदनाम कर दिया। हमें पता नहीं था कि वे एक जहरीला सांप हैं।" जोण ने गुस्से के साथ अंतोणी को सुनाया।

अंतोणी ने कुछ नहीं कहा, केवल हथेलियों से आंखें बंद करके रोते हुए खड़ा रहा।

अंतोणी एक प्रेत के समान जंगल की पगडंडी से आगे बढ़ा। घना अंधेरा था। वहां से झोंपड़ी सात मील दूर थी। सारा पैदल का रास्ता था।

उसको अपना भविष्य उस अंधेरे जंगल से भी ज्यादा अंधेरा लग रहा था।

रात में दस बजे के करीब वह अपनी झोंपड़ी में पहुंचा। थकान और मानसिक तनाव से परेशान जब वह अपने बिस्तर पर लेटने लगा तो उसको ऐसा महसूस हुआ कि उसके बिस्तर पर कोई लेटा हुआ है।

अंतोणी ने दीपक जलाकर देखा। वर्की उसकी चारपाई पर मरा पड़ा था। उस लाश से बदबू आ रही थी।

अड़तालीस

आधी रात हो गई थी। जोण गहरी नींद में सो रहा था।

दरवाजे पर खटखटाने की आवाज आई। खटखटाहट सुनकर जोण की नींद खुल गई। जोण ने पूछा, "कौन है ?"

घबराहट और थकावट के साथ अस्पष्ट धीमा स्वर आया "मैं हूं, अंतोणी।"

जोण ने दीपक जलाकर दरवाजा खोला। अंतोणी देहली पर गिरने ही वाला था।

"अंतोणी, क्या हुआ ?" जोण ने अंतोणी को संभालते हुए पूछा।

"वर्की साहब मेरी झोंपड़ी में चारपाई पर मरे पड़े हैं..." अंतोणी इसके अलावा और कुछ कह नहीं सका, बेहोश होकर जोण के सीने पर गिर पड़ा।

जोण ने अंतोणी को उठाया और बिस्तर पर लिटा दिया। उसने नौकर तोम्मन को जगाया और उसको अंतोणी की सेवा करने का आदेश दिया कि उन्हें कोई तकलीफ नहीं होनी चाहिए।

जोण भी सुबह होने तक जागता ही रहा। बड़े सवेरे ही वह पुलिस बुलाने के लिए पुलिस स्टेशन की ओर निकल पड़ा।

इंस्पेक्टर को जोण ने सारी बातें बता दीं। फौरन इंस्पेक्टर दो कांस्टेबल साथ लेकर जोण के साथ तोंडियन पहाड़ी की ओर चल पड़े।

वर्की की लाश से बदबू आ रही थी। इंस्पेक्टर ने झोंपड़ी के भीतर और आस-पास बारीकी से तलाशी ली। वर्की की बंदूक और थैलियां चारपाई के नीचे से मिलीं। वर्की की सोने की घड़ी कलाई पर ही बंधी हुई थी। पैंट की जेब में पर्स पड़ा हुआ था। उसने पर्स खोलकर देखा तो उसके अंदर सोने का एक सिक्का, दस-दस रुपए के करीब सौ नोट और कुछ सिक्के भी पड़े हुए थे। पर्स की गुप्त जेब में एक ईसाई लड़की की फोटो भी थी।

"यह हत्या नहीं है।" इंस्पेक्टर ने बताया। एक कांस्टेबल ने खोज निकाला कि रसोईघर के बाहर आंगन के कोने में एक बिल्ली भी मरी पड़ी थी। इंस्पेक्टर ने वहां जाकर देखा। बिल्ली की लाश से भी बदबू आ रही थी। रसोईघर में एक बर्तन में पड़ी सब्जी में काले रंग की काई जैसी जमी हुई दिखाई दे रही थी। इंस्पेक्टर ने उस सब्जी की बारीकी से जांच की।

"यह कप्पा की सब्जी है। शायद इस सब्जी के कारण वर्की और इस बिल्ली की मृत्यु हुई है। इसमें कोई जहरीली चीज गिर गई होगी।" इंस्पेक्टर ने अपना अनुमान बताया।

जोण ने भी इंस्पेक्टर के अनुमान से सहमति प्रकट की।

"तो फिर देरी मत करो। लाश आज ही ले जाकर संस्कार करने का प्रबंध करो।" इंस्पेक्टर ने जोण से कहा।

अंतोणी जोण के बंगले के बिस्तर पर उठकर बैठा और खिड़की से बाहर झांकने लगा।

उसके दिमाग में अब भी धुंधलापन जैसा था। उसके मन में अव्यक्त सपनों के समान बहुत-से छिटपुट विचार आ रहे थे।

बंगले वाली पहाड़ी के नीचे की पगडंडी से कुछ लोग आगे बढ़ रहे थे। आगे-आगे एक काली अर्थी थी। बीच-बीच में शोकाकुल प्रार्थना भी सुनाई पड़ रही थी।

मरियम की अर्थी श्मशान की ओर ले जाई जा रही थी।

उस शाम वहीं बैठकर अंतोणी ने देखा कि वर्की की लाश की काली अर्थी भी उसी रास्ते से जा रही है।

दूसरे दिन सवेरे अंतोणी अपनी झोंपड़ी में वापस लौट आया। वहां अकेला रहने में उसे डर लगा, लेकिन उससे दूर होने का कोई उपाय भी नहीं था।

जिस दिन मरियम को गिरजाघर के अहाते में ले जाकर गाड़ दिया गया, उसी दिन रात को मात्तन ने झोंपड़ी के भीतर सब जगह खोद-खोदकर देखा। मात्तन का पूर्ण विश्वास था कि मरियम ने रुपए और सोना झोंपड़ी के अंदर किसी न किसी जगह गाड़कर रखा है। घुटने-घुटने तक खोदने पर भी मात्तन को मरियम का खजाना नहीं मिला। वह निराश होकर सोने के लिए चला गया।

मात्तन ने दूसरे दिन सवेरे धीरे से आंखें खोलीं। भोजन तैयार करने के लिए तथा उसको जगाने के लिए अब कोई नहीं है। मात्तन मरियम की याद करके रो पड़ा।

उसने मेरिक्कुट्टी को बुलाया। वह अपने छोटे भाई जोणिक्कुट्टी के साथ पास वाली चटाई पर सो रही थी।

जोणिक्कुट्टी जाग गया और रोने-चिल्लाने लगा। मात्तन जोणी को लेकर थपथपाने लगा और मेरिक्कुट्टी को जगाने की कोशिश की।

वह बिल्कुल नहीं जागी। मात्तन घबरा गया। मात्तन ने उसके शरीर को छुआ तो उसका शरीर बहुत गरम था।

मात्तन उसको जगाने की कोशिश करता रहा, लेकिन उसके प्रयत्न बेकार हुए।

रोते हुए जोणिक्कुट्टी को कंधे पर रखते हुए मात्तन कुछ देर तक सोचता रहा। फिर धीरे से उठकर झोंपड़ी से बाहर चल दिया।

अंतोणी उस समय झोंपड़ी के भीतर झाड़ू लगा रहा था। रसोईघर में उसको एक मुरझाया हुआ चंपा का फूल मिला। उसने उस फूल को उठाया और उसके संबंध में जानने की कोशिश की कि यह फूल यहां कैसे और कहा से आया है।

उस प्रदेश में केवल माधवी के घर मे चंपक के फूलों का पौधा था। माधवी जब भी उसकी झोंपड़ी में आया करती थी तब वह बालों में चंपक के फूल पिरोकर आया करती थी। उसने सोचा कि शायद उसकी अनुपस्थिति में माधवी यहां आई होगी। लेकिन क्यों आई होगी ?

अंतोणी सोच में डूब गया। तब उसके हृदय में कई डरावने सत्य दिखने लगे। अंत में उसने अनुमान लगाया कि शायद माधवी ने मुझे मारने के लिए उस सब्जी में जहर मिलाया होगा। भाग-दौड़ में वह भोजन वर्की चेट्टन ने खाया होगा। हे भगवान ! आपने ऐसी औरतों को क्यों पैदा किया ?

उसने बाहर देखा। मात्तन बाहर से बच्चे को कंधे पर उठाकर सीढ़ी चढ़कर आ रहा था। अंतोणी सीधे मात्तन के पास पहुंचा।

"मात्तन चेट्टन ! क्या खबर है ?" अंतोणी ने पूछा।

मात्तन घबराहट के साथ बोला। "मेरिक्कुट्टी को जगाने पर कोई जवाब नहीं मिल रहा है।"

"हे भगवान ! बच्ची को क्या हो गया है ?"

"मालूम नहीं। जगाने पर जागती ही नहीं।"

"क्या आपने उसे डाक्टर को दिखाया है ?"

अंतोणी, डाक्टर को जल्दी बुलाकर ले आ। मैं झोंपड़ी में ही जा रहा हूं।

अंतोणी ने कमीज पहनी और डाक्टर बुलाने के लिए चल पड़ा।

दोपहर तक अंतोणी डाक्टर लेकर झोंपड़ी में लौट आया।

डाक्टर ने मेरिक्कुट्टी को देखा। फिर उसकी नब्ज जांची। उस समय भी मेरिक्कुट्टी बेहोश पड़ी थी।

डाक्टर ने जांच करने के बाद निराशा के साथ कहा, "ऐसा मालूम पड़ता है कि उसे सेरिब्रल मलेरिया है। मेरे काबू से बाहर है। यदि आप फौरन बड़े अस्पताल ले जाएं तो शायद बच भी जाएं।"

शहर का अस्पताल वहां से लगभग पैंतीस मील दूर था।

अंतोणी और मात्तन एक-दूसरे के मुंह की ओर देखने लगे। वे अपने मुंह से एक भी शब्द नहीं निकाल सके।

डाक्टर ने लौटने से पहले एक इंजेक्शन लगाया, लेकिन उसका कोई असर

नहीं हुआ।

मेरिक्कुट्टी को शहर के अस्पताल नहीं पहुंचाया जा सका और वह दूसरे दिन सवेरे वहीं मर गई।

मेरिक्कुट्टी की लाश को गिरजाघर ले जाते समय अंतोणी भी उनके साथ गया।

मेरिक्कुट्टी को भी आनिक्कुट्टी के पास ही गाड़ दिया। उस दृश्य को देखते समय अंतोणी की आंखों से आंसू टपकने लगे।

दूसरे दिन मात्तन जोणिक्कुट्टी को साथ ले जाकर फादर चुल्लिपरंबन से कहने लगा। "इस बच्चे की मां और बहन दोनों मर गईं। मैं अब यहां से जा रहा हूं।"

बच्चे को फादर के सामने लिटाकर मात्तन वापस झोंपड़ी की तरफ चला गया।

उनचास

एक महीना बीत गया।

चेरियान के नाम पर अदालत में जो केस चल रहा था उसका फैसला सुनाया गया। वर्गीस को जानबूझकर गोली मारने और जाली नोट बनाने के केस में उसको बाईस साल का कठोर कारवास हुआ।

केस में मात्तन भी एक साक्षी था।

चेरियान को हथकड़ी पहनाकर बाहर लाया गया। अंतोणी आंसू गिराते हुए अपने चाचा के सामने जाकर खड़ा हो गया।

"अपने गांव को वापस जा।" चेरियान ने उन बाईस काले सालों को याद करते हुए अंतोणी से कहा।

अंतोणी और मात्तन बस में चढ़कर अपनी पहाड़ी पर पहुंचे।

"मैं तिरुवितांकूर के अपने गांव को वापस जा रहा हूं। मात्तन चेट्टन, आपने क्या सोचा है ?" अंतोणी ने मात्तन से पूछा।

"मुझे भी अपने साथ ले चलो।" मात्तन ने दुखी होकर उससे प्रार्थना की।

अंतोणी थोड़ी देर सोचने लगा।

"बच्चे को साथ नहीं ले जाओगे क्या ?"

"नहीं, बच्चों का पालन-पोषण पुरोहित ही करेंगे। उसके लिए वहीं अच्छा रहेगा।"

दोनों अंतोणी की झोंपड़ी में पहुंचे।

वे दोनों भोजन करने के बाद बरामदे में बैठे रहे। तब तक तीन आदमी वहां आ गए थे। उनमें दो ईसाई थे और तीसरा मलबार का ही एक हिंदू था।

अंतोणी ने उठकर उन लोगों का स्वागत किया।

"अंतोणी के दुख के बारे में हमने भी सुना है। चेरियान को बाईस साल की सजा मिली है; यह जानकर हम भी दुखी हैं। अपनी सहानुभूति प्रकट करने के लिए हम यहां आए हैं।" उस भले आदमी ने कहा।

"आप लोगों ने जो सहानुभूति दिखाई है उसके लिए मैं आपका आभारी हूं।"

अंतोणी ने दुख को दबाते हुए कहा।

"मेरा नाम कुंजिकृष्णन नंबियार है, और ये हैं मिस्टर तरामूट्टिल चाको। हम दोनों मिलकर वहां खेती-बाड़ी करते हैं। तीसरा है मिस्टर वरीतकुंज। इनका मैसूर में होटल चल रहा है।"

"क्या अंतोणी ने वापस ट्रावनकोर जाने का निश्चय किया है ?"

"उसके अलावा और कोई उपाय नहीं है।"

"ये सब खेत ?"

"वे सब जोण साहब ने ले लिए हैं। वे कहते हैं कि चाचा ने उनसे एक हजार रुपए कर्ज लिए थे। उसके अलावा अदालत में भी उन्होंने कुछ रुपए खर्च किए हैं। मुझे वापस जाने के लिए पच्चीस रुपए दिए हैं।"

"मात्तन चेट्टन का खेत ?" कुंजिकृष्णन नंबियार ने पूछा।

"कुछ नहीं किया। हमें पता नहीं कि क्या करना है ?" आखिर मात्तन को जगाया।

"खेत को तीन सौ रुपए में बेचने का निश्चय किया है।" आखिर कुंजिकृष्णन नंबियार ने उनको सौ रुपए ज्यादा देने का फैसला सुनाया।

उसके बाद वे तीनों आदमी चले गए।

अंतोणी उसी बरामदे में बैठा रहा। शाम हो गई, शाम के बाद अंधेरा फैल गया। उसके बाद यद्यपि चांदनी फैल भी गई थी, लेकिन अंतोणी के हृदय में केवल अंधेरा ही अंधेरा था।

पचास

तीसरे दिन सवेरे ही अंतोणी ने अपना सामान बांधकर रखा था। कुंजिकृष्णन नंबियार ने अंतोणी और मात्तन को ले जाने के लिए एक बैलगाड़ी भेज दी।

अंतोणी तोंडियन पहाड़ी से विदा लेकर गाड़ी में बैठ गया।

वह वहां पर तीन साल भी नहीं बिता सका था। उस दौरान वह कुछ भी कमा नहीं सका। उसकी पुरोहित बनने की इच्छा थी, लेकिन उस रंगीली और नशीली रात की घटना के परिणामस्वरूप वह अपने लक्ष्य पर पहुंचने में असफल रहा।

कुछ समय के बाद गाड़ी मात्तन की पहाड़ी के पास पहुंची। मात्तन का सामान भी गाड़ी में लाद दिया गया और दोनों उसमें बैठ गए।

गाड़ी धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगी।

जैसे-जैसे वह सड़क पर पहुंची, अंतोणी उस वन प्रदेश की ओर निश्चल भाव से देखता रहा। कितना मनमोहक दृश्य था वह ! इस मोहक प्रकृति ने कितने लोगों की जानें ले ली थीं। यह सुंदरता एक धोखा थी। इस सुंदर तथा आकर्षक प्रकृति का आलिंगन पाकर कितने ही लोग इस संसार को छोड़कर चले गए थे।

पास आने वाले को अपने जहर से खत्म करने वाली यह प्रकृति एक विषकन्या के समान है।

अंतोणी ने आखिर उस माधवी को भी याद किया—'विष प्रकृति की बहन होने के नाते तुम भी एक विषकन्या हो।'

अंतोणी ने विश्वास के साथ ईश्वर से प्रार्थना की कि 'हे ईश्वर ! आपने ही मुझे इन दोनों विषकन्याओं से बचाया है।' इसी विश्वास के साथ वह बाइबिल खोलकर पढ़ने लगा।

●●●

मुद्रक : ब्यूटी प्रिंट, 10/8020 मुलतानी ढांडा, पहाड़गंज, नई दिल्ली-55